ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम्

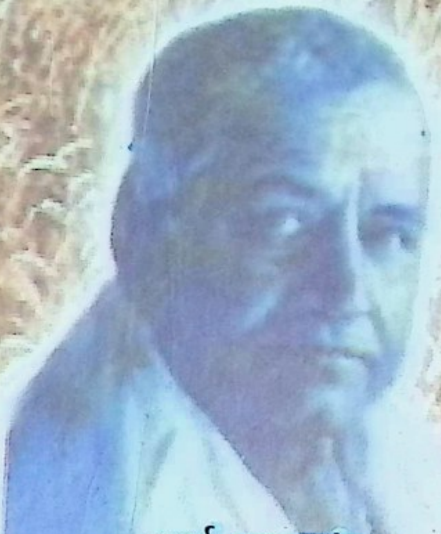

भाई परमानंद

पुण्यतिथि 8 नवम्बर

लाला लाजपत राय

बलिदान दिवस 17 नवम्बर

नवम्बर 2005

कार्तिक-मार्गशीर्ष २०६२

जनज्ञान

हिन्दी मासिक

एक प्रति मूल्य १२/-

जनज्ञान के सहयोगी पाठकों से आह्वान्!

कम से कम एक और परिवार में पहुँचाएं जनज़ान

'जनज़ान' वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद तथा सबल समर्थ राष्ट्र के सृजन का प्रेरक माध्यम है। पत्रिकाएं तो सैकड़ों हैं। उनमें से अधिसंख्य विशुद्ध व्यावसायिक हैं, जबकि जनज़ान एक 'अभियान' का सशक्त स्वर है। विद्यमान सामाजिक, राजनीतिक तथा राष्ट्र से संबद्ध विषयों पर निर्भीक टिप्पणियां जनज़ान की विशेषता है।

- यह अभियान है आर्य मर्यादा के प्रति जागरण का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के तर्कसंगत पृष्ठपोषण का।
- यह अभियान है सामाजिक समता भाव के स्फुरण का।
- यह अभियान है देशद्रोही तत्वों से समाज को बचाने का।
- यह अभियान है अपने विछुड़े बंधुओं को पुनः साथ लाने का।
- यह अभियान है तुष्टीकरण के चक्रव्यूह से राजनीति को छुड़ाने का।
- यह अभियान है कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्‌घोष को गुंजाने का।
- यह अभियान है हिन्दुत्व के विश्वबंधुत्वमय स्वरूप को दर्शाने का।
- यदि यह अभियान आपको प्रिय है तो सहयोग का हाथ बढ़ाइये।
- अपने मित्रों, परिजनों में कम से कम एक और जनज़ान का सदस्य बनाइए।
- यही है परिस्थिति का आह्वान्। घर-घर पहुंचे जनज़ान।
- सामग्री प्रकाशन में आपके सुझाव का होगा स्वागत।
- क्योंकि आप हमारे परिजन हैं, नहीं हैं अभ्यागत।

वार्षिक शुल्क १०० रु. और आजीवन शुल्क ११००रुपये है। अभी आजीवन सदस्य बनने पर ३५० रु का साहित्य उपहार दिया जा रहा है।

--सम्पादक

जनज्ञान मासिक मंगाने के नियम

1. जनज्ञान के पाठक पत्र व्यवहार करते समय अपनी सदस्य संख्या अवश्य लिखें (सदस्य संख्या : जनज्ञान के रैपर पर लिखे पते के साथ अंकित रहती है।)
2. 'जनज्ञान' प्रतिमाह पांच और छः तारीख को पाठकों को भेज दिया जाता है।
3. मास के अन्त तक 'जनज्ञान' न मिले तो शिकायत आने पर दोबारा भी भेज दिया जाता है।
4. 'जनज्ञान' की एक प्रति का मूल्य बारह रुपये है। वार्षिक शुल्क 100 रुपये, आजीवन शुल्क 1100 रुपये है।
5. शुल्क समाप्ति की सूचना प्रत्येक सदस्य को एक मास पहले भेज दी जाती है। **पत्र के साथ मनीआर्डर फार्म और पोस्टकार्ड संलग्न होता है। कृपया पोस्टकार्ड पर उत्तर अवश्य दें।**
6. आगामी वर्ष के लिए शुल्क मनीआर्डर या बैंक **ड्राफ्ट द्वारा अथवा दिल्ली के किसी भी बैंक के चैक द्वारा** भेज सकते हैं। शुल्क प्राप्त न होने पर अगला अंक वार्षिक शुल्क के साथ वी. पी. द्वारा भेजा जाता है।

७. **वी. पी. में पच्चीस रुपये डाकव्यय अतिरिक्त लगता है जिसका लाभ न तो सदस्यों को और न ही संस्था को होता है। अतः कृपया सूचना** मिलते ही धन तुरन्त मनीआर्डर द्वारा भेज देवें अथवा संलग्न कार्ड पर उत्तर अवश्य दें।

-सम्पादक

॥ ओ३म् ॥

जनज्ञान

वेद
ऋक
यजु
साम
अथर्व

कृण्वन्तो
विश्वमार्य्यम्

जनज्ञान प्रकाशन
नई दिल्ली - 5

हिन्दू राष्ट्र स्थापना हेतु संघर्ष करो

कार्यालय
2286 आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग,
नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 25724741, 51004741, 51015457

प्रधान कार्यालय
वेदमन्दिर, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम
(इब्राहीमपुर) पो. मुखमेलपुर
दिल्ली-110036

संस्थापक : स्वर्गीय महात्मा वेदभिक्षुः

सम्पादक : **पंडिता राकेश रानी**
सह-सम्पादक : **दिव्या आर्य**
वार्षिक शुल्क -100 रु0 **आजीवन**-1100 रु0
एक प्रति - 12 रुपये
विदेश में **वार्षिक शुल्क** 350 रु.
आजीवन 11001 रु.
नवम्बर, 2005 वर्ष 40 अंक 7

सम्पादकीय

चुनौतियों का यह अम्बार : इन पर पाना होगा पार

स्वदेश में विद्यमान स्थितियों पर ध्यान जाता है तो यह तथ्य सहजता से दृष्टि पटल पर उभार पाता है कि आज स्वराष्ट्र के समक्ष चुनौतियों का अम्बार है। व्यक्ति के जीवन में आई चुनौतियां उसके धैर्य, कर्म कौशल व क्षमता को काल प्रवाह की कसौटी शिला पर कसती हैं तो राष्ट्रीय चुनौतियां राष्ट्र की अस्मिता और जीवनशक्ति की परीक्षा की घड़ी उपस्थित करती हैं। आज पुण्यभूमि भारत, सहस्त्रों वर्षों की अखण्ड प्राणदायिनी वैदिक चिन्तन धारा से सिंचित यह आर्यावर्त, जातिवाद, निर्धनता, बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार आदि की फुफकारों से अनिष्टकारी काल सर्प इस प्राचीन राष्ट्र को दग्ध और संतप्त करने को आतुर है। इस परिस्थिति के परिप्रेक्ष्य में जब स्वदेश की स्थिति पर दृष्टिपात किया जाता है तो सहसा ही यह तथ्य उभार पाता है कि स्वतंत्रता के ५८ वर्षों का कालखण्ड व्यतीत हो जाने पर भी हमने जहां तक का सफर किया है, उसे सन्तोषजनक मान लेने का साहस नहीं संजोया जा सकता।

विदेशी दास्य शृंखला को काटने के पूर्व राष्ट्र के जन-गण के मन में एक ओज था, जोश था और जुनून था। राष्ट्र के स्वातंत्र्य समर में मनसा-वाचा-कर्मणा समर्पित मातृ-आराधकों ने स्वातन्त्र्य रूप में उभारने का सपना अपने नेत्रों में संजोया था। उसकी पूर्ति के लिए जिस संकल्प शक्ति और संघर्ष की राह पर चलना अभीष्ट था, उस पर चलने से हम अटक ही नहीं अपितु भटक भी गए हैं। उनके स्वप्न को साकार करने की दिशा में सक्रियता, को प्राथमिकता देना अपेक्षित था, परन्तु वैसा कुछ हुआ नहीं, जो नहीं होना था, उसे अनिवार्यता सा मान लिया गया। आधुनिकता के आवरण की आड़ में लगता है राष्ट्र अधिनायकवाद की राह पर बढ़ता चला गया। हम मूल से कटते गए, जो हमें होना चाहिए था, उसकी अपेक्षा हम जो थे, वह भी रह नहीं पाए और जो हमें नहीं होना चाहिए था, वही हम होते जा रहे हैं। मूल से कटना और प्राथमिकता से भटकना आज राष्ट्र के लिए दीपावली पर द्यूतक्रीड़ा की परमपरा मान

मुद्रक, स्वामी, प्रकाशक व सम्पादक : श्रीमती राकेश रानी 2286 आर्य समाज मार्ग, करोल बाग,
नई दिल्ली-110005 से प्रकाशित एवं डीलक्स आफसेट प्रिन्टर्स 308/4 शहजादा बाग दिल्ली से मुद्रित।

बैठने जैसा ही व्यवहार है, जिसका आज हम शिकार होते जा रहे हैं।

हमारे राष्ट्र के स्वातंत्र्य संघर्ष के महानायकों ने भारत राष्ट्र को परम वैभव का मूर्तिमन्त सजीव प्रतिमान बनाने की कामना की थी, जिसकी प्रेरणा उन्होंने इस पुण्यभूमि में प्रादुर्भूत, विकसित और पल्लवित हुई, उस महान संस्कृति से ग्रहण की थी, जिसके समक्ष एक समय पर समग्र विश्व श्रद्धानत था। इतिहास साक्षी है कि स्वराष्ट्र ने यह गरिमामय और महिमामय रूप-स्वरूप सहज ही नहीं पाया था। भारत देश विश्व गुरु के पद पर अपने चिन्तन की गहनता, कर्म कौशल और पराक्रम तथा शौर्य के बल पर प्रतिष्ठित हुआ था। भारत में गुरुत्व का तत्व था। 'गुरुत्व' के बल पर ही अपना यह महान राष्ट्र विश्व के प्रेरणा केन्द्र के रूप में प्रतिष्ठित हुआ था। हमारे यहां तो 'भिक्षाटन' भी दीक्षा थी। मांगकर खाने की शिक्षा भी इस पुण्यभूमि में दी जाती रही थी। अशिक्षा के अन्धकार को तार-तार और क्षार-क्षार करने में हमारी गुरुकुल व्यवस्था समर्थ थी। गुरु से आशीर्वाद प्राप्त किए बिना कोई शुभ कर्म प्रारम्भ भी नहीं किया जाता था। समय आने पर अनादि से आदि और आदि से अनादि शंकराचार्य तक को सामाजिक अग्नि-परीक्षा से गुजरना अनिवार्यता थी। अंगुली उठती ही नहीं थी और यदि उठती थी तो तपकर निकलना होता था अथवा फिर दण्ड भोगने की सिद्धता रखनी पड़ती थी। लगता यह है कि हम स्वदेश की स्वतंत्रता के 'भार' को ही नहीं सह पाए। हम यह सुनिश्चित ही नहीं कर सके कि हमारी आवश्यकताएं क्या हैं, प्राथमिकताएं क्या हैं? यह तो हम सुनिश्चित कर ही नहीं सके कि हमें किस पथ पर चलने की आवश्यकता है? इसके विपरीत हमने विपरीत डगर पर ही अपने कदम बढ़ा दिए-परिणामतः वह डगर हमें कहीं और ही धकेले लिए जा रही है और हम पथहीन और दृष्टि विहीन सी मनोदशा से ग्रसत होकर अंधेरे में लाठियां भांजने जैसी विडम्बना से जूझने में व्यस्त हैं। देव दयानन्द से महान मनीषी भारत की प्रकृति और संस्कृति में विकृति के प्रवेश को रोकने के लिए अपनी नश्वर काया के परित्याग तक सतत सक्रिय रहे थे। परन्तु स्वदेश में स्वातंत्र्य के स्वर्ण विहान के बाद जिन के हाथों में सत्ता का सूत्र आया, वे मैकाले के महामंत्र से अभिभूत थे और उन्होंने 'आधुनिकता' के अन्धानुकरण को ही राष्ट्र के गोरव वर्धन का महामंत्र मान लिया। परिणामतः हम प्राचीन भारत के प्रति गौरव बोध के प्रेरक भाव से हट गए, भटक गए। यह राष्ट्र अपनी नियति के विपरीत सत्ता के सूत्रधारों की नीयत से प्रेरित होने से असमंजसग्रस्त है। यद्यपि नियति के विरुद्ध जाकर हमने भयंकर भूल की है। प्रगति का आकलन ऊपर से नहीं नीचे से किया जाता है। आज जब हम देखते हैं तो ज्यादातर वे लोग ही ऊपर दिखाई देते हैं, जिन्हें वहां नहीं कहीं और होना था। घबराहट सी होने लगती है कि कहीं विकृति युग, संस्कृति का प्रारम्भ तो नहीं हो चुका है। अच्छा हो भी रहा हो तो बुरा ही परोसना स्वभाव बनता जा रहा है। यह तथ्य अब सामान्य जन के समक्ष भी उभर कर आ रहा है कि जो जहां है, जिस क्षेत्र में है, वह वहीं गिरता प्रतीत हो रहा है। गिरते तो लोग पहले भी थे, परन्तु उठाने वाले भी होते ही थे। आज तो स्थिति सर्वथा बदली सी लग रही है, उठा वह है जिसे गिरना चाहिए था और गिर वह रहा है, जिसे उठना चाहिए था। निष्ठा, आस्था, प्रामाणिकता, नैतिकता, संवेदनशीलता, सहजता और सरलता तथा आत्मीयता की सौदेबाजियों सा आलम है। बाजारीकरण के माहौल में मंडी की ही भाषा राष्ट्र के लिए बोली जा रही है और उसे युग धर्म-सा जताया और बताया जा रहा है। लगता है हमारा विश्वास सम्भलने के बजाए और अधिक बिगड़ने पर होता जा रहा है। दायित्व निर्वहन और कर्तव्य.पालन की अपेक्षा और अधिक अधिकार और उसकी प्राप्ति की चिन्ता ही मानस पर सवार है। अधिकार चाहे अधिकृत हो या अनधिकृत उसकी प्राप्ति हेतु पशुता तक जाने को आतुर लगती है आज की पीढ़ी। राम, कृष्ण, चाणक्य, चन्द्रगुप्त का भारत, शिवा, प्रताप, गुरु गोविन्द, दयानन्द और अरविन्द की कर्मभूमि का इतिहास साक्षी है कि राम और कृष्ण के समय में रावण और कंस भी थे, पर राष्ट्रजन पांव तो पुण्यात्माओं के ही पखारते थे। दैत्य प्रवृत्ति वाले तो तिरस्कृत ही होते थे, किन्तु आज तो कर्म और आचरण से, दैत्य देवी की श्रेणी में आ रहे हैं। कल के दस्यु आज निर्वाचित निकायों में सम्मान से स्थान पा रहे हैं। हवालात में जिन्हें होना चाहिए वे जन मन्दिरों में प्रतिष्ठित हो रहे हैं और मर्यादा तथा प्रेरक परम्परा के अनुगामी अपनी सैद्धन्तिक निष्ठाओं के चलते सार्वजनिक चुनावों में जमानत जब्त करा रहे हैं।

स्वदेश का इतिहास साक्षी है कि राष्ट्रीयता और सामाजिता कभी हमारी पूंजी थी। इसी पूंजी के बल पर तो राष्ट्रभक्तों ने स्वातंत्र्य समर में आंग्ल सत्तधीशों के छक्के छुड़ाए थे। किन्तु आज तो समग्र स्थिति ही बदली-बदली सी है। राष्ट्रीयता और सामाजिकता को

इस अक मे पढ़े

(आवश्यक नही कि सम्पादक लेखको की रचनाओ मे अभिव्यक्त सभी विचारो से पूर्णतः सहमत हो।)

सम्पादकीय १
सामयिक-विचार ४
महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी ५
आपके पत्र ६
वैदिक-चिन्तन-सत्य क्या है *-डॉ. कृष्णलाल* ८
कविता-नमन शत नमन *-नरेन्द्र मिश्र* ९
वैदिक दर्शन-महर्षि दयानन्द... *-संग्रहकर्ता प्रो. रत्नसिंह* १०
दोहे *-कृष्णमित्र* ११
वैदिक-विचार-दर्शन-यज्ञ और पर्यावरण *-डॉ. श्रीराम वर्मा* १२
वैदिक-चिन्तन-वेद में गोमांस भक्षण का विधान.. *-डॉ. धर्मवीर* १४
मेरा मौन तुम्हारी टेर *-पं. चमूपति* १७
चिन्तन-प्रवाह-प्रारब्ध प्रधान या पुरुषार्थ *-किशनकुमार लखाणी* १८
वेदार्थ-मन्थन-इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि *-डॉ. ज्ञानचन्द्र* २०
कविता-'मौन' का माहात्म्य *-ब्र. प्रशान्त आर्य* २१
फांसी की कोठरी से-ब्रह्मचर्य के साधन २२
भाई परमानन्द : क्रान्तिधर्मी और... *-गौरीशंकर कौशल* २३
पंजाब केसरी लाला लाजपतराय *-दीनानथ सिद्धान्तलंकार* २७
दिशादर्शन-दुःख का रंग एक *-तरुण विजय* ३०
भारतीयों का बुद्धिबल *-वेदप्रताप वैदिक* ३२
त्रासदी के बाद की राजनीति *-के. सुब्रहमण्यम* ३४
कविता-हमारे घर *-सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत'* ३५
बुद्धिजीवी मांसाहार को गलत मानने लगे हैं *-शिवकुमार गोयल* ३६
ज्वलन्त-मुद्दा-धर्म एवं राष्ट्र रक्षा *-जगमोहनसिंह आर्य* ३७
विचार-प्रवाह-खुशियों का खजाना *-देवराज आर्यमित्र* ३९
कृषि-चर्चा-गाय कृषि और किसान.... *-शुखहालचन्द्र आर्य* ४०
आर्यो! प्रश्न अस्मिता की रक्षा का है *-ब्र अमितशास्त्री व्याकरणाचार्य* ४२
महिला-जगत्-राष्ट्रभक्त पति की... *-भाई मंगल सैन छिब्बर* ४५
कहानी-करिष्ये वचनम् तव-*वचनेश* ४७
स्वास्थ्य-चर्चा-खुद न्यौता न दें मोटापे को ४८
कविता-विनाश की करवट *-विजय गुप्त* ४८
बाल-जगत्-स्वतंत्रता संग्राम के अनजाने वीर दीरण... ५०
स्वामीभक्त सैनिक *-अरुण नागर* ५०
समाचार-दर्शन ५१
कविता-बात करो *-डॉ. श्याम गुप्त* ५६

जातीयता के जहर ने लील लिया है। जातीयता के अंगारों से राष्ट्रीयत और सामाजिकता के झुलसते जाने का नजारा है। यह दृश्य राष्ट्र के लिए अनेक भावी खतरों का भी संकेत दे रहा है। परम्परा का पतन हो रहा है तो मर्यादाओं का मर्दन, सम्वेदनशीलता समाप्त हो रही है, आत्मीयता की अर्थी निकल रही है, प्रामाणिकता के प्राण पखेरू उड़ रहे हैं, पर्वों पर पहरे हैं, देवालयों पर पुलिस चौकियां 'सुशोभित' हो रही हैं, प्रहरी ही चोर बनते जा रहे हैं, भार वाहक और सुरक्षा के सूत्रधार कातिल बनने से नहीं सकुचाते। सज्जनों के सम्मान नहीं अपमान का माहौल है। नेता नामधारी अनेक जन भौतिक सम्पन्नता से लदे फदे हैं, परन्तु नैतिक धन से वंचित हैं। तपस्या के बदले तिकड़म सम्मान पा रही है, किसानों पर कहर और अन्नदाता को जहर, मजदूरों को लाठी, और आतंकवादियों और असामाजिक तत्वों को 'सुपारी' सुलभ है। धर्म को निरपेक्षता और साम्प्रदायिकता का उपहार, ग्राम में चौपाल सूने हैं, घर खाली-खाली से नजर आ रहे हैं, शहरों में दीपावली के दिन भी अनेक पेट खाली रहे, रोजगार का अभाव है, जनसंख्या में वृद्धि की गति अबाध है, सीमाओं पर खतरा है, आंतरिक और बाह्य सुरक्षा के लिए नित्य नई चुनौतियां उभार पा रही हैं, विकास ही नहीं सुरक्षा तक के नाम पर अधिकांशतः कागजी घोषणाओं का ही आलम है, वादों की बौछार है तो क्रियान्वयन में कंजूसी बरकरार है। प्रगति और विकास में आंकड़ों की है जुगाली, इसीलिए देश में निरन्तर वृद्धि पा रही है बदहाली। आखिर ये सब भी तो चुनौतियां ही हैं।

प्रदूषण बढ़ रहा है, हरियाली हरण का क्रम चल रहा है। माटी में मिलावट है, अनाज से भरे बताए जा रहे हैं अन्न भण्डार-फिर भी रात निराहार ही काटते हैं अनेक बेचारे मनमार। लोगों पर भूख की मार है, जल का संकट है तो बिजली गुल होना भी एक चुनौती विकट है। राष्ट्रीयता पर प्रश्नों के हैं पहरे, बड़ों के छोटे होते जाने से राष्ट्र की काया पर घाव लग रहे हैं गहरे। छोटों को बड़ा होने से रोकना, या उनके बढ़ते कदमों में रुकावटों के कांटे बिछाना आज राष्ट्र की नौका के अनेक खेनवहारों की व्यवहार विधा है। वोट बैंक की राजनीति ने देश के नागरिकों को 'जिन्स' सा बना दिया है, जिसका मोल भाव करना आज की राजनीतिक मण्डी का व्यवहार है। वैश्वीकरण की इस बहार में विश्व गुरु रहे भारत की नकेल कुछ सुधिजन गाजर मूली के तुल्य उचित मूल्य लगाने वाले को सौंपने के खेल में एक दूसरे से होड़ लगा रहे हैं। घुसपैठियों और अपराधियों के मामले में कर्तव्यों की उपेक्षा तथा मानव अधिकार के नाम पर ऐसे तत्वों के लिए वरदहस्त बढ़ाने वाले भी उदारीकरण के इस युग में कुकुरमुत्तों के तुल्य उग रहे हैं बढ़ रहे हैं। राजनीति में आज

(शेष पृष्ठ ४४ पर)

दलितों के नाम पर अमरीकी दखल धिक्कार के साथ अस्वीकार करें

इराक में नरसंहार और कटरीना में तूफान में अश्वेतों के प्रति नफरत दिखाने वाले अमरीका में भारतीय दलितों को ईसाई जाल में फंसाने की कोशिश बलवती हुई है। नवम्बर में अमरीकी संसद में एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें भारत में अनुसूचित जातियों व जनजातियों पर 'अत्याचारों' और 'भेदभावों' को उजागर करते हुए यहां कार्यरत अमरीकी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में उनके लिए स्थान आरक्षित किए जाने का आग्रह होगा।

यह प्रस्ताव अमरीकी संसद की अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों हेतु गठित समिति और अमरीकी मानवाधिकार समिति ने मिलकर बनाया है। इस प्रस्ताव की पृष्ठभूमि में वाशिंगटन में एक अनजान से संगठन 'दलित फ्रीडम नेटवर्क' द्वारा आयोजित बैठक की भूमिका है, जिसमें न्यू जर्सी से चुने गए अमरीकी रिपब्लिकन सांसद क्रिस स्मिथ ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। इसके बाद 'अमरीकी संसद की अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों हेतु समिति' ने 'भारत का अधूरा एजेण्ड-जाति व्यवस्था के बीस करोड़ लोगों के लिए समानता और न्याय' विषय पर गवाहियां आमंत्रित कीं तथा चर्चा की। इसमें भारत के एक स्वयंभू एवं संदिग्ध सम्बन्धों वाले कथित दलित नेता उदित राज ने भारत में दलितों की 'बुरी हालत' के बारे में गवाही दी।

भारत में जिहादी, चर्च और मार्क्सवादी ताना-बाना हिन्दू समाज पर एकजुट प्रहार करने में जुटा है। जहां भी उन्हें हिन्दू समाज की कमजोरियां मिलती हैं वहीं वे 'मुक्ति', 'क्रान्ति' या 'भेदभाव और कुरीतियों से लड़ाई' के नाम पर हिन्दू समाज के पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोगों को हिन्दू धर्म से अलग करने की कोशिश में लग जाते हैं। जैसे ईस्ट इण्डिया कम्पनी और ब्रिटिश राज के काल में अनेक भारतीयों ने अंग्रेजों का साथ दिया और राय बहादुर और राय साहब जैसे खिताब बटोरे, वैसे ही आज भी अनेक भारतीय हिन्दू समाज को छिन्न-भिन्न करने की अमरीकी साजिश का मोहरा बने हुए हैं। लगभग दो वर्ष पहले भारत के एक तथाकथित ईसाई नेता ने अमरीकी संसद में गवाही दी थी कि किस प्रकार यहां ईसाईयों पर 'हमले' हो रहे हैं। अब भारत में दलितों के एक स्वयम्भू नेता अमरीकी ईसाई योजना का अंग बने हुए हैं और यूरोप तथा अमरीका में वहां की ईसाई संस्थाओं के खर्चों पर इस प्रकार के कार्यक्रम करते हैं जिनसे ऐसी हवा बने कि भारत में अनुसूचित जाति व जनजातियों को 'जीने का अधिकार नहीं है' और विदेशी सरकारों को इस बारे में भारत में कार्रवाई करनी चाहिए।

भारतीय सामाजिक परिस्थितियों के सन्दर्भ में अमरीका के अशोभनीय दखल को हमें सहन नहीं करना चाहिए। हिन्दू समाज को अमरीकी दखल के विरुद्ध एकजुट होना होगा। हिन्दुओं के अनेक महापुरुष एवं नेता सामाजिक कमजोरियों को दूर करने के लिए सक्रिय रहे हैं। हमें विश्वास है अपनी इन सामाजिक कुरीतियों एवं गलत परम्पराओं को जितनी तीव्रता से गांधी और हेडगेवार के नेतृत्व में खत्म किया गया है जिसके परिणामस्वरूप आज सामाजिक परिदृश्य बहुत बदला है, वह काम और बढ़ेगा, सफल होगा तथा हम एक भेदभाव रहित समरस हिन्दू समाज बनाएंगे। यह होना असंदिग्ध है। यह हम अपनी शक्ति और संगठन के बल पर करेंगे।

अमरीका पहले अपने समाज में अश्वेतों और स्त्रियों के विरुद्ध नफरत खत्म करे। आज भी वहां किसी स्त्री और अश्वेत की तो बात ही छोड़ दीजिए, ईसाई सम्प्रदाय में से ही एक के लोग राष्ट्रपति पद अन्य किसी बड़े निर्णायक पद पर निर्वाचित होने की बात भी नहीं सोच सकते।

गोविन्दा और दाऊद

इंडियां टीवी पर कांग्रेस के सांसद गोविन्दा का भारत द्वारा वांछित खतरनाक अपराधी और देशद्रोही दाऊ इब्राहीम तथा उसके गिरोह के बाकी अपराधियों के साथ हंस-हंसकर गले मिलने का वीडियो जिसने भी देखा वह दुःखी जरूर हुआ होगा पर फिल्म उद्योग पर छाए दुबई माफिया के शिकंजे को जानते हुए आश्चर्य भी नहीं किया होगा। २० अक्टूबर की रात गोविन्दा इंडिया टीवी के प्रमुख रजत शर्मा के साथ बातचीत में घिघिया रहे थे, रो से रहे थे, असन्तुलित और असहज भाव से असंगत वाक्य कह रहे थे। प्रश्न कुछ पूछा जाता था, उत्तर कुछ और दिया जाता था। स्पष्ट था वे बेहद घबराए हुए थे। पर अन्त तक उन्होंने यह नहीं माना कि '९५-९६' या जितने भी साल पहले वे दाऊद की दावत में दुबई गए थे वह गलत था। इंडिया टीवी ने अभिनन्दनीय साहसपूर्वक मुम्बई फिल्म उद्योग पर दुबई माफिया के खतरनाक और साम्प्रदायिक नफरत भरे शिकंजे को सिर्फ छुआ भर है। इस बारे में पहले भी अनेक पत्र पत्रिकाओं में रपटें छपी हैं परन्तु दाऊद का खौफ तथा सामान्यतः वाम प्रभावित सेकुलर मीडिया का डरपोकपन इतना

(शेष पृष्ठ ७ पर)

महात्मा वेदभिक्षुः की अमर वाणी

धर्म की प्रतिष्ठा करो!

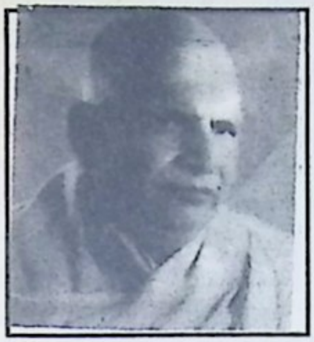

राज्य बदलने का नाम क्रान्ति नहीं है, क्रान्ति कहते हैं विचार परिवर्तन को। जब तक विचार नहीं बदलते, भाग्य भी नहीं बदलता। सुख-शान्ति और उत्कर्ष के लिए विचारों का बदलना आवश्यक है।

वास्तविक संघर्ष व्यक्ति या पार्टी का नाम या झंडे का नहीं है। संघर्ष है स्वार्थ का। सब अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगे हैं, भले ही नाम परोपकार का हो या जग कल्याण का। मार्ग दो हैं, त्याग का या भोग का। भोग का प्रवाह धर्म को विस्मृत कर देता है किन्तु धर्म त्याग को जन्म देता है। स्वार्थ से ऊपर उठकर परहित की बात सोचना ही धर्म है। सबके कल्याण की भावना धर्म की प्रेरणा है।

धर्म नहीं तो मनुष्य पशु है। पशुता से ऊपर उठाने वाली शक्ति न धन है न विद्या वह केवल धर्म है। यह तथ्य जिस दिन सब समझ लेंगे, उस दिन संसार का रेखाचित्र ही बदल जाएगा।

मत और धर्म में आकाश पाताल का अन्तंर है। मत जहर है और धर्म अमृत। मत अनेक हैं, धर्म एकं मत लड़ाता है, धर्म मिलाता है। मत में व्यक्ति का महत्त्व है और धर्म में व्यक्ति, देश, काल, जाति, वर्ग के लिए स्थान नहीं, वह तो शाश्वत है, सबके लिए है। आज संसार भौतिक दृष्टि से उन्नति कर रहा है, पर उसका मानसिक स्तर गिर रहा है। शान्ति और आनन्द से वह दूर बहुत दूर है। युद्ध, घृणा और द्वेष ने अधर्म के कारण उसको उन्नति के समस्त शुभ परिणामों से वंचित कर दिया है।

यह स्थिति मनुष्य के लिए चुनौती है विशेष रूप से उनके लिए जो महाराजा मनु के धर्म लक्षण को मानते हैं। आदि सृष्टि से आज तक धर्म के जिस उज्ज्वल स्वरूप का दर्शन हमने किया उसे पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए आज भी संघर्ष की आवश्यकता है।

देवासुर संग्राम की बात, धर्म और अधर्म के संघर्ष की कहानी है, आज युद्ध के नगाड़े बजाने के लिए हम उत्सुक हैं। रणभेरी की गूंज और क्रान्ति का बिगुल बजाना हमारी चाह है पर यह किसी देश, जाति, वर्ग के विरुद्ध नहीं- **हम अधर्म मिटाना चाहते हैं, मत-वाद समाप्त करना चाहते हैं।**

इसके लिए आज भी और कल भी हमारा सतत् संघर्ष रहेगा। हम रहें या न रहें, धर्म ध्वजा फहराने का हमारा व्रत जीवित होकर सदा धर्म की रक्षा करेगा।

आज सारी धरती परिवर्तन मांग रही है। पर परिवर्तन की दिशा का ज्ञान उसे नहीं है। हम प्राचीन परम्पराओं की थाती लेकर ऋषि मुनियों के निर्देश से दिशा निर्देश गुंजा रहे हैं। सुनोगे, तो ठीक, न सुनो आपकी इच्छा। पर अटल व्रत लिए हम बढ़े जा रहे हैं। नयी सी किरण को, उषा को थिरकते देखकर चले हैं, चलेंगे, बढ़ेंगे, तुम्हें साथ देना पड़ेगा, अगर चाह है धर्म की ज़ीत धरा पर।

हम जिन्दा जल रहे हैं, आप तमाशा देखिए!

पिछले वर्षों का एक-एक पल हमने जल-जल कर जिया है। बिना पैसे के काम करना कितना कठिन है यह वही जान सकता, जिसे इसका अनुभव हो। दिन-रात सब भुलाकर हमने आगे बढ़ने का यत्न किया पर मिली बदले में गालियां, फटकार और अनर्गल प्रचार।

इसके लिए धन्यवाद! हमें दुःख नहीं खेद है। हम तो सब कुछ सह रहे हैं और सहेंगे भी, पर खेद इसलिए है कि गालियां खाकर भी पथ पर अडिग रहने वाले कितने मिलेंगे। और आज भी बोझ और कर्तव्य की अग्नि परीक्षा से गुजरते हुए हम आगे बढ़ने के लिए कृत संकल्प हैं। केवल इसलिए कि हमारी और कोई चाह नहीं सिवाय इसके कि चारों ओर धर्म का राज्य हो।

लगभग १ लाख रुपये से अधिक की देनदारी आज भी संस्थान पर है। जिनका देना है वह कितना तंग करते हैं, यह कोई भी आकर देख सकता है। आर्यसमाज के इतिहास में प्रथम बार १६५०० घरों में वेद का भाष्य पहुंचाने के अपराध का दंड हम हंस-हंसकर भोगेंगे। परमात्मा का आशीर्वाद रहेगा तो संकट भी टल ही जाएगा, किन्तु आपसे जनज्ञान के सदस्यों से हमारा प्रश्न है कि क्या यह सब हमारा निजी काम था? आगे भी जो हमें

(शेष पृष्ठ ७ पर)

आपके-पत्र

पुस्तक मेला और आर्यसमाज

माननीया, रांची में समय-समय पर दस दिनों का पुस्तक मेला लगता रहता है। इस वर्ष (सितम्बर २००५) पहलीबार मेले में दयाराम पोद्दार के पथ प्रदर्शन में आर्यसमाज की दुकान भी लगायी गयी। प्रतिकूल मौसम एवं उपयुक्त स्थल के न होने पर भी जो लोग वहां आये, उन्हें उस दुकान के कारण रांची में आर्यसमाज के होने की जानकारी प्राप्त हुई। यद्यपि यहां आर्यसमाज की स्थापना १११ वर्षों पूर्व हुई थी, पर बहुत से लोगों को यह जानकारी नहीं थी कि रांची में आर्यसमाज कहां है? दूसरे मेले में वेद के नाम पर दैनिक राजस्थान पत्रिका (जयपुर) के स्टाल पर जहां १३ किलो का शब्दवेद (केवल संस्कृत में) ५५०० रुपये (छूटपर ४५०० रु.) में उपलब्ध था तो कतिपय अन्य स्थानों पर केवल हिन्दी में वेद था। उनके लिये आर्यसमाज के स्टाल पर संस्कृत में हिन्दी अनुवाद के साथ कम मूल्य पर वेद देखना बहुत सुखद था। २४०० पृष्ठों की चार जिल्दों में चारों वेद (केवल संस्कृत में) ३५० रु. में भी उपलब्ध था। मेले में ३ सेट मूलवेद के और एक सेट हिन्दी अनुवाद का बिका। कई लोगों ने वेद को प्रथम बार देखा और खरीदने की इच्छा भी व्यक्त की, उन्हें परामर्श दिया गया कि वे पहले ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका नामक किताब पढ़ें, इस पर उस पुस्तक की लगभग २० प्रतियों की बिक्री हुई। ५० प्रतियां सत्यार्थप्रकाश की और अन्य साहित्य भी बिका। कुल नौ हजार की पुस्तकें बिकीं। यद्यपि आर्थिक दृष्टि से मेले में भाग लेना लाभप्रद नहीं था पर प्रचार की दृष्टि से अच्छा लाभ हुआ और लोगों में यह सन्देश गया कि आर्यसमाज में भी काफी वैदिक साहित्य है। यहां लगभग पचास हजार रुपये की पुस्तकों के अलावे पर्याप्त हवनकुण्ड और हवन सामग्री का स्टाक सदैव आर्यसमाज रांची के परिसर में स्थित स्थायी बिक्री केन्द्र में उपलब्ध है। मेले के अनुभव से भविष्य में रांची में पुस्तक मेला लगने पर भाग लेने का निश्चय किया गया है। झारखण्ड में अन्य स्थानों पर भी पुस्तक मेला लगता है, मेला वहां के स्थानीय आर्यसमाजें कुछ सहयोग दें तो उन स्थानों पर भी आर्यसमाज का स्टाल लग सकता है। मेले में आर्यसमाज का ही एकमात्र स्वतंत्र स्टाल था, जहां पर्याप्त वैदिक साहित्य उपलब्ध था।

दयाराम पोद्दार, झारखण्ड राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा रांची

जनज्ञान मार्गदर्शन

आदरणीया पंडिता राकेशरानी आपने अंक नवम्बर २००४ मुझ नाचीज को प्रेषित किया। आभार 'जनज्ञान' में लगभग सभी रचनाएं मनुष्य के जीवन स्तर उठाने में सोने में सुहागा का काम करती हैं। कुछ रचनाएं जिन्होंने अत्यधिक प्रभावित किया, उनमें प्रमुख हैं-पांच हजार रोगों का इलाज है ''गोमूत्र'' व कहानी जिहाद, आपकी पत्रिका से प्रभावित होकर में अपनी कुछ रचनाएं प्रेषित कर रहा हूं।

रमेश नाचीज

महर्षि दयानन्द और गौतम बुद्ध

माननीया, विगत पांच वर्षों से आपकी पत्रिका 'जनज्ञान' का नियमित पाठक रहा हूं। लेख सारगर्भित होते हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। सितम्बर ०५ के अंक में प्रो. जयदेव आर्य लिखित निबन्ध 'बौद्धमत एवं यज्ञ' का अवलोकन किया। विद्वान लेखक ने बुद्ध के यज्ञ विषयक विचार को ईमानदारीपूर्वक उद्धृत किया है। लेखक की सलाह भी मानने योग्य है कि बौद्धों को सरल वैदिक यज्ञ अपना लेना चाहिए था। लेकिन यह कहना कि बुद्ध में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि वे महर्षि दयानन्द की तरह ब्राह्मणों से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित करते।'' लेखक को पूर्वाग्रह से ग्रसित प्रदर्शित करता है। लेखक को ऐतिहासिक दृष्टि से देखना चाहिये कि बुद्ध वेद के भाष्यकार नहीं थे-एक मत प्रवर्तक थे तथा दयानंद वेद के व्याख्याता थे। बुद्ध की चिन्ता मानव को जरा, मृत्यु, बीमारी आदि दुःख थे। पर विजय प्राप्त कर जीने की नई कला सिखाना था, तो दयानन्द की चिन्ता वैदिक संस्कृति को पुनरुज्जीवित कर वैदिक प्राचीन संस्कृति पर चलने को प्रेरित करने की थी। निष्कर्ष यह कि बुद्ध एवं दयानन्द की सोच में बुनियादी फर्क था। अत: किसी को एक दूसरे से तुलना कर सामर्थ्यहीन कह देना कतई उचित नहीं है।

डॉ. उदयप्रकाश, ग्रा. कुसुमब्रहण्डा, पो. घटहो, जि. समस्तीपुर (बिहार)

प्रशंसा और सुझाव

माननीया, आपने कुछ पहले पूर्व राजाओं का इतिहास छापा था उसी तरह जनज्ञान को रोचक और आकर्षक बनाने के लिये महाकाव्य महाभारत को शुरू से शृंखलाबद्ध रूप में प्रतिमाह छापें। इसमें राजनीति कूट नीति इत्यादि सब कुछ है। इससे पाठकों के ज्ञान में वृद्धि होगी और जनज्ञान के ग्राहक भी बढ़ेंगे। उपरोक्त सुझाव पर ध्यान देकर महाभारत छापें।

शंकरदयाल चौधरी, मुकाम पो. सेमरी खुर्द, तह. इटारसी, जि. होशंगाबाद (म. प्र.)

दीपावली पर शुभकामनाएं

पर्व प्रेरणा का पुंज होता है। पर्व जीवन परिवर्तन में उत्सव का कार्य करता है। उत्सव उदारता का पोषक है। उदारता कार्य को सहजता प्रदान करता है। सहजता, सरलता बिना सम्भव नहीं। जो सरल है, वही सत्य है। यह पर्व भी असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है। दीप पर्व के अवसर पर आपको हार्दिक बधाई।

प्रभात झा, १, अशोक रोड, नई दिल्ली-११०००१

(२)

दीपावली के स्वर्णिम प्रकाश से भ्रष्टाचार, छद्म धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक कुरीतियों का घटाटोप दूर हो, उसके स्थान पर प्रेम विश्वास, सद्भावना ईमानदारी हम सबके जीवन में पल्लवित और पुष्पित हो।

दीपावली के पुण्य पर्व पर ''आर्या'' की वाणी बोली।
ऋषि-सिद्धि से भर दो मेरे ''जन-जन'' की पावन झोली।।
दीप करे ज्योतिर्मय जगमग आर्यावर्त हो सारा उज्ज्वल।
''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' से समूचा गूंजे ये धरती तल।।

शकुन्तला आर्य-कृष्णा चड्ढा-शकुन्तला दीक्षित
अध्यक्ष (पूर्व महापौर) कोषाध्यक्ष महामंत्री
दिल्ली प्रान्तीय आर्य महिला सभा

(पृष्ठ ४ का शेष)

अधिक है कि सच को कई बार सिर्फ इसलिए सामने नहीं लाया जाता क्योंकि उससे सेकुलरों की अलमारियों में छिपे कंकाल भी बाहर आने का अंदेशा रहता है। गोविन्दा के मामले में जो भी रहस्योद्घाटन हुआ है, उस कड़ी को आगे बढ़ाया जाना चाहिए। जो फिल्म उद्योग के स्तम्भ कहे जाते हैं उनसे अपेक्षा है कि वे भारत के हित में और फिल्म उद्योग को दुबई माफिया के शिकंजे से मुक्त करने के लिए हिम्मत के साथ सामने आएं। गोविन्दा का मामला अकेला नहीं है और सम्भव है कि गोविन्दा भी बाकी फिल्म कलाकारों की तरह दाऊद माफिया का शिकार बना हो। पर गोविन्दा को भी समझना चाहिए कि उसका सांसद होना या फिल्म कलाकार होना दाऊद की मेहरबानी पर टिका नहीं है। इस मामले की जांच दलगत राजनीति से ऊपर की जानी चाहिए। यह मामला भाजपा, कांग्रेस का नही बल्कि राष्ट्रहित से जुड़ा है। गोविन्दा इस देश की बहुत बड़ी सेवा करेंगे यदि वे अपने बाकी फिल्मी कलाकार साथियों को इकट्ठा कर फिल्म उद्योग में चल रहे दाऊद माफिया के खेल को बेनकाब कर दें। अगर वे ऐसा नहीं करते तो उन्हें केवल सांसद रहने का ही अधिकार नहीं है बल्कि वे भारतीय नागरिक कहलाए जाने योग्य भी नहीं समझे जाने चाहिए।

(पांचजन्य ३० अक्टूबर २००५ से साभार)

(पृष्ठ ५ का शेष)

करना है क्या वह आपका लक्ष्य नहीं? क्या धरती पर 'वेद' संदेश गुंजाना आपकी चाह नहीं?

कौन सी वह संस्था है जिसने इतनी बड़ी संख्या में वेद का प्रचार किया? कौन है वह जिसने बिना पूंजी के केवल प्रभु भरोसे ३०-४० लाख रुपये का साहित्य प्रसारित किया। देश में ''आपातकालीन स्थिति'' के १९ मास में कौन निर्भीक बन सत्य गुंजाता रहा जबकि बड़े-बड़े नेता चापलूसी में बिक गए। इस सबका उत्तर है--''दयानन्द संस्थान''।

संस्थान पर गत १ वर्ष से आर्थिक संकट है, बहुत पुकारा पर आपके कानों पर जूं नहीं रेंगी। कोई बात नहीं। हमें विश्वास है कि अगर हमने कोई पाप नहीं किया तो प्रभु अपने आप हमारा संकट टालेंगे।

हमारी प्रार्थना तो अब केवल अपने मान्य सदस्यों से यह है कि वे भली-भांति हमारे कामों की जांच पड़ताल करें। विचार करें, हमारी नीतियां गलत लगें तो हमारी सदस्यता छोड़ दें। हम अब संख्या नहीं चाहते गुण, विशिष्टता चाहते हैं। ५ हजार हमारे सदस्यों में भले ही ३००० रह जाएं पर जो रहें वे महर्षि दयानन्द व वेद के अनन्य भक्त हों। हम आप सबकी सेवा में यह करबद्ध प्रार्थना करते हैं कि आप अपना कर्तव्य सोचिए। व्यापारिक ढंग से सोचने की कृपा न करें। केवल धर्म प्रचार की दृष्टि से चिन्तन कीजिए।

हम यह सब लिखने के लिए इसलिए विवश हैं क्योंकि पिछले दिनों नए सदस्य बनाने के लिए उपहार योजना में बहुत से सदस्यों ने अपने-अपने अंक बंद कर नए नाम से उपहार लेने की कृपा की। इस प्रकार के व्यवहार से हमें बहुत मानसिक पीड़ा हुई है। अगर ३-४ वर्ष तक जनज्ञान पढ़कर भी आपके मन में हम उत्साह नहीं जगा सके तो हमारा सारा प्रयत्न व्यर्थ है।

हम चाहते हैं कि जनज्ञान के सदस्य एक सेना की भांति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सजग हों। हमारा मन आपका मन एक साथ, एक गीत गाए। हम सब एक परिवार बनें। जनज्ञान एक परिवार का नाम है, शुल्क देकर अंक खरीदने और फिर नयी योजना में अधिकाधिक लाभ उठाने की प्रवृत्ति वाले सदस्य हमारे इस पवित्र परिवार की शोभा नहीं हैं। ऐसा हमारा नम्र निवेदन है।

हम एक सिपाही हैं ऋषि दयानन्द के, हमारा काम काम करना है, कर रहे हैं। बढ़ रहे हैं। आप साथ दें धन्यवाद। न दे सकें तो कम से कम, मार्ग की बाधा तो न बनें, यह हमारी विनम्र प्रार्थना है।

(जनज्ञान मासिक अप्रैल १९७७ से..)

सत्य क्या है?

❑ डॉ. कृष्णलाल

न हि सत्यात् परो धर्मः ना सत्यात् पातकं परम्। (सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है और असत्य या झूठ से बड़ा कोई पाप नहीं।) शतपथ ब्राह्मण में भी सत्य को ही धर्म बताया गया है-यो वै धर्मः सत्यं वै तत्।

सामान्य दृष्टि से सोचें तो सत्य के विषय में विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सभी झूठ और सत्य का भेद जानते हैं। बच्चे को भी हम सत्य की यही परिभाषा बताते है-जैसे सुना, देखा, किया-वैसा ही बता देना सत्य है शिक्षा की समापित पर भी तैत्तिरीय उपनिषद् (शिक्षावल्ली) में शिक्षित छात्र को गुरु ''सत्यं वद'' कहकर सत्य बोलने का उपदेश देता है और निर्देश देता है कि सत्य बोलने में चूक नहीं होनी चाहिए (सत्यान्न प्रमदितव्यम्)। यह तो व्यवहारिक सत्य है जिससे समाज की सारी व्यवस्था चलती है। सत्य अर्थों में सुचारू रूप से सारी सामाजिक व्यवस्थाका आधार सत्य है। अथर्ववेद के भूमिसूक्त (१२.१) में इसी आधार पर पृथ्वी या समाज को धारणकरने वाले तत्वों में सत्य को प्रमुखता दी गई है। यदि समाज में सत्य का पूर्ण लोप हो जाए और सब झूठ के आश्रय पर मनमानी करने लगें तो समाज घोर अव्यवस्था और निराशा के भंवर में फंस जाएगा। परन्तु इस व्यावहारिक सत्य से ऊपर पारमार्थिक सत्य है जिससे विश्व संचालित होता है। भूमि उसी के द्वारा स्तम्भित है (सत्येनोत्तभिता भूमिः - ऋ0 १०.८५.१)।

ऋग्वेद के एक मंत्र (ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसो ऽध्यजायत इत्यादि-ऋ0 १०.१९०.१) में सृष्टि के आरम्भिक तत्वों में ऋत (शाश्वत नियम) के साथ सत्यका उल्लेख हुआ है। तदनुसार सत्य सृष्टि के मूल में यह आवश्यक तत्व है जो उसके कण-कण में और छोटी बड़ी सभी क्रियाओं में रहता हुआ उसे यथार्थता प्रदान करता है। वह वास्तविक है, सत् है, मिथ्या नहीं। उसकी चामत्कारिकता उसके सत्य होने में है, नियम के अन्तर्गत रहने में है-ठीक उसी प्रकार जैसे गणित में दो और दो चार ही होंगे, त्रिकोण के तीन ही कोण होंगे। वह सत्य हमें काल्पनिक मिथ्या मूर्तियों और उन पर आरोपित क्रियाकलापों, विश्वासों से ऊपर उठा कर अविनाशी चरम सत्ता तक पहुंचाता है। यह सत्य पूर्ण वैज्ञानिक है, काल्पनिक नहीं। विज्ञान उसी सत्य की खोज करता रहा है और आज भी कर रहा है।

अथर्ववेद (५.११.३) में स्वयं ईश्वर बताता है कि मैं ही अपने (वेदरूपी और सृष्टिरूपी) काव्य से गंभीर हूं, भौतिक रूप में अज्ञेय हूं, अत्यन्त गहरा हूं जिसकी भौतिक बहिर्मुखी इन्द्रियों से कोई थाह नहीं पा सकता-सत्यमहं गम्भीरः काव्येन। इस सत्य की खोज कभी पूर्ण नहीं होती क्योंकि मनुष्य का ज्ञान और शक्तियां सीमित हैं।

अग्नि, आगे ले जाने वाला परमेश्वर अथवा शुभ ज्ञान से नेतृत्व करने वाला विद्वान् व्रतपति है, नियम का अथवा नियमपूर्वक कर्म का पालन करने वाला है। यजुर्वेद प्रथम अध्याय के पंचम मंत्र में मनुष्य प्रतिज्ञा करता है कि मैं नियम पर सत्यभाषण, सत्यकरण, सत्यमान रूप नियम पर आचरण करूंगा। वह ईश्वरसे नियम पर चल सकने के सामर्थ्य की प्रार्थना करता है और प्रतिज्ञा करता है कि उस पर चलने के लिए मैं अनृत-झूठ को छोड़ कर सत्य के प्रति जाता हूं। मनुष्य बहुत बार झूठ का आश्रय लेता है, परन्तु उदात्त जीवन के लिए वह सत्य पर चलने की प्रतिज्ञा करता है-अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेयं तन्मे राध्यताम् इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।

प्रस्तुत प्रसंग में सत्य को जानना अत्यन्त आवश्यक है। महर्षि दयानन्द ने अपने यजुर्वेद भाष्य में इस सत्य को अच्छी प्रकार समझाया है। उनके अनुसार सत्य केवल जैसा सुना, देखा, पढ़ा हो उसे ज्यों का त्यों बता देना ही नहीं है, सत्य इसमें बहुत बड़ा है। सत्य वह है जो वेदविद्या के द्वारा, प्रत्यक्ष-अनुमान-आप्तवचन आदि प्रमाणों, सृष्टिक्रम से, विद्वानों की संगति से, ठीक ठीक विचार के द्वारा या अपनी (बौद्धिक-मानसिक) शुद्धि के द्वारा भ्रमरहित सर्वहितकारी, तत्व पर आधारित, वास्तविकता पर आधारित और अच्छी प्रकार परीक्षण करके (देख, समझकर) वैज्ञानिक रीति से निश्चित किया जाता है। यास्क (निरुक्त ३.१३) ने बताया है कि सत्य वह है जिसका विस्तार प्रचार सज्जनों में होता है और जो वास्तविकता (यथार्थ) से उत्पन्न हो (सत्सु तायते सत्प्रभवं भवति वा)। (दयानन्दभाष्य- यद्वेदविद्यया प्रत्यक्षादिभिः प्रमाणैः सृष्टिक्रमेण विदुषां संगेन सुविचारेणात्मशुद्धया वा निर्भ्रमं सर्वहितं तत्वनिष्ठं सत्प्रभवं सम्यक् परीक्ष्य निश्चीयते तत्।)

यह सत्य की पूर्ण परिभाषा है। सबसे पहली बात है कि वेद (मन्त्रात्मक शुक्ल यजुर्वेद, ऋग्वेद, सामवेद,

अथर्ववेद) ही सत्य विद्या है क्योंकि यह सर्वप्रथम है और किसी व्यक्तिविशेष की सीमित बुद्धि से रचित नहीं है। इसलिए वेद का वाक्य ही चरम सत्य है।

जो प्रत्यक्ष दिखाई देता है, अनुमान प्रमाण के द्वारा जाना जाता है (जैसे कि जहां दूर से उठता धुआं दिखाई दे वहां आग अवश्य होगी। अथवा विद्वान् अनुभवी व्यक्तियों द्वारा बताया जाए (जैसे गन्दा पानी पीने से रोग होता है अथवा आग में हाथ डालने से हाथ जलेगा। वह सत्य मान्य है।)

इसी प्रकार बहुत से सत्य सृष्टिक्रम से सिद्ध हैं यथा सूर्य पूर्वदिशा से उदय होकर पश्चिम में अस्त होता है, जो तैरना नहीं जानता वह गहरे पानी में डूबेगा ही। विद्वान् व्यक्ति अपने ज्ञान और अनुभव के आधार पर जो बताते हैं, वह सत्य है। (एक बालकथा के अनुसार एक व्यक्ति बड़े चाकू से अपने हाथ के नाखून काट रहा था तभी उधर एक समझदार व्यक्ति निकला। उसने दूसरे व्यक्ति को कहा कि ऐसे तेरी उंगलीकट जाएगी। उस व्यक्ति ने ध्यान नहीं दिया। वह कुछ दूर ही गया होगा कि नाखून काटने वाले की उंगली वास्तव में कट गयी।) रोकने वाले ने ज्ञान और अनुभव के आधार पर सत्य कहा था।

ठीक ठीक सोचकर निष्पक्ष निर्णय किया जाए तो वह सत्य होता है। ऐसे निर्णय के लिए आत्मशुद्धि आवश्यक है। मनु के अनुसार यह आत्मशुद्धि केवल शारीरिक शुद्धि नहीं, अपितु मानसिक और आत्मिक शुद्धि है। तदनुसार जल से केवल शरीर स्वच्छ होता है। मन की शुद्धि के लिए सत्य पर आचरण आवश्यक है। विद्या और तपस्या से अन्तःकरण की शुद्धि होती है और बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है।

अद्भिर्गात्राणि शुद्ध्यन्ति मनः सत्येन शुद्ध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुदध्यति।। मनु0 ५.१०९

सत्य में कहीं भ्रम का अवकाश नहीं। कोई झूठ प्रचारित कर दे कि कोई पत्थर की मूर्ति दूध पीती है तो वह भ्रमरहित नहीं हो सकता क्योंकि वैज्ञानिक नियम के अनुसार यह सम्भव नहीं। एक बार एक युवक ने प्रदर्शन के लिए जटाधारी शिव का रूप धारण करके अपने शरीर पर जीवित सांप छोड़ दिया। सांप ने अपने स्वभावानुसार उसे डस लिया और फलस्वरूप युवक की मृत्यु हो गई। सत्य की विशेषता है कि वह सबका हित करता है। उसके मूल में तत्व का, वास्तविकता का आधार होता हे। वह झूठ और अन्धविश्वास पर आधारित नहीं होता। कोई तांत्रिक कहे कि अमुक सिद्धि के लिए मूर्ति के आगे अमुक (बालक या व्यक्ति) की बलि दो तो वह कभी सत्य नहीं हो सकता क्योंकि तात्विक दृष्टि से यह सम्भव ही नहीं। यह केवल छल-प्रपंच है। अनपढ़ नासमझ लोग ऐसे प्रपंचों में फंस जाते हैं। जब अभीष्ट फल की सिद्धि न होती दिखे तो या तो वे झूठे तांत्रिक कहीं भाग जाते हैं या पुलिस द्वारा पकड़ कर जेल में डाल दिये जाते हैं।

इसीलिए उपनिषद् में प्रार्थना है-असतो मा सद् गमय (हे परमेश्वर मुझे अवास्तविक से वास्तविक की ओर ले जाइये)।

एक मात्र सत्य निराकार परमेश्वर है। यह सर्वत्र विद्यमान है, सब कुछ देखता, सुनता, जानता है। वह सर्वव्यापक तथा अनन्त है।

सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। (तैत्तिरीयोपनिषद् ब्रह्मानन्दवल्ली २.१)

(पूर्व आचार्य, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली)

नमन शत नमन

❑ नरेन्द्र मिश्र

ओ मेरे देश तुझको नमन शत नमन।
तूने माथा दिया मुझको नगराज का,
वीर बलिदान का तेज सरसा दिया।
रूप कश्मीर का, जोश पंजाब का,
भोलापन भोले बंगाल का दे दिया।
गंगा यमुना का दर्पण निहारूं मगन।
उत्तरी भाग का उच्च सीना दिया,
केश मोहक हिमांचल, असम के दिये।
आन मरुभूमि की, धान्य सौराष्ट्र का,
सत्य के बोल गुजरात के दे दिये।
नित्य मैसूर चंदन से महके बदन।
नम्रता सादगी उड़िया, बिहार की,
मध्य बन प्रान्त ने साज वल्कल दिया।
आंध्र मद्रास से पांच गतिशील हैं,
पांव रखने को केर धरातल दिया।
सागरों के अधर कर रहे आचमन।
जातियों, धर्म, भाषा का संगम अमर,
एकता, प्रेम, बल शान्ति रसधार तू।
ज्ञान दिनकर, कला का कलाधर धवल,
स्वर्ग साकार तू, त्याग कृतिकार तू।
तेरे पग पर झुके चांद तारे गगन।।

-२२९, रामनगर कालोनी, ऐशबाग, लखनऊ

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में से संगृहीत कुछ रत्न

❒ संग्रहकर्ता प्रो. रत्नसिंह

आज से १२२ वर्ष पूर्व अजमेर नगर में ३० अक्टूबर १८८३ ई. को सायं ५.३० बजे महर्षि दयानन्द ने 'हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर! तेरी यही इच्छा है, तेरी यही इच्छा है, तेरी इच्छा पूर्ण हो। आहा! तैने अच्छी लीला की'' शब्दों के साथ श्वास को रोककर एकदम बाहर निकाल दिया। उनका आत्मा नश्वर देह को त्याग कर प्रभु की गोद् में जा बिराजा। उनके शरीर छूटने के समय छः बजे थे। उनके देहान्त का समाचार मिलते ही सर्वत्र शोक फैल गया। इस घटना को स्मरण करके हमारा दु:खी होना स्वाभाविक है। परन्तु अन्य मतावलम्बियों की भांति आर्यों में रोने पीटने की रीति नहीं है। इस दिन हमारा कर्तव्य बनता है कि हम महर्षि के सिद्धान्तों एवं उपकारों का स्मरण करें। इसी बात को ध्यान में रखकर हम यहां महर्षि के ग्रन्थों में से चुने हुए कुछ रत्न प्रस्तुत करते हैं।

वेदभाष्य के बारे में महर्षि का विश्वास

यदि परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देख मिला कि वेदभाष्य सम्पूर्ण हो जावे, तो निःसन्देह इस आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जावेगा कि जिसके मेटने और झांकने को किसी का सामर्थ्य न होगा। (भ्रान्ति निवारण)

''जो मैं निरानिरी संसार ही का भय करता और सर्वज्ञ परमात्मा का कुछ भी नहीं कि जिसके आधीन मनुष्य के जीवन मृत्यु और सुख दु:ख हैं तो मैं भी ऐसे ही अनर्थक वाद विवादों में मन देता। परन्तु क्या करूं, मैं तो अपना तन, मन, धन सब सत्य के ही प्रकाशार्थ समर्पण कर चुका। मुझसे खुशामद करके, अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता। किन्तु संसार को लाभ पहुंचाना ही मुझको चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है। (भ्रान्ति निवारण)

''मैं चाहता हूं कि ये लोग मेरे पास आवें वा मुझको अपने पास बुलावें तो ठीक ठीक विद्या और प्रविद्या का निश्चय हो जावे कि कौन पुरुष वेदों को यथार्थ जानता है और कौन नहीं। क्योंकि विद्यादम्भः क्षणस्थायी:। सबका दम्भ कुछ दिन चलता जाता, परन्तु विद्या कादम्भ क्षण मात्र में टूट जाता है।'' (भ्रान्ति निवारण)

सहजानन्द आदि साम्प्रदायिक लोगों के बारे में महर्षि का कथन है ''ऐसे ऐसे धूर्त सम्प्रदायों के फैल जाने से अपने आर्यावर्त देश को बहुत हानि उठानी पड़ी। इसलिये सब सज्जनों को श्रम उठाकर इन सम्प्रदायों को जड़मूल से उखाड़ डालना चहिए। जो कभी उखाड़ डालने में न आवे तो अपने देश का कल्याण कभी होने का ही नहीं।''(शिक्षा-पत्री ध्वान्त निवारणम्)

परमात्मा से महर्षि की प्रार्थना

''सब प्रकार के मनुष्य अति उत्तम हों और सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर की कृपा सब मनुष्यों पर हो। जिससे सब मनुष्य दुष्टता को छोड़के श्रेष्ठता को स्वीकार करें। यह मेरी परमात्मा से प्रार्थना है सो परमेश्वर अवश्य पूरी करेगा।'' (आर्याभिविनयः)

''हे सर्वव्यापक, अनन्त परमेश्वर, विष्णो! आप हमको अनन्त सुख देओ। जो कुछ मांगेंगे, सो आपसे ही हम लोग मांगेंगे। सब सुखों का देनेवाला आपके बिना कोई नहीं है। सर्वथा हम लोगों को आपका ही आश्रय है, अन्य किसी का नहीं। क्योंकि सर्वशक्तिमान् न्यायकारी दयामय सबसे बड़े पिता को छोड़ के नीच (छोटे) का आश्रय हम लोग कभी न करेंगे। आपका तो स्वभाव ही है कि अंगीकृत को कभी नहीं छोड़ते। सो आप सदैव हमको सुख देंगे, यह हम लोगों को दृढ़ निश्चय है। (आर्याभिविनय)

''हे महानन्तविद्य! जो जो मैंने विद्वान् वा अविद्वान् होके पाप किया हो, उन सब पापों को छुड़ाने वाला आपके बिना कोई भी इस संसार में हमारा शरण नहीं है। इससे हमारे अविद्यादि सब पाप छुड़ा के शीघ्र हमको शुद्ध करो। (आर्याभिविनय)

निराकार परमात्मा की ही भक्ति करो

''जो परमात्मा को छोड़ के वा उसके स्थान में दूसरे की पूजा करता है, उसकी और उस देश भर की अत्यन्त दुर्दशा होती है, यह प्रसिद्ध है। इससे चेतो मनुष्यो! जो तुमको सुख की इच्छा हो तो एक निराकार परमात्मा की यथावत् भक्ति करो, अन्यथा तुमको सुख कभी न होगा।'' (आर्याभिविनय)

धर्मयुक्त व्यवहार से सुख और अधर्मयुक्त व्यवहार से दुःख प्राप्त होता है।

''मैंने परीक्षा करके निश्चय किया है कि जो धर्मयुक्त व्यवहार में ठीक ठीक वर्तता है, उसको सर्वत्र सुखलाभ और जो विपरीत वर्तता है वह सदा दु:खी होकर अपनी हानि कर लेता है। देखिये जब कोई सभ्य मनुष्य विद्वानों की सभा में वा किसी के पास जाकर अपनी योग्यता के अनुसार नम्रतापूर्वक नमस्ते आदि करके बैठ के दूसरे की बात ध्यान से सुन, उसका सिद्धान्त जान निरभिमानी होकर युक्त प्रत्युतर करता है

तब सज्जन लोग प्रसन्न होकर उसका सत्कार और अण्डबण्ड बकता है उसका तिरस्कार करते हैं, जब मनुष्य धार्मिक होता है तब उसका विश्वास और मान्य शत्रु भी करते हैं और जब अधर्मी होता है तब उसका विश्वास और मान्य मित्र भी नहीं करते।" (व्यवहारभानु)

मनुष्य किसे कहते हैं?

"इस मनुष्य जाति में एक ऐसा गुण है वैसा किसी दूसरी जाति में नहीं पाया जाता, जितने मनुष्य से भिन्न जातिस्थ प्राणि हैं, उनमें दो प्रकार का स्वभाव है। बलवान् से डरना निर्बल को डराना और पीड़ा देकर अर्थात् दूसरे का प्राण तक निकाल के, अपना मतलब साध लेना, देखने में आता हैं जो मनुष्य ऐसा ही स्वभाव रखता है उसको भी इन्हीं जातियों में गिनना उचित है, परन्तु जो निर्बलों पर दया, उनका उपकार और निर्बलों को पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवानों से किंचितमात्र भी भय, शंका न करके इनको परपीड़ा से हटा के निर्बलों की रक्षा तन, मन और धन से सदा करता है वही मनुष्य जाति का निज गुण है क्योंकि जो बुरे कामों को करने में भय और सत्य कामों के करने में किंचित भी भय शंका नहीं करते, वे ही मनुष्य धन्यवाद के पात्र कहाते हैं।" (व्यवहारभानु)

"पूजनीय जन वे हैं कि जो अपनी हानि होती तो भी सबके हित के करने में अपना तन मन धन लगाते हैं और तिरस्करणीय वे हैं,जो अपने ही लाभ में सन्तुष्ट रहकर सबके सुखों का नाश करते हैं।" (गोकरुणानिधि)

पशुओं के हत्यारे पापी होते हैं

"सुखकारक पशुओं के गले छुरों से काटकर जो अपना पेट भर सब संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे भी अधिक कोई विश्वासघाती अनुपकारी, दुःख देनेवाले और पापी जन होंगे?" (गोकरुणानिधि)

"हे मांसाहारियों! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं? हे परमेश्वर! तू क्यों इन पशुओं पर जो कि बिना अपराध मारे जाते हैं, दया नहीं करता? क्या उन पर तेरी प्रीति नहीं है? क्या उनके लिए तेरी न्याय सभा बन्द हो गई है? क्यों उनकी पीड़ा छुड़ाने पर ध्यान नहीं देता और उनकी पुकार नहीं सुनता। क्यों इन मांसाहारियों के आत्माओं में दया प्रकाश कर निष्ठुरता, कठोरता, स्वार्थपन और मूर्खता आदि दोषों को दूर नहीं करता? जिससे ये इन बुरे कामों से बचें।" (गोकरुणानिधि)

"सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर हम और आप (पशु हत्यारे) पर पूर्ण कृपा करें कि जिससे हम और आप लोग विश्व के हानिकारक कर्मों को छोड़ सर्वोच्चकारक कर्मों को करके सब लोग आनन्द में रहें। इन सब बातों को सुन मत डालना, किन्तु सुन रखना, इन अनाथ पशुओं के प्राणों को शीघ्र बचाना।

हे महाराजाधिराज जगदीश्वर। जो इनको कोई न बचावे तो आप इनकी रक्षा करने और हमसे कराने में शीघ्र उद्यत हूजिए। (गोकरुणानिधि)

अधर्मी का नाश एक दिन अवश्य होता है

"मनुष्य निश्चय करके जाने कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र नहीं होता, वैसे ही किये हुए अधर्म का फल भी शीघ्र नहीं होता, किन्तु धीरे-धीरे अधर्मकर्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूलों को काट देता है, पश्चात् अधर्मी दुःख ही दुःख भोगता है।" (संस्कारविधिः गृहाश्रम विधिः)

-सी-२२, गांधी नगर, गाजियाबाद (उ. प्र.)

दोहे

❐ कृष्णमित्र

ध्वस्त हुई सद्वृत्तियां अस्त हुए संस्कार
भूल गईं अब पीढ़ियां सब आचार-विचार
पश्चिम की आंधी चली पूरब के आकाश
नग्न सभ्यता हो गई, ऐसा हुआ विनाश
नित्य बड़े होते गए अपराधों के पांव
इसीलिए बीहड़ बने, बसे बसाए गांव
बुद्धिमान चिन्तन करें, करें विचार-विमर्श
निष्ठाएं क्यों मर रहीं, कहां गए आदर्श
मानवता गुम-सुम पड़ी, दानवता है मस्त
अन्याय के खौफ से न्याय हुआ है त्रस्त
राजनीति को धर्म से क्यों आती है शर्म
इसका कारण सिर्फ है नेताओं के कर्म
संस्कारों की शुद्धता का कैसा सन्देश
जिस पीढ़ी के पास अब भाषा है ना वेश
पंचायत में न्याय का पूछ रहे हो हाल
दारू की दुर्गन्ध से महक रही चौपाल
ऋषियों के इस देश में रिश्वत का व्यापार
ऋषि-वत सब प्राणी यहां, है जिनकी सरकार
पलक झपकते ढह गया सपनों का संसार
दीख रही है हर तरफ अब तो सिर्फ दरार।
भारतेन्दु के देश में, अंग्रेज का राज
जाने कब मिल पाएगा, हिन्दी तुझको ताज
उनको यह उम्मीद थी, वे ही होंगे शाह
इसीलिए हर बात से, थे वे लापरवाह

यज्ञ और पर्यावरण

❑ डॉ. श्रीराम वर्मा

वेद प्रकृति के प्रांगण में रचित वे ग्रंथ हैं जो सदैव हर क्षेत्र में मानव जाति का मार्गदर्शन करते रहे हैं। **वेदों में भिन्न-भिन्न सूक्तों में प्रकृति की महत्ता की ओर इंगित किया गया है। इन सूक्तों के प्रत्येक शब्द में भाव सम्वेदना एवं ज्ञान के उच्चस्वर ध्वनित होते हैं। भारत के ऋषियों ने अपनी प्रखर एवं प्रज्ञावान दृष्टि से पर्यावरण परिष्करण के लिए एक अत्यन्त उत्तम प्रक्रिया, यज्ञ का अन्वेषण किया।** यजुर्वेद में प्रधान रूप से यज्ञों के विधि-विधानों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

राष्ट्रीय जीवन के उत्कर्ष, उत्थान एवं चतुर्दिक विकास में संजीवनी शक्ति की तरह काम करने वाली यज्ञ की विधा पर इस युग में युग ऋषि परम पूज्य स्वामी दयानन्द ने नवीनतम प्रकाश डाला है। यज्ञ के वैज्ञानिक एवं दार्शनिक स्वरूप को उभारने में व इसे जन-जन के बीच लोकप्रिय बनाने में इनकी भूमिका सराहनीय है।

पर्यावरण प्रदूषण आज विश्व की ज्वलन्त समस्या है। जल, थल एवं वायु सभी अवांछित अवशिष्टों से परिपूर्ण हो गये हैं। इस प्रदूषणके कारण मनुष्यों का स्वास्थ्य अनेक व्याधियों से युक्त हो गया है। सामयिक पर्यावरणीय विकृतियों में कमी लाने तथा विश्व के सभी प्राणियों को स्वस्थ एवं सुखी बनाने में यज्ञ परम सहायक है। यज्ञ के माध्यम से मंत्र शक्ति का प्रयोग लोक कल्याण तथा आत्म शुद्धि के लिए किया गया है। **यज्ञ में उच्चारित विशिष्ट मंत्रों का प्रभाव शरीर संस्थानों पर विशेष प्रकार से पड़ता है। मन्त्रोच्चारण करते समय सारा स्वर संस्थान झंकृत हो उठता है। मंत्रों के प्रभाव से होम किये गये पदार्थ औषधियों से अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं।** दहन की सामान्य प्रक्रिया में अग्नि में डाला गया हविष्य असामान्य शक्तिवान हो जाता है। मन्त्रों के उच्चारण से उत्पन्न ध्वनि एवं अग्नि अर्चन से उत्पन्न उष्मा संयुक्त रूप से भौतिक, मनोवैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक लाभ देती है।

यज्ञाग्नि का सुगन्धित धुआं पर्यावरण में फैले विषाणुओं को नष्ट कर देता है। यज्ञ में प्रयुक्त पदार्थों विशेषतया गाय के घी को अग्नि में डालने पर उससे उत्सर्जित धुआं आणविक विकरण के प्रभाव को कम कर देता है। केवल हमारे देश में ही नहीं वरन् विश्व के कई देशों में यज्ञ से सम्बन्धित काफी अनुसन्धान किये गये हैं। सोवियत् रूस के वैज्ञानिक शिरोविच ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि हम लोगों ने गव्य (दूध, मक्खन, घी, गोमूत्र, गोबर इत्यादि) के परीक्षण से निष्कर्ष निकाला है कि गाय के दूध में आणविक विकरण के प्रभाव से पूर्ण सुरक्षित रहता है। गाय के घी को अग्नि में डालने पर उससे उत्सर्जित धुआं आणविक विकरण के प्रभाव को काफी हद तक कम कर देता है।

सूरत में १९९४ में प्लेग फैलने पर वहां भी चिकित्साधिकारियों ने वातावरण को विषाणुरहित बनाने के लिए घी मिश्रित धूप, हल्दी तथा कपूर जलाने को कहा था और हवन सामग्रियों के लाखों पैकेट भी बांटे गये थे। यज्ञ के समय सुगन्धित पदार्थ वाष्पीकृत होकर वायु के साथ विसरित होते हैं एवं यज्ञीय परिवेश में सुगन्धि की अनुभूति होती है। जब सारे वाष्पशील पदार्थ विसरित हो जाते हैं तब सूर्य के प्रकाश में प्रकाश रासायनिक (फोटो केमिकल) अभिक्रिया आरम्भ होती है। यही कारण है कि यज्ञ सूर्य के प्रकाश की पूर्ण उपस्थिति में ही सम्पन्न किये जाते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन पराबैंगनी तथा अन्य लघु तरंगदैर्ध्य वाले क्षेत्रों में होते हैं। सुगन्धित धुआंयुक्त पदार्थों का रासायनिक संगुणन (डिकम्पोजिशन) उपचयन एवं अपचयन होता है। दहन प्रक्रिया में उत्पन्न कार्बनडाईआक्साइड का भी कुछ सीमा तक अपचयन होता है।

वायुमण्डल में व्याप्त कार्बन मोनोऑक्साइड, कार्बनडाइऑक्साईड एवं नाइट्रोजन के ऑक्साइड इत्यादि प्रदूषकों को यज्ञ के द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। ऑक्सीजन के परिणाम में वृद्धि होती है। पर्यावरण में उपस्थित धन विद्युतीय आवेश बढ़कर उसे प्रदूषित करता रहता है। **यज्ञ में पदार्थों की अपचयन क्रिया के द्वारा वायुमण्डल में ऋण विद्युतीय आवेश (इलेक्ट्रॉन) पैदा होते है। जो घन आवेश के हानिकारक प्रभाव को नष्ट कर देते हैं तथा बादलों के साथ संयुक्त होने पर ये इलेक्ट्रॉन उस विषांश को समाप्त कर देते हैं।** वर्षा के रूप में भूमि पर गिरता हुआ वह जल बिल्कुल शुद्ध एवं स्वास्थ्यप्रद होता है। यज्ञ के द्वारा परिशोधित जल एवं वायु मनुष्यों के अलावा वृक्षों-लताओं इत्यादि के लिए भी वृद्धिकारक और कीटाणुनाशक हो जाते हैं जिससे हरीतिमा का संवर्द्धन भी होता है।

यज्ञ से उत्सर्जित गैसों में अनेक रोगों के रोगाणुओं को नष्ट करने की पूर्ण क्षमता है। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्री एम. मोनियर ने अपनी पुस्तक ''एंसिएंट

हिस्ट्री ऑन मेडिसन'' में लिखा है कि रोगों के कीटाणुओं को समाप्त करने के लिए यज्ञ से सरल एवं सुलभ कोई पद्धति नहीं है। फ्रांस के वैज्ञानिक प्रोफेसर टिलवर्ट ने यह निष्कर्ष निकाला है कि यज्ञ से उत्पन्न धुएं में पर्यावरण परिशोधन की विचित्र शक्ति है।

अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. हार्वड स्टिर्गुल ने अपने परीक्षण में पाया कि गायत्री मंत्र के सस्वर उच्चारण से एक सेकेंट में ११०,००० तरंगें उत्पन्न होती हैं जो दुर्भावनाओं को काफी हद तक शान्त कर देती हैं। हमारे तत्वदर्शी ऋषियों ने आविष्कार किया कि किस-किस शब्द का, किस-किस क्रम से, किस भावना और किस स्थिति में, कैसा उच्चारण किया जाये तो उसकी क्या प्रतिक्रिया व्यक्ति एवं समष्टि पर होगी। इसी वैज्ञानिक उपलब्धि पर यज्ञ में मन्त्रोच्चारण का प्रावधान हुआ। ध्वनि शक्ति का ही स्वरूप वेदमंत्रों में भी अपरिमित ऊर्जा पैदा करता है। ध्वनि के इस प्रभाव को अब विज्ञान भी समझने लगा है।

यज्ञ से पर्यावरण के साथ चित्त और चेतना भी शुद्ध होती है। पुराणों में भी यज्ञ का वर्णन विस्तार से मिलता है। शक्तिशाली राजा अश्वमेध यज्ञ करते थे। यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ घोड़े को सजाकर दौड़ा देते थे। यह निकट के राज्य में जाता और उसे कोई पकड़ने का साहस नहीं करता था। इस प्रक्रिया में बलशाली राजा सभी राजाओं से सम्मान अर्जित करता था और उन्हें अपने साथ मिला लेता था। अश्वमेध यज्ञ के साथ सबको जोड़ने तथा मिलाने का पराक्रमी कार्य अश्वमेध कहलाता था। इसमें घोड़े को जान से मारने का भाव कहीं भी नहीं आता। किन्तु **इतिहास को विकृत करने के षड्यंत्र हुए जिनमें एशियाटिक सोसाइटी का नाम अग्रणीय है। इसकी स्थापना १७८४ में वारेन हेस्टिंग के संरक्षण में कलकत्ता में हुई थी। उसने भारतीय इतिहास और संस्कृति और संस्कृत को विकृत करने का प्रयास किया। सन् १८७४ में मैक्समूलर को ईस्ट इण्डिया कम्पनी में नियुक्त किया गया। उसका दायित्व था वेद की ऋचाओं का अर्थ तथा भावों को इस ढंग से बदलें कि भारत की मूल आत्मा छिप जाये तथा विदेशी शासकों का हित साधन हो।** संस्कृत महाविद्यालय कलकत्ता के संस्कृत के व्याकरणाचार्य पण्डित तारानाथ को लालच देकर इस टोली में मिला लिया। तारानाथ को संस्कृत का ऐसा शब्दकोष तैयार करना था जो मैक्समूलर के वेदों के अनुवाद के अर्थों से मेल खाता हो। तारानाथ ने जो शब्दकोष तैयार किया उसका नाम है वाचस्पतम्। महर्षि पाणिनी का अनुकरण न करके उन्होंने मनमाने ढंग से शब्द की व्याख्या की। उदाहरण के तौर पर अश्वमेध के अर्थ को देखिये। वाचस्पतयम् में व्याख्या दी गई अश्वमेध -अश्वः प्रधानतया में ध्यते हिंसतेऽत्र, मेध-हिंसने यत्र। अर्थ है घोड़े का वध किया गया। मूल धातु शब्द है मेध जिसका अर्थ है समझना अथवा जोड़ना। अश्वमेध यज्ञ के द्वारा सभी राजनैतिक शक्तियों को जोड़ा जाता था। यज्ञ का प्रयोजन ही प्राणिमात्र का कल्याण है। अतः **अश्वमेध यज्ञ में घोड़े को मारने का प्रश्न ही नहीं उठता। अश्वमेध यज्ञ के द्वारा विभिन्न राजनैतिक शक्तियों को जोड़कर जन कल्याण के हित में काम करना था। अतः यज्ञ राजनैतिक विद्वेष दूर करने, आपसी समझ बढ़ाने तथा राजनैतिक पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए भी किया जाता है।**

यज्ञ श्रेष्ठतम कर्म है और यह भी कह सकते हैं कि जो भी श्रेष्ठतम कर्म है, वही यज्ञ है। इसी को ध्यान में रखकर ऋषियों ने ''यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म'' कहा है। जीवन का आधार ऊर्जा है। **आज का विज्ञान हो या वेद प्रतिपादित यज्ञ, विद्या, दोनों का केन्द्र ऊर्जा है। इसी को वेद की भाषा में अग्नि कहा गया है।** ऋग्वेद का प्रारम्भ भी अग्नि की स्तुति के साथ होता है। ''अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्विजम्।'' भौतिक या आध्यात्मिक यह सभी रूपों में कल्याणकारी है।

विचारों का ईश्वरोन्मुख बनाने, कषाय-कल्मषों का परिशोधन कर पात्रता विकसित करने तथा अनन्त के प्रति तादात्म्य भाव विकसित करने के रूप में यज्ञ परम सहायक है। यज्ञीय भाव से किये गये कर्म दिव्य कर्म बन जाते हैं। जिस तरह अग्नि यज्ञ कुण्ड में प्रज्वलित होती है,वैसे ही ज्ञानाग्नि अन्तःकरण में, तापाग्नि इन्द्रियों में तथा कर्माग्नि देह में प्रज्वलित रहनी चाहिए। यही यज्ञ का आध्यात्मिक रूप है। हर श्वांस में संपादित दिव्य कर्म ही है यज्ञ। यज्ञ में समाहित विचार एवं प्रेरणाएं-आस्था परिशोधन एवं आदर्शों की प्रतिष्ठापना का एक सशक्त माध्यम है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि पर्यावरण चाहे भौतिक हो, सामाजिक हो, सांस्कृतिक हो या आध्यात्मिक, यज्ञ हर तरह के पर्यावरण को शुद्ध व चैतन्य बनाने में सक्षम है। इसलिए सभी प्रकार की उन्नति को सामने रखकर भारतीय मनीषियों ने प्राणिमात्र को सुख प्रदान करने के लिए यज्ञ को जीवन पद्धति का अभिन्न अंग बनाया जिससे मानव ही नहीं अपितु पशु-पक्षी, चल-अचल, थलचर, नभचर, वृक्ष तथा सम्पूर्ण पर्यावरण सुरक्षित रहे तथा सभी को विकसित होने का पूर्ण अवसर मिले।

(रीडर, भौतिक विभाग, डी.बी.एस. कालेज देहरादून)

वेद में गोमांस भक्षण का विधान है?

❒ डॉ. धर्मवीर

अंग्रेजी समाचार पत्र हिन्दू के दिनांक 14 अगस्त मंगलवार 2001 के ओपन पेज शीर्षक के प्रथम पृष्ठ पर किसी प्रो. राम पुनियानी का लेख छपा था-बीफ ईटिंग : स्ट्रेन्गुलेटिंग हिस्ट्री। लेख का उद्देश्य दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के प्रो. डी.एन. झा की 'होली काउ बीफ इन इण्डियन डाइट्री ट्रेडिशन्स' पुस्तक का परिचय देते हुए उसकी प्रामाणिकता प्रतिपादित करना तथा जो तथाकथित इस खोजपूर्ण कार्य को प्रकाशित होने से रोकना चाहते हैं उनकी भर्त्सना करना और उसके विचारों को गलत साबित करना था। लेखक की उदारता का नमूना देखिए-जो लोग गाय का आदर करते हैं और उसको मां का दर्जा देते हैं उनके विचारों का सम्मान करना चाहिए किन्तु इसके विपरीत राजनैतिक लाभ के लिए इतिहास के पठन-पाठन और अनुसंधान का विरोध कर धर्मान्ध लोगों द्वारा खुले वातावरण को प्रदूषित किया जा रहा है।

लेख का प्रारम्भ करते हुए लेखक लिखता है दिल्ली विश्वविद्यालय के इतिहासकार प्रो. डी.एन.झा पर कुछ अज्ञात लोग अपनी उपर्युक्त पुस्तक प्रकाशित न करने के लिए दबाव डाल रहे हैं और दूरभाष पर जान से मारने की धमकी दे रहे हैं जबकि यह कार्य प्रामाणिक स्रोतों पर आधारित है तथा इतिहास में स्वीकार्य वैज्ञानिक अनुसन्धान के मानदण्डों के अनुसार किया गया है। बस परेशानी यह है कि पुस्तक के निष्कर्ष से उन हिन्दूवादियों के आदेशों की अवमानना होती है जो बलपूर्वक हिन्दुओं का गोमांस खाना स्वीकार नहीं करते हैं। लेख लम्बा है और स्वाभाविक है वह किसी पुस्तक के परिचय में लिखा गया है तो बड़ा तो होगा ही। ग्रन्थकार का कहना है कि उसने वैज्ञानिक व अनुसंधानपरक कार्य किया अत: उसके कार्य को स्वीकार किया जाना चाहिए और उसे मान्यता मिलनी चाहिए। किसी कार्य के औचित्य की कसौटी कार्य का उद्देश्य होता है। उसकी सारी वैज्ञानिकता इस बात में निहित होती है कि यह कार्य क्यों किया जा रहा है? यदि विचार किया जाये तो स्पष्ट होगा, यह कार्य किसी अभाव की पूर्ति नहीं करता-सम्भव था हमारे देश में भुखमरी होती गाय को मारके खाने से जीवन बच सकता तो लोगों को जान बचाने के लिए कहा जाता-डरो मत, तुम्हारे पूर्वजों ने भी गोमांस खाया है तुम भी खा लो। जान बचाना गाय बचाने से ज्यादा जरूरी है। दूसरी बात हो सकती थी गोमांस खाने से कोई स्वास्थ्य लाभ होता, ओलम्पिक के सारे स्वर्ण पदक गोमांस खाने से मिल जाते तो उनकी सफलता के लिए ऐसी प्रेरणा की गई है। अथवा देश की जनता किसी ऐसे रोग से पीड़ित हो जिनकी चिकित्सा गोमांस से होती हो तो समझा जा सकता है लेखक के वैज्ञानिक अनुसन्धान कर रोग निवारण के उपाय के रूप में गोमांस खाने का आविष्कार किया हो। अथवा कोई और महत्वपूर्ण कारण हो जिससे यह अनुसंधान करने की बाध्यता हुई हो, यह बात इस पुस्तक में नहीं प्रतीत होती।

अब तथ्य स्पष्ट है कि इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य इस धारणा को समाप्त करना है कि हिन्दू गौ मांस नहीं खाता। इस धारणा को गलत सिद्ध करने के पीछे उन लोगों को आहत करना और उन्हे नीचा दिखाना है जो इस परम्परा का आदर करते हैं। ऐसे अनुसन्धान कम्युनिस्ट और ईसाइयत के पक्षधर ही क्यों करते हैं? कोई तटस्थ व्यक्ति ऐसे अनुसंधान में लगा हुआ दिखाई नहीं देता। जो लोग दुर्भावना और दुष्टता से प्ररित होकर कार्य करते हैं उनका कार्य कैसे वैज्ञानिक और सत्य हो सकता है? डी.एन.झा उन लोगों के प्रतीकमात्र हैं, जो व्यक्तिगत जीवन में पाखण्डी और भाड़े पर काम करने की प्रवृत्ति वाले हैं। क्योंकि ये हिन्दू दुर्बलता का पूरा फायदा उठाते हैं और अपनी विरोध की दुकानदारी भी करते हैं। ये व्यक्तिगत जीवन में ऊंच-नीच मानते, परिवार में परम्पराओं को निभाने, देवी-देवता, तीर्थ करने से नहीं चूकते, परन्तु पद-प्रतिष्ठा धन के लिए हिन्दू विरोध की राजनीति करते हैं। ऐसे लोगों का लिखा पक्षपात से रहित नहीं हो पाता और अनुसन्धानकर्ता झा भी इसके अपवाद नहीं हैं।

अनुसन्धान की पहली कसौटी अनुसन्धान का उद्देश्य सत्य को उद्घाटित करना होना चाहिए परन्तु इस लेख में एक भी प्रकरण वेद से नहीं दिया गया है, जिसमें गोमांस खाने का उल्लेख या विधान हो। इसके विपरीत वेद में निम्न विधान स्पष्ट है -

यजमानस्य पशून् पाहि। अर्थात् हे प्रभु अपने उपासकों के पशुधन की रक्षा कर। इतना ही नहीं इसी मंत्र में गौ को अघ्न्या कहा, जिसका अर्थ 'न मारने योग्य है'।

अथर्ववेद में गाय की गणना मनुष्य के साथ करते हुए कहा गया है जो हमारी गाय, घोड़े, मनुष्यों को मारे उसे हम गोली से उड़ा दें।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नासो अवीरहा।।

मांस तो नहीं प़रन्तु वेद में घी-दूध खाने का विधान अवश्य है-

सं सिच्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ।।

इस मंत्र में गायों की रक्षा करने की बात कही गई हैं। गाय को विश्व की माता कहा गया है-गावो विश्वस्य मातर:

यद्यपि वेदों में गोमास भक्षण का निषेध है, गोमांस खाने का विधान तो कहीं है नहीं, फिर भी अनुसन्धानकर्ता को ऐसे स्थल मिल ही गये तो उनका विचार अवश्य कर लेना चाहिए, क्योंकि विद्वान् लोग पक्षपात रहित होते हैं। लेखक कहता है इन्द्र को गोमांस पसन्द था। यही नहीं अपितु गोमांस इन्द्र की कमजोरी था। आगे कहता है अग्निदेव को बैल गाय का मांस पसन्द था, मरुतों अश्विनी कुमारों को भी गायों की बलि दी जाती थी।

इन दो वाक्यों में अनुसंधान गड़बड़ा गया-क्यों इन्द्र को गोमांस पसन्द था? यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है इन्द्र, अग्नि, मरुत, अश्विनौ कौन हैं? यदि ये व्यक्ति हैं और मांस खाते हैं तो एक अलग बात है। यदि इन्द्रीदि कल्पित देवता हैं और उपासक उनके लिए बलि देता है तो बलि उपासक की इच्छा और आवश्यकता है, इन्द्र की नहीं।

वेद निरर्थक है इस पूर्वपक्ष की एक युक्ति स्वधिते मैनं हिंसी: हे स्वधिते! इसकी हिंसा मत कर-इस मन्त्र को पढ़कर यजमान हिंसा करता है-इसका उत्तर यास्क देते हैं-'आम्नाय वचनादहिंसाप्रतीयेत?' वेद मंत्र अहिंसा का ही उपेदश दे रहा है। इस मंत्र से कोई हिंसा करे तो इसमें वेद का दोष नहीं, हिंसा करने वाले का दोष है।

हमें ध्यान रखना चाहिए वेद में हिंसा नहीं है और वैदिक काल अर्थात् वेदों को जानने मानने वाले लोग हिंसा के समर्थक नहीं थे, परन्तु मध्यकाल में अज्ञानता और स्वार्थवश लोगों ने वेद के नाम पर अनर्गल कार्य प्रारम्भ कर दिये। इतना ही नहीं वेद में तो व्यवस्था के कारण प्रक्षेप-मिलावट नहीं की जा सकी, परन्तु अन्य ग्रंथों में पर्याप्त प्रक्षेप कर दिया गया। जहां पर ग्रन्थों में प्रक्षेप किया गया है ऐसे ग्रन्थों में दोनों तरह के वाक्य मिलते हैं। ऐसी परिस्थिति में अनुसंधान करने वाला अपने पक्ष के समर्थन वाक्यों को तब तक प्रमाण रूप में प्रस्तुत नहीं कर सकता जब तक उन्हें मौलिक सिद्ध न कर दे। स्वाभाविक रूप से दो विरोधी वाक्यों को प्रमाण कहने वाला और मानने वाला दोनों मूर्ख हैं क्योंकि किसी भी समझदार आदमी का कथन परस्पर विरोधी नहीं हो सकता। फिर वेद-ब्राह्मण-मनु को इन मूर्खताओं से भरा हुआ कैसे कह सकते हैं? लेखक कहता हे मनु ने गोमांस क निषेध नहीं किया है। यह कथन कपट और छल से भरा हुआ है। जो मनु मांस मात्र के सेवन का निषेध करता है वह गोमांस खाने का विधान कैसे कर सकता है? मनु महाराज मांस खाने का निषेध करते हुए आठ व्यक्तियों को पापी कहते हैं-

अनुमन्ता विशसिता निहता क्रयविक्रयी।
संस्कर्ता चौपहर्ता च खादकश्चेति घातका:।।

मारने की सहमति देनेवाला, काटनेवाला, मारनेवाला, खरीदनेवाला, बेचनेवाला, पकानेवाला, परोसनेवाला, खानेवाला तथा सभी हत्यारे व पापी कहलाते हैं। क्या ऐसे मनु को गोमांस खाने के लिए प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। क्या इसी प्रकार छल करने को अनुसन्धान कहा जाना चाहिए?

इन तथाकथित अनुसन्धानकर्ताओं की एक विशेषता है, ये पैमाना भी स्वयं निश्चित करते हैं परिणाम भी स्वयं ही प्रस्तुत कर देते हैं। लेखक कहता है-तैत्तिरीय ब्राह्मण में लिखा है अन्नं वै गौ:-गाय भोजन है। कोई बुद्धिमान आदमी बता सकता है इस वाक्य से कैसे सिद्ध होता है कि यहां गाय खाना लिखा है। महाभारत के विदुर प्रजागर प्रकरण में एक श्लोक आता है-मिष्टाशा गोमता जिता-इसका अर्थ है जो गाय रखता है उसकी मिठाई खाने की इच्छा पूरी होती है। अब अनुसंधान यह करना है गाय से गुड़ या शक्कर कैसे बनती है या गाय का मांस ही मिठाई है जो गाय खाता है वही मिठाई खाता है: क्या ऐसा अर्थ अनुसंधान कहलायेगा? आचार्य यास्क कहते हैं-"गौरिति पृथिव्या नामधेयम्"-गौ पृथ्वी को कहते हैं, "आदित्योऽपि गौरुच्यते"-सूर्य को भी गौ कहते हैं-वे आगे कहते हैं-"अथापि पशूनामेह भवति"-गौ एक पशु का भी नाम है और उस वस्तु से प्राप्त वस्तु को भी गौ कहते हैं-जैसे "गोभि: श्रीणीत मत्सरम्"-गौ से सोम को तृप्त करो। यहां 'गोमांस' अर्थ करना अनुसंधान करना होगा? परन्तु गोभि:-पयोभि: गोविकारै: यहां गोभि: का अर्थ दूध और उससे बना पदार्थ हुआ। किसी ग्रंथ के आशय को उसके लक्ष्य और प्रकरण से हटाकर बात करने को अनुसंधान

करना नहीं कहते जैसा कि डी.एन.झा और उनके समर्थक कर रहे हैं।

झा ने वेद-ब्राह्मण ग्रन्थ-मनु के साथ चरक की चर्चा भी की है और उसमें गोमांस खाने का विधान बताया है। चरक चिकित्सा-ग्रन्थ है, धर्मग्रन्थ नहीं। चिकित्सा के सन्दर्भ में गाय, गधे, ऊंट सबके मांस के गुण-दोष बताये गये हैं। वे सारे मांस समाज में खाने की परम्परा हो यह बात कहना गलत होगा। साथ ही हमें ध्यान में रखना होगा दुनियां में हर अच्छा-बुरा काम कहीं न कहीं कोई न कोई करता है। बुराई को नियम नहीं बनाया जा सकता। नियम वह होता है जिससे लाभ अधिक हो, जो प्रशंसनीय हो, जिसे समाज में अधिकांशतः स्वीकार किया गया हो। आज से तथाकथित सभ्य युग में भी मनुष्य का मांस खाने की घटना देखी जा सकती है, क्या इससे मनुष्य का मांस खाने का विधान बन जायेगा?

झा की एक आपत्ति है, हिन्दूवादी लोग केरल में गोमांस खाने वालों का गोमांस खाना छुड़ा रहे हैं। किसी को समझाकर बुराई से छुड़ाना आपत्तिजनक कैसे हो सकता है? ऐसे करने में गलत क्या है? झा जैसे लोगों को इस बात से क्या परेशानी हो सकती है? अज्ञान में मनुष्य कुछ भी खा सकता है कुछ भी कर सकता है, परन्तु समझदार लोग सही की जानकारी देकर उसे बुराई से बचा सकते हैं और बचाना चाहिए।

हमने कुछ प्रतीक बना लिए हैं और उनको पक्ष-विपक्ष मान लिया, गुण-दोष पर विचार नहीं करना चाहते। अज्ञान के कारण ही मध्यकाल में पण्डे-पुरोहितों ने यज्ञ में गाय, घोड़े, बकरी आदि की बलि दी परन्तु गोमेध, अश्वमेध के साथ पितृमेध नाम क्यों भूल जाते हैं? पितृमेध का अर्थ पिता की बलि देना क्यों नहीं करते? और इससे हिन्दुओं के मनुष्य का मांस खाने का अधिकार क्यों नहीं स्वीकार करते? यदि प्रसंग पता हो तो श्री झा और उनके अनुयायियों को मालूम होना चाहिए पितृमेध का अर्थ अन्त्येष्टि संस्कार है, जो हिन्दुओं में किया जाता है। यदि लेखक को अन्नं वै गौः पंक्ति में गौ का अर्थ अन्न स्वीकार है तो अश्वमेध में अश्वो वै राष्ट्रम् में अश्व का अर्थ राष्ट्र क्यों स्वीकार नहीं है?

हमें नहीं भूलना चाहिए मध्य काल डी.एन.झा जैसे लोगों से भरा हुआ था। ऐसा कोई अनर्थ नहीं जो उस समय वेद और यज्ञ के नाम पर किया न गया हो। परन्तु इसका दोष वेद पर नहीं आता, वेद तो इसकी निन्दा करते हैं।

आगे लेखक कहता है हिन्दुओं में अहिंसा का विचार बौद्धों से आया और उन्होंने बौद्धों के मुकाबले के लिए अहिंसा का विचार स्वीकार किया। बौद्धों और जैनों के समय समाज में हिंसा का प्रचार बढ़ गया था, वेद के पठन-पाठन पर तथाकथित ब्राह्मणों ने अंकुश लगाकर 'स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्' का घोष दिया था, जिसके कारण भगवान बुद्ध ने भी कभी वेद के दर्शन किये हों ऐसा नहीं लगता। उन्होंने तो ईश्वर व वेद के ठेकेदारों की बात सुनकर वेद व ईश्वर को मानने से इन्कार कर दिया और समाज में यज्ञ व ईश्वर के नाम पर की जा रही हिंसा का विरोध किया। परन्तु लेखक की दुरभिसंधि देखिए वह कहता है-बुद्ध का अहिंसा पर बल अन्ध या अपरिवर्तनीय नहीं था, उन्होंने गोमांस चखा था और उनकी मृत्यु सुअर के मांस खाने से हुई थी। यह कथन अपवाद को नियम सिद्ध करने का प्रयास है। भगवान बुद्ध भिक्षा में दिये गये पदार्थ को स्वीकार करने के नियम में बंधे थे अतः उन्होंने मांस स्वीकार किया, उससे उनकी मृत्यु हो गई। क्या इससे बौद्धों को गाय और सुअर का मांस खाना चाहिए यह नियम बनाया जा सकता है? क्या इस कथन को वैज्ञानिक शोध कहना संगत होगा? यहां कुछ विद्वान् इसे सुअर न मानकर सरण-कन्द भी मानते हैं।

इसी प्रकार याज्ञवल्क्य आदि पर मांस का आरोप मध्यकाल के उत्तर रामचरित जैसे ग्रंथों पर आधारित है। महाभारत की रन्तिदेव की कथा महाभारत का प्रक्षिप्त अंश है, अतः महाभारत के काल के पश्चात् हुए पतन को वेद और वैदिक सिद्धान्तों का प्रमाण नहीं बनाया जा सकता है।

अन्त में यह उचित होगा यदि वास्तव में लेखक शोध का पुजारी है तो उसे समय के अनुसार ग्रंथों के भी दो विचार बताने होंगे। वेद के मूल विचार क्या हैं और बाद में उनके मानने वालों ने क्या अच्छा किया और क्या बुरा किया। यदि जैसा लिखा है वही अभीष्ट है तो यह नितान्त असत्य और कपटपूर्ण है। यह संस्थाओं पर चोट करने और लोगों को भड़काने के लिए राजनीति प्रेरित लेखन है, इसका शोध से कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसे विचार की जितनी निन्दा की जाये कम है।

मांस का निषेध करते हुए मनु महाराज कहते हैं-विना हिंसा के मांस नहीं मिलता, हिंसा पाप है, अतः मांस खाना भी पाप है-

> नाकृत्वा प्राणिनां हिंसा मांसमुत्पद्यते क्वचित्।
> न च प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं विवर्जयेत्।।

-चांद बावड़ी, अजमेर

मेरा मौन तुम्हारी टेर

❒ पं. चमूपति

मैं कैसे जानूं कि मेरा जीवन सच्चा है-सफल है। किसी ने कहा-यज्ञ करो। मैंने कर दिया। यज्ञ की आग से कोई चीज रोक नहीं रखी। शरीर-द्वारा जितनी साधना हो सकती थी, कर दी है। पर कहते हैं-शरीर की क्रिया का इतना मूल्य नहीं जितना मन की भावना का है। प्रयत्न तो यह भी किया है कि जो काम करूं, उसके पीछे भावना भी शुभ ही रहे। पर मन तो बे-पेंदी का लोटा है। इसका एक जगह टिकाव है ही कहां? शुभ संकल्प करते करते बीच में एक अशुभ हिलोर-सी उठा दे। परिश्रम से उसे उस समय दबा भी दिया तो वह एक बार उठ तो गई ना। फिर मैं कैसे जानूं कि मेरी साधना ठीक थी, उसमें शारीरिक अथवा मानसिक-किसी प्रकार की कोर-कसर न थी?

> कस्य नूनं परीणसि धियो जिन्वसि सत्पते। गोषाता यय ते गिरः।। १४ ।। ३४
>
> (सत्यते) हे सत्यार्थो के रक्षक! (नूनम्) तुम निश्च से (कस्य) किसकी (धियः) ज्ञान, कर्म तथा ध्यान-धारणा से (परीणसि) अधिकाधिक (जिन्वसि) प्रसन्न होते हो-अधिकाधिक स्फूर्ति देते हो? (वही साधक सिद्ध है) (यस्य) जिसके (गो साता) वाणि-लाभ के समय (ते) तुम्हारी (गिरः) जिह्वाएं (बोल उठती हैं)।

यज्ञ का देवता-अग्नि है। वही सब आहुतियों का होता-दनादन करने वाला है। सच्ची आहुति को ले-लेता है, झूठा का झूठ निथार फेंक देता है। हमारे कर्म की, ज्ञान की, ध्यान-धारण की सभी आहुतियां इस यज्ञाग्नि के मुख में जाती हैं। यदि वे आहुतियां सद्भाव से दी गई हैं तो वह ''सम्पति'' उनसे बड़ा प्रसन्न होता है। उनका खूब स्वाद लेता है। जीभ चाट-चाट कर उन्हें खाता है, स्वाद ले लेकर उन्हें पचाता है और विश्व याग की आग का अंग सा बना देता है। यही उन आहुतियों की सच्ची सुरक्षा है। जो आहुति जितनी अधिक सुसंस्कृत होगी अग्निदेव के हाथों वह उतनी ही अधिक सुरक्षित हो जाएगी।

तो क्या हमारी आहुति सुसंस्कृत थी? क्या वह स्वीकृत हुई? वह विश्व याग की आग का अंग बनी? उसको ''सत्पति'' ने ''सत्'' समझा? इस बात का निश्चय कैसे हो?

इस समस्या का समाधान होना हमारे द्वारा कठिन है। शरीर की क्रिया का भौतिक माप तो हो सकता है, परन्तु मानसिक व्यापार अधिक गंभीर है, अधिक जटिल है। मनुष्य की बुद्धि उसकी थाह नहीं पा सकती, उसकी ग्रन्थि नहीं सुलझा सकती। मनुष्य को चुप रहते ही बनता है। हम अपनीकिसी क्रिया का विश्लेषण करने लगे, यह कहना कठिन ही होगा कि वह आद्योपान्त विशुद्ध सद्भाव ही से की गई थी। कोई गुप्त सद्भावना उसके साथ चिपकी रही हो-यह कोई असम्भ्व बात नहीं है। अपने सम्बन्ध में मनुष्य को स्वयं तो चुप ही रहना चाहिए।

अग्नि-देव की प्रसन्नता स्वयं अग्नि-देव द्वारा ही प्रकट हो जाती है और वह साधक की अपनी जुवान से। जब अपने गुण-दोष के विवेचन में असमर्थ साधक विवश होकर मौनधारण कर लेता है, यज्ञ करता है पर कहता नहीं कि मैं यज्ञ कर रहा हूं, क्योंकि यज्ञ के ठीक प्रकार करने न करने का उसे स्वयं निश्चय ही नहीं होता, तो उसकी आहुतियों में धीरे-धीरें अग्निदेव स्वयं प्रवेश करने लगता है। अन्तिम आहुति वाणी की, यज्ञ को यज्ञमय कहने की, उसे यज्ञ समझने की है। यज्ञ करते हुए यह भावना ही टूट जाए कि मैं यज्ञ कर रहा हूं-यज्ञ की पूर्ति इसी आहुति से होती है। एक दिन आता है, जब यजमान के अंग-अंग से अग्निदेव स्वयं बोल उठता है। उसमें एक विचित्र वाचालता-सी आ जाती है। वह कहता कुछ नहीं और सब-कुछ कह जाता है। तब उसकी वाणी अग्निदेव की वाणी होती है।

प्रभु की प्रसन्नता का यही चिह्न है। इस अवस्था में पहुंच चुका साधक सिद्ध हो जाता है। उसके ज्ञान, कर्म तथा धारणा-शक्ति का सूत्रधार स्वयं प्रभु बन जाता है। वह परमप्रेरक, सिद्धि की सम्पूर्ण शक्तियों को प्रबल प्रेरणा देता है। सिद्ध की प्रत्येक क्रिया बोल रही-प्रभु की कृपा का सन्देश दे रही-होती है। प्रभु सहस्र-जिह्व होकर सिद्ध की न बोल सकती बोली में बोलते हैं। साधना की सत्यता का यही प्रमाण है।

तो हे विश्व-याग के अग्रणी अग्निदेव! क्या हम उस मंगल घड़ी की प्रतीक्षा करें? हमारी आहुतियां तुम्हारी आग में पड़कर उत्तरोत्तर शुद्ध होती जाएं। उनके मल हटते जाएं। हमारे प्रति तुम्हारे मन का प्रसाद बढ़ता जाए। अन्त को वह शुभ घड़ी आए जब हमारा मौन तुम्हारी टेर हो जाए-हमारी मूकवाणियों में तुम बोलो-तुम्हीं बोलो।

मैं चुप थी तुम बोल रहे थे।
ओंठों पर मधु तोल रहे थे।
मन में मिश्री घोल रहे थे।
मेरा मौन तुम्हारा टेर।
स्वप्न-सुमेरु रहा दृग घेर। ०-०-०

प्रारब्ध प्रधान या पुरुषार्थ

❑ किशनकुमार लखाणी

जीवन के पथ पर हमें नित्य नये-नये अनुभवों का अहसास होता रहता है, जिन्दगी के सफर में हम कभी सफल होते हैं और कभी असफल। कठोर परिश्रम, मेहनत और लगन के बावजूद भी कई बार ऐसा होता है कि हमारे वांछित उद्‌देश्य की पूर्ति नहीं हो पाती या उसमें कुछ रुकावट उत्पन्न हो जाती है। इसके विपरीत कई बार बिना मेहनत किए ही अनचाही सफलता हमारी झोली में आ जाती है अथवा थोड़े से परिश्रम से ही मनोकामना की पूर्ति हो जाती है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियां जीवन का कटु सत्य हैं, परन्तु विचारणीय बिन्दु यह है कि अनुकूल परिस्थितियों में परिस्थितिजन विरोधाभास के बावजूद हमारी सोचने की स्थिति में भी परिवर्तन आ जाता है। अनुकूल-प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियां सांसारिक हैं और शरीर का सम्बन्ध भी संसार के साथ है, अतः इन परिस्थितियों का सामना हमें अवश्य ही करना पड़ता है। लेकिन कोई भी परिस्थिति हमारे समक्ष स्थिर नहीं रहती। फिर भी अक्सर हम अनुकूलता का श्रेय स्वयं के पुरुषार्थ को देते हैं और प्रतिकूलता को प्रारब्ध पर थोप देते हैं, जैसे व्यापार किया परन्तु भरपूर कोशिश के बाद भी नुकसान हो गया अथवा मन बहलाव के उद्‌देश्य से किसी क्षेत्र में थोड़ा-सा निवेश किया और आशा के अनुरूप अधिक लाभ की प्राप्ति हो गयी या किसी को कोई गम्भीर बीमारी है उसे डॉक्टर को दिखाया, इलाज करवाया जिसके कारण रोग से छुटकारा मिल गया। इसके विपरीत कई बार कुशल डाक्टर के उपचार और महत्वपूर्ण इलाज के बाद भी अनुकूल स्वास्थ्य लाभ नहीं मिल पाया अथवा कहीं कुछ अनचाही आर्थिक हानि हो गयी। इस तरह अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही परिस्थितियां हमारे जीवन में आती ही रहती हैं।

सोच का विषय यह है कि अनुकूल परिस्थिति में सफलता का श्रेय अगर पुरुषार्थ को देते हैं तो प्रतिकूल परिस्थिति में असफलता का दोषारोपण प्रारब्ध पर क्यों किया जाये। यानि जीवन में अगर प्रारब्ध प्रधान है तो अनुकूल स्थिति और सफलता में भी हमारा प्रारब्ध ही कारण है तथा जीवन में अगर पुरुषार्थ प्रधान है तो प्रतिकूल परिस्थिति व असफलता के लिये भी हम स्वयं जिम्मेदार हैं।

कुछ विचारशील चिन्तक महानुभावों से विचार-विमर्श तथा थोड़ा-बहुत अपने अनुभव के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि 'जिन्दगी मिली है' यह प्रारब्ध है। जो मनुष्य जन्म हमें मिला है वह ईश्वर के विशेष अनुगृह से मिला है। जो जिन्दगी मिली है उसे जीना है, यह पुरुषार्थ है यानि वर्तमान जीवन को सुन्दर तरीके से जीना है तथा दूसरों के हित में जीवन को समर्पित कर देना पुरुषार्थ है। अनुकूल-प्रतिकूल जो भी हमारे सामने आता है वह सांसारिक है और संसार प्रारब्ध का प्रतिफल है, परन्तु फिर भी हम अपने कर्म से विमुख नहीं हो सकते। भगवान श्रीकृष्ण ने भी कहा है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽत्स्वकर्मणि।। (गीता २/४७)

मनुष्य का कर्तव्य करने में ही अधिकार है, उसके फल में कभी नहीं। अतः मनुष्य को कर्मफल का हेतु नहीं बनना चाहिये और अकर्मण्यता में भी आसक्ति नहीं होनी चाहिये। अर्थात् कर्तव्य कर्म करते हुए इस भौतिक शरीर के विलीन होने के बाद कीर्ति व यादों के जो अवशेष रह जाते हैं वह हमारा पुरुषार्थ हैं। कर्म क्रियमाण और संचित दो तरह के बताये जाते हैं। क्रियमाण कर्म वह होते हैं जो वर्तमान में कर रहे हैं, इन कर्मों का संचय है वह आगे चलकर जो प्रतिफल के रूप में हमारे सामने आता है। उसी संचित कर्म को प्रारब्ध का स्वरूप बताते हुए कुछ विद्वान लोगों का मत पुरुषार्थ को प्रधान मानता है जबकि जीवन-मरण, हानि-लाभ, यश-अपयश को विधि के हाथ मानते हुए कुछ लोग भगवान श्रीराम का उदाहरण देकर प्रारब्ध को प्रधान बताते हैं। लेकिन प्रारब्ध और पुरुषार्थ यह दोनों एक ही कार्यालय में अलग-अलग दो विभागों में वरिष्ठ पद पर आसीन अपने-अपने विभाग के प्रधान हैं। जैसे अपराधी को पकड़ना तथा साम, दाम, दण्ड, भेद नीति से अपराध का पता लगाना पुलिस का काम है, परन्तु सजा देना, दण्डित करना अथवा छोड़ देना यह पुलिस के अधिकार में नहीं है। अपराधी के अपराध को सुनकर तथा उसका विश्लेषण करके उपयुक्त सजा देने का काम न्यायालय का है। न्यायालय और पुलिस दोनों अपने-अपने कार्यों को करने में स्वतंत्र होते हुए भी कानून की सीमाओं में बंधे हैं, इसी प्रकार प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों अपने विभाग के प्रधान हैं तथा दोनों अपने कार्य में स्वतंत्र होते हुए भी ईश्वरीय कानून की सीमाओं में बंधे हुए हैं। जैसे

पुलिस अपराधी को गिरफ्तार करके न्यायालय में पेश कर देती है और अपना कर्तव्य पालन करते हुए खुद भी न्याय की एक कड़ी बन जाती है, उसी प्रकार प्रारब्ध हमारे वर्तमान से जुड़कर आने वाले कल का पुरुषार्थ हो जाता है तथा वर्तमान का पुरुषार्थ हमारे आने वाले कल का भविष्य निर्माण करता है। अतएव प्रारब्ध और पुरुषार्थ दोनों का ही जीवन में पूर्ण महत्व है लेकिन मनुष्य का दायित्व है कि वह प्रारब्ध के सहारे निष्क्रिय होकर नहीं रहे और पुरुषार्थ के भरोसे फल की कामना भी नहीं करे। प्रारब्ध और पुरुषार्थ को हम शरीर के दाएं-बाएं अंग की तरह मान सकते हैं। संसार के साथ शरीर का सम्बन्ध होने के कारण शरीर-निर्वाह के निमित्त सांसारिक जीवन में प्रारब्ध की प्रधानता है। कर्म भी संसार को लेकर संसार के लिए किया जाता है। अतएव हम जो कर्म करते हैं उनका हेतु भी प्रारब्ध है। पारमार्थिक उन्नति के लिए तथा जीवन-मृत्यु के बन्धन से मुक्त होकर परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के लिए किया जाने वाला प्रयास व संसार बन्धनों से विरक्त होकर मोक्ष को प्राप्त कर लेना पुरुषार्थ है। तात्पर्य यह है कि जीवात्मा और परमात्मा की एकता के लिए परमार्थ पथ पर पुरुषार्थ प्रधान है तथा सांसारिक प्राप्ति के लिये प्राग्ब्ध की प्रधानता है।

प्रारब्ध और पुरुषार्थ के विषय में थोड़ा सा गहराई से कुछ विचार करें तो प्रत्येक जीव का कहीं न कहीं कोई अस्तित्व अवश्य रहा है। अगर जीव का कोई अस्तित्व नहीं होता तो जीव संज्ञा का होना भी असम्भव था। जीवात्मा को परमात्मा का ही अंश माना जाता है ''ममैवांशो जीवलोके जीव भूत: सनातन:'' अत: जीवात्मा भी परमात्मा का अंश होने के कारण परमात्मा की तरह ही अनादि और अविनाशी है। शरीर की रचना संसार में हुई है, संसार, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पांचतत्वों से बना है इसलिए यह पंचभौतिक शरीर भी नाशवान है। जबकि जीवात्मा इन पांचों तत्वों से परे अविनाशी है। शरीर के साथ संसार का संयोग होने के कारण जो अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति हमारे सामने आती है वह केवल सांसारिक विकार है, इन विकारों को मानकर हम अपने बदलते हुए व्यक्तव्य को प्रकट करते हैं, यह हमारी भूल है।

जीवन मुक्त महात्माओं व महापुरुषों के संसर्ग और सत्संग से यह स्पष्टीकरण मिलता है कि मनुष्य शरीर में दो बातें प्रमुख हैं-पुराने कर्मों का फलभोग तथा नया पुरुषार्थ। दूसरी योनि में केवल पुराने कर्मों का फलभोग ही है। कीट-पतंग, पशु-पक्षी की योनियां भी भोग योनियां हैं। इसलिये उनके लिये 'ऐसा करो और ऐसा मत करो'-यह विधान नहीं है। पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि जो कुछ भी कर्म करते हैं, उनका वह कर्म भी कर्मभोग में है। कारण कि उनके द्वारा किया जाने वाला कर्म उनके प्रारब्ध के अनुसार पहले से ही तय होता है। उनके जीवन में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति का जो कुछ भोग होता है, वह भोग भी फलभोग ही होता है। परन्तु मनुष्य शरीर तो केवल नये पुरुषार्थ के लिये ही मिला है, जिससे जीवात्मा सांसारिक चक्रव्यूह से अपना उद्धार कर ले। इस मनुष्य शरीर के लिये दो विशेष अधिकार हैं-एक तो इसके सामने पुराने कर्मों के फलरूप में अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति आती है उनका फलभोग करना और दूसरा यह नया पुरुषार्थ (नये कर्म) करता है। नये कर्मों के अनुसार ही इसके भविष्य का निर्माण होता है। इसलिये शास्त्र, सन्त-महापुरुषों का विधि-निषेध, राज्य आदि का शासन केवल मनुष्यों के लिये ही होता है, क्योंकि मनुष्य के लिये पुरुषार्थ की प्रधानता है, नये कर्मों को करने की स्वतंत्रता है। परन्तु पिछले कर्मों के फलस्वरूप मिलने वाली अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों को बदलने में यह परतन्त्र है। जबकि अन्य योनियों में केवल भोग योनि होने के कारण उनके लिये प्रारब्ध की प्रधानता रहती है।

(हेमन्त कुंज बी-२२, तिलक नगर, जयपुर रोड, बीकानेर)

जनज्ञान के सदस्यों से

जनज्ञान का वार्षिक शुल्क समाप्ति का पत्र मिलते ही शीघ्र वार्षिक शुल्क एक सौ रुपये भेजने का यत्न करें तथा पत्र के साथ संलग्न कार्ड पर उत्तर भी दें।

डाक व्यय बढ़ जाने से वार्षिक शुल्क की वी.पी. भेजने में अब २५ रुपये लगते हैं। अत: मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट अथवा केवल दिल्ली के चैक द्वारा ''जनज्ञान'' के नाम शुल्क भेजें। **दिल्ली से बाहर के चैक पर बैंक चार्ज लगभग ४० रुपये व्यर्थ पड़ जाता है।**

पत्र व्यवहार में अपना सदस्य नं. ...... अवश्य लिखें तथा कार्ड पर उत्तर भी अवश्य ही देने की कृपा करें। हमारे यहां से भेजे पत्रों में सदस्य नं.... आपके पते के साथ लिखा होता है। धन्यवाद

-सम्पादक

इमं जीवेभ्यः परिधिं दधामि

❒ डॉ. ज्ञानचन्द्र

इमं जीवेभ्य: परिधिं दधामि मैषां नु गादपरो अर्थमेतम्
शतं जीवन्तु शरद: पुरुची: अन्तर्मृत्युं दघतां पर्वतेन।।
ऋ. १०/१८/४

भावार्थ : ''जीवित की जीवनी शक्ति की रचार्थ इस प्रस्तर की स्थापना करता हूं।''

''जीवधारी मानव मृत्यु दिशा में न जावे।''

''सैकड़ों वर्ष ये जीवित रहें, अतएव पर्वत खण्ड से मैं मृत्यु को दूर करता हूं।'' (अर्थाधार-सातवलेकर)

पारमात्मिक चैतन्य बीज कण से सृष्टि प्रारम्भ हुई। विश्व-रूप सृष्टि का कणमात्र है। हमारी प्रिय जन्मद माता यह पृथ्वी देवी यह विश्व का कणमात्र है। इस पृथ्वी की उर्वर वनस्पति, स्वरसों एवं धरा-महतारी के अज्ञेय चैतन्य कण के मेल से हमारे देह, प्राण, मन तथा चेतना संयुक्त हुए हैं। यही मानव का संक्षिप्त स्वरूप है। इस पर विस्तृत विश्लेषण करने पर ही सृष्टि के चरम रहस्यों का बोध प्राप्त होता है।

परमात्मा या मौलिक चैतन्य तत्व ढकता, उघड़ता तथा व्यापक होता है किन्तु वह न नष्ट हो सकता है और न विपरीत। पदार्थ भी पारमात्मिक तत्व का, प्रकृति के आधान व आच्छादन से निर्मित विकारी तत्व है। अत: चेतना और पदार्थ दोनों अमर, अविनाशी तथा अक्षयी हैं। परिवर्तित होते हैं तो इनके स्वरूप, स्तर तथा इनकी सघनता और सम्मिलन-सम्मिश्रण। इस स्वरूप, स्तर, सम्मिश्रण की एक स्थिति ही मृत्यु कही जाती है। परन्तु अविनाशी परमात्मा व अविनाशी प्रकृति के द्वारा अभिव्यक्त जीव भी अक्षय-अविनाशी ही है।

वैदिक ऋषि का मानना है कि पदार्थ भी अमर है। अत: एक विशिष्ट व्यवस्था और सम्मिलन की साधना के द्वारा प्रकृति का इस प्रकार संयोजन एवं तत्वों का समायोजन किया जा सकता है कि देह भी चैतन्य की तरह इच्छा-परिवर्तनशील और अमर-अमृत्यु हो सके। इस प्रकार की दैहिक अमरता व भौतिक अमृत्यु के मन्त्र वेद में अनेकों हैं। परन्तु श्रमण एवं नास्तिक प्रभावों के कारण तथा वैदिक तंत्र विज्ञान के अज्ञाता व अनाभ्यास जन बुद्धि विलास के द्वारा तथा व्याकरणीय शब्द-चर्वण के आधार पर अत्यन्त रहस्यगर्भित मंत्रों के विकृत व अज्ञानपूर्ण अर्थ करते हैं।

वेद का टीकाकार कितना भी महान, प्रतिष्ठित एवं बहुजन पूज्य हो, किन्तु वेदार्थ में सुधार, परिष्कार, विकास व नवीनार्थों की गुंजाइश सदैव ही रहती है और रहेगी। हम जो अर्थ प्रस्तुत कर रहे हैं, उसमें भी नवीनार्थ, नव्य मन्तव्य तथा विभिन्न विश्लेषणों की संभावना है ही। **हम तो योगशास्त्र, मूल वैदिक मंतव्य तथा सीधी सादी सहज बुद्धि के आधार पर मंत्रार्थ प्रस्तुत कर रहे है। ताकि वैदिक मन्तव्य के प्रति स्पष्ट जागरुकता पैदा हो।** ''मृर्त्योर्मा अमृतं गमय'' कोई श्लोक या यमक आदि अलंकार नहीं है। न कोई अतिवादी या व्याज से प्रस्तुत रहस्यमयी प्रस्तुति है। इसी दैहिक स्वरूपाकार को पूरी तरह संगठित व समर्पित बनाकर पहले इच्छित मृत्यु तथा धीरे-धीरे अजरामर बनाने की बात कही गई है। यदि भौतिक देह अजर अमर नहीं होती तो सृष्टि प्रयोग एक भयावह दुर्घटना या एक क्रूर आसुरिक अभिव्यंजना मात्र ही सिद्ध होगी। हम मानवगण चैतन्य विकास का एक पड़ाव मात्र हैं। मात्र एक पड़ाव, जिसके आगे दिशाएं और मंजिलें और भी हैं। आगे आने वाली मंजिल है-

मैं अजर अमर हूं अक्षय अविनाशी।
लोकों का यात्री चिरकाल प्रवासी।।

आधुनिक विज्ञान भी इस दृष्टि से शरीर की सम्भावित दीर्घजीविता व अमरता में आशावादी है। विज्ञान मृत्यु को भी एक रोग व व्याधि तथा अपूर्णता मानता है जिसका उपचार व निराकरण वह अपने ढंग से ढूंढ़ ही रहा है। परन्तु जहां विज्ञान की मान्यताएं व प्रणालियां अत्यन्त सतही तथा पूरी तरह पदार्थाश्रित, हव्य-पोषित हैं वहां योग व अध्यात्म की मान्यताएं चैतन्याश्रित तथा चिदग्नि-पोषित हैं। चैतन्य-बीज का संकल्प ही जीवन मृत्यु का कारण है। चैतन्य बीज का एक विशिष्ट विकास निश्चित रूप से क्षरण व मृत्यु की प्रत्यक्ष अनुभूत परिस्थिति को पार कर जाएगा। जीवन का एकमात्र कर्तव्य ही है तम, जोकि मृत्यु है उससे मुक्ति, असत जो कि भ्रांति है उससे मुक्ति तथा मृत्यु जो कि तम भी है, असत भी है, उससे मुक्ति का सतत, सबल व संकल्पित-समर्पित प्रयास। इसी का नाम साधना है।

प्रदत्त मंत्रार्थ की व्याख्या

पुरातनकालीन वैदिक भारत में प्रस्तर पर ध्यान व एकाग्रता तथा चैतन्य बीज को सुदृढ़ परामर्श-सुझाव की ऐसी पद्धति थी जिसके द्वारा श्रेष्ठ अभ्यासक व उत्तम

साधक अपना दैहिक ज्वर या अन्य रोग पत्थर पर स्थानान्तरिक कर सकता था। इस प्रकार की प्रक्रिया के प्रसंग पुराणों में अनेक प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार इसी साधना पद्धति को आगे बढ़ाकर मृत्यु के निराकरण की भी सम्भावना को स्वीकार किया गया है। प्रस्तर ध्यान, पाषाण पर एकाग्रता तथा पर्वतखण्ड की गुह्य चेतना से सम्पर्क-ये योग शास्त्र कथित विशिष्ट साधनाएं हैं। वेद की उद्घोषणा है कि अग्नि अर्थात् चैतन्य से ही संसार उत्पन्न होता है, अग्नि तथा ताप के कारण ही जीवित रहता है तथा अग्नि में ही वह विलीन हो जाता है। ऊपर से जड़ दिखाई देने वाले प्रस्तर में भी चेतना है। किन्तु उस अत्यन्त सूक्ष्म चैतन्य तत्व को पहचान पाना तथा पहचानकर उससे सम्पर्क कर पाना एक गहरी व अतीव श्रमसाध्य योग विद्या है। इस योग विद्या को जानने वाला स्वयं को प्रस्तर ध्यान द्वारा रोगमुक्त कर सकता है तथा कालान्तर में साधना के चूडान्त पर पहुंचकर अमृत्यु के प्राय: असंभव लक्ष्य को भी प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तर साधना के अनेक रूप, अनेक विद्याएं तथा अनेक प्रणालियां हैं। भिन्न-भिन्न प्रस्तर खण्डों के भी अपने भिन्न-भिन्न प्रयोग होते हैं। कई साधनाओं के लिए काले पत्थर, किसी के लिए लाल तथा किसी के लिए सामान्य प्रस्तरों का प्रयोग किया जाता है। साधना की श्रेष्ठतम प्रक्रियाओं के लिए स्फटिक प्रस्तर, बिल्लौर को प्रमुख माना जाता है। आज के समय की मूर्तिपूजा, प्रस्तराधना, प्राचीनकाल की पाषाण साधन की ही युगभेद से विकृत और जड़ीभूत अज्ञान-साधना है। वेद-ज्ञान समाप्त हो गया। पुन: विकृत रूप में सामने आने लगा और अज्ञान्धों ने तरह-तरह की परम्पराएं अपने बौद्धिक तंत्र और वैदिक योग के गहन तत्व को न जानते हुए कल्पित कर लीं। प्रस्तराधना का अभ्यास भी उतना ही मूढ़तापूर्ण है जितना अज्ञान या अल्पज्ञान के आधार पर पाषाण-पूजा का अंध-विरोध। वैदिक मन्तव्यों की गहनता में उतरना कोई शिशु क्रीड़ा नहीं है। ज्ञानवान् महर्षियों, दृढ़ाभ्यासक योगवेत्ताओं-अभ्यासकों के सान्निध्य और उनकी कृपा से ही यह रहस्य जाना जा सकता है।

अतएव मंत्र में वैदिक महर्षि जीवनी शक्ति, प्राण चेतना को प्रस्तर में संग्रहीत करने एवं प्रस्तर की परिधि में सुरक्षित रखने की बात कह रहा है। मृत्यु से संरक्षण एवं सैकड़ों वर्ष जीने के लिए पाषाण की प्रस्थापना की बात की ओर संकेत कर रहा है।

वेद चेतना विज्ञान है। वेद में जड़ तत्व का प्रसंग नहीं है। जहां ऐसा लगता भी है वहां उसके गूढ़ार्थ भिन्न हैं। **वेद अपौरुषेय ग्रंथ हैं। वेद का कर्ता परम चैतन्य है।**' परम चैतन्य का न तो जड़ता से कोई परिचय है, न रोग व्याधि से। मृत्यु से तो उसके परिचय का प्रश्न ही नहीं है। जहां सूर्य है वहां अंधकार एक असम्भावना है, जहां परमचैतन्य है वहां निश्चेतना और मृत्यु असम्भावित हैं। अब हमें जो दिखाई देता है वह मानवीय विकास की अपूर्णता है तथा मानवीय मन-मस्तिष्क की विभ्रांति।

एक दिन तो इस अपूर्णता को पूर्ण होना ही होगा तथा मन-मसितष्क भी अपनी विभ्रांति से मुक्त होकर प्रज्ञान मय विज्ञान तत्व में विनष्ट होंगे ही। यही इस प्रत्यक्ष सृष्टि का अप्रत्यक्ष रहस्य है।

-अरविन्द चेतना समाज, दिल्ली

'मौन' का माहात्म्य

❐ ब्र. प्रशान्त आर्य

वाचनिक मौन धारण करना, मुनि बनने का उपाय है।
चिंतन, मनन का अवसर देता, साधना में सहाय है।
शांत, गंभीर व मौन रहना, वैराग्य प्राप्ति में सहायक है।
हास-परिहास, व्यंग्य करना, योगाभ्यास में बाधक है।
अप्रासंगिक अनावश्यक वाणी, गंभीरता नष्ट कराती है।
मन में चंचलता बढ़ाती, अध्यात्म पथ से गिराती है।
योगनिष्ठ साधक बनकर, 'मौनव्रत' का निर्धारण करें।
योगमार्ग में प्रविष्ट हो, काम-क्रोध का निवारण करें।
ईश्वर के ध्यान में एकाग्रचित होना, यही सच्चा योग है।
यम नियम का पालन करना, योग में देता सहयोग है।
यथासम्भव मौन रहना, योगानुष्ठान में अति उपयोगी है।
सुसंस्कारों को जागृत करता "विवेक" प्राप्ति में सहयोगी है।
वाचनिक मौन का पालन करते, मन से भी सदा शांत हो।
ईश्वर भक्ति में निमग्न हो चित्त, प्रसन्न और प्रशांत हो।

-दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़, सागपुर,
साबरकांठा (गुज.)

जन-जन की भाषा है हिन्दी, भारत माता के मस्तक की बिन्दी

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। हिन्दी का प्रचार प्रसार करना हम सभी का दायित्व है। अत: आप अपने सभी लेखन कार्य, पत्र तथा निमन्त्रण पत्र, अपने हस्ताक्षर आदि देवनागरी लिपि में ही लिखने का निर्णय करें। -संपादक

फांसी की कोठरी से

ब्रह्मचर्य के साधन

(काकोरी केस के प्रसिद्ध क्रांतिकारी नेता श्री पं. रामप्रसाद बिस्मिल)

१. मानसिक भावों को शुद्ध रखते हुए अन्तःकरण को उच्च विचारों में बलपूर्वक संलग्न करने का अभ्यास करने से अवश्य सफलता होगी।

२. प्रत्येक विद्यार्थी या नवयुवक को जो कि ब्रह्मचर्यव्रत के पालन की इच्छा रखता है उचित है कि वह अपनी दिनचर्या अवश्य निश्चित करे।

३. खानपानादि का विशेष ध्यान रखें।

४. महात्माओं के चरित्र तथा चरित्र संगठन सम्बन्धी पुस्तकों का अवलोकन करें।

५. प्रेमालाप तथा उपन्यासों में समय नष्ट न करे।

६. खाली समय अकेला न बैठे।

७. जिस समय कोई बुरे विचार उत्पन्न हों तुरन्त शीतल जल पान कर घूमने लगे या किसी अपने से बड़े के पास जाकर बातचीत करने लगे।

८. अश्लील (इश्कभरी) गजलें, शेर तथा गानों को न पढ़े और न सुने।

९. स्त्रियों के दर्शन से बचता रहे। माता तथा बहिन से भी एकान्त में न मिले।

१०. सुन्दर सहपाठियों या अन्य विद्यार्थियों से स्पर्श तथा आलिंगन की भी आदत न डाले.....।

११. स्नान करने के पश्चात् एक खुरखुरे तौलिया-अंगोछा से खूब शरीर मले।

१२. उपासना के पश्चात् थोड़ा-सा जलपान करे। कोई फल शुष्क मेवा दुग्ध अथवा सबसे उत्तम यह है कि गेहूं या दलिया रंधवा कर यथा रुचि मीठा या नमक डालकर खावे।

१३. फिर अध्ययन करे और दस बजे से ग्यारह बजे के मध्य में भोजन कर लेवे।

१४. भाजनों में मांस, मछली, चटपटे, खट्टे, गरिष्ठ, आदि पदार्थों का त्याग करे। प्याज, लहसुन, लालमिर्च, आम की खटाई और अधिक मसालेदार भोजन कभी न करे। सात्विक भोजन करे, शुष्क भोजन का भी त्याग करे। जहां तक हो सके सब्जी अर्थात साग अधिक खावे। भोजन खूब चबाकर करे। अधिक गरम या अधिक भोजन भी वर्जित है।

१५. स्कूल अथवा कालेज से आकर थोड़ा सा आराम कर के एक घण्टा लिखने का काम करके खेलने के लिये जाये। मैदान में थोड़ा सा घूमे भी।

१६. घूमने के लिए चौक बाजार की गन्दी हवा में जाना ठीक नहीं, स्वच्छ वायु का सेवन करे।

१७. संध्या समय भी शौच अवश्य जावे।

१८. थोड़ा-सा ध्यान करके हल्का सा भोजन कर ले। यदि हो सके तो रात्रि के समय केवल दुग्ध पीने का अभ्यास डाले या फल खा लिया करे। स्वप्न दोषादि व्याधियां केवल पेट के भारी होने से ही होती हैं। जिस दिन भोजन नहीं पचता उस दिन विकार हो जाता है, या मानसिक भावनाओं की अशुद्धता से निद्रा ठीक न आकर स्वप्नावस्था में वीर्यपात हो जाता है।

१९. रात्रि के समय १०.३० बजे तक पठन-पाठन करके पुनः सो जावे।

२०. सोना सदैव खुली हवा में चाहिये।

२१. बहुत मुलायम चिकने बिस्तर पर न सोवे।

२२. प्रातःकाल ३.३० या ४ बजे उठकर कुल्ला करके शीतल जलपान करे और शौच से निवृत्त हो पठन-पाठन करे। सूर्योदय के निकट फिर नित्य की भांति व्यायाम या भ्रमण करे।

२४. सब व्यायामों में दण्ड बैठक सर्वोत्तम है। जहां जी चाहा व्यायाम कर लिया। यदि हो सके तो प्रोफेसर राममूर्ति की विधि से (दण्ड-एक पुट हाथ चौड़े, एड़ी जमीन पर, पैर यथासम्भव लम्बे करके लगा देना चाहिये ओर सांस भर करके शनैःशनैः नीचे छाती तथा घुटने को जावे और सीना शेरवत् निकाल कर फिर वापस ऊपर उठे। यह एक बार सांस भरकर ही करना चाहिये-(ऐसा सुना है) दण्ड तथा बैठक सदैव करे। प्रोफेसर साहब की रीति विद्यार्थियों के लिए बड़ी लाभदायक है। थोड़े समय में ही पर्याप्त परिश्रम हो जाता है।

२४. अपने कमरे में वीरों और महात्माओं के चित्र रखना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नवीन पृष्ठ खोल दिया मैंने उसमें उल्लिखित ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करना आरम्भ कर दिया।

मैं एक कम्बल को तख्त पर बिछाकर सोता और प्रातःकाल चार बजे से ही शय्या त्याग कर देता। स्नान संध्यादि से निवृत्त हो व्यायाम करता, किन्तु मन की वृत्तियां ठीक न होतीं। मैंने रात्रि के समय भोजन करना त्याग दिया। केवल थोड़ा-सा दूध ही रात को पीने लगा। सहसा ही बुरी आदतों को छोड़ा था, इस कारण कभी कभी स्वप्नदोष हो जाता। तब किसी सज्जन के कहने से मैंने नमक खाना भी छोड़ दिया। केवल उबालकर साग या दाल से एक समय भोजन करता। मिर्च खटाई तो छूता भी न था। इस प्रकार पांच वर्ष तक बराबर नमक के न खाने से शरीर के सब दोष दूर हो गये और मेरा स्वास्थ्य-दर्शनीय हो गया। सब लोग मेरे स्वास्थ्य को आश्चर्य की दृष्टि से देखा करते।

०-०-०

चार नवम्बर जिनकी जन्मतिथि है

भाई परमानन्द : क्रान्तिधर्मी और श्रेष्ठ आर्य मिशनरी

❒ **गौरीशंकर कौशल**

सन् १८७५ में बम्बई में युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्यसमाज की स्थापना की। लगभग इन्हीं दिनों वेद प्रचार एवं वेद रक्षा हेतु बीजारोपण किया गया। ठीक उन्हीं दिनों पंजाब के करियाला कस्बे में भाई ताराचंद जी के यहां जगत प्रसिद्ध शहीद शिरोमणि भाई मतिदास जी के वंशमें हमारे नायक देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी का सारस्वतकुल में जन्म हुआ। माता का साया बाल्यकाल में ही सर से उठ गया। पिताजी ने माता और पिता दोनों का दायित्व निभाया तथा मां के वात्सल्य, ममता और करुणा से अधिक वात्सल्य ममता और करुणा दी।

प्रारम्भिक शिक्षा गांव में, मिडल स्कूल शिक्षा चकवाल में फिर लाहौर में आकर डीएवी स्कूल में दाखिल हुए। यहीं आपने पाणिनीय अष्टाध्यायी पढ़ी तथा आर्य हाईस्कूल एवटाबाद में प्रधानाचार्य बने। **१९०३** में आपने एम.ए. किया और डीएवी कॉलेज में इतिहास और अर्थशास्त्र के विभागाध्यक्ष बने। आपने केवल ७५ रुपये प्रतिमाह का पारिश्रमिक लिया। डीएवी कॉलेज कमैटी ने आपकी सेवा से प्रभावित होकर आपको कॉलेज कमेटी का आजीवन सदस्य बनाया।

डीएवी आन्दोलन के संस्थापक महात्मा हंसराज ने एक बार कहा था कि आर्यसमाज की सेवा के लिये भाई जी में अपूर्व अनुराग और असीम स्वार्थ त्याग की भावना है। उन्होंने एक पल के लिये भी सांसारिक भोग विलास का विचार नहीं किया। उनके दिल में सतत एक ही अभिलाषा काम करती थी कि कैसे करके डीएवी कॉलेज तथा आर्य जाति की सेवाकर सकूं। वे डीएवी कॉलेज कमेटी के आजीवन सदस्य थे और अन्य नामित बनने वाले सदस्यों में अपनी कार्य दक्षता और स्वभाव से शक्ति का संचार करते थे।

सन् **१९०६** में पंजाब के आर्य भाइयों के आग्रह पर वे आर्य मिशनरी बनकर पूर्वी अफ्रीका पहुंचे और अपने मार्मिक, ओजस्वी, प्रभावी व्याख्यानों से जोहांसवर्ग, नोदानवी, मोंवासा आदि नगरों में क्रांतिकारी आर्य संस्कृति का प्रचार तथा वेद की ज्योति को हर मानव के मन में प्रकाशित करने का कार्य किया। दिग्विजय यात्रा पर निकला, दयानन्द का यह तेजस्वी शिष्य नाटाल के "फिनिक्स" शहर में पहुंचे, तो वहां उन्हें लेने के लिये सूट-पेंट पहने एक दुबले-पतले गुजराती बेरिस्टर आये हुये थे। उस गुजराती बैरिस्टर ने इस आर्य मिशनरी का बिस्तर, अपने कन्धे पर उठाया और अपने घर पर रखकर उनसे आसपास के क्षेत्र में प्रचार करवाया तथा दिल खोलकर उनकी सेवा सुश्रूषा की। आर्य मिशनरी के त्याग का भाईजी पर बहुत प्रभाव पड़ा। भौतिकवाद के चक्कर में पड़े हुये उस बैरिस्टर ने तब से अपना जीवन सादा बना लिया तथा ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करके देश तथा जाति की सेवा करने का संकल्प लिया। यह आर्य मिशनरी **हमारे लेखनायक, देवतास्वरूप भाई परमानन्द जी थे और बिस्तर उठाकर अपने घर ले जाने वाले ३६ वर्षीय युवा गुजराती बैरिस्टर मोहनदास कर्मचन्द गांधी थे, जो आगे चलकर "महात्मा गांधी" के नाम से प्रसिद्ध हुये।**

अमेरिका के महान तत्ववेत्ता थोरो से गाधी जी का सम्बन्ध कराने वाले भाई परमानन्द जी ही थे। अफ्रीका से जब भाई जी अमेरिका पहुंचे तब आपने थोरों की लिखी भद्र अवज्ञा पुस्तक लेकर गांधी जी को भेजी।

सन् १९०७ में भाई परमानन्द प्रचार करते हुए इंग्लैण्ड पहुंच गये। यहां आपकी मुलाकात महर्षि दयानन्द के प्रिय शिष्य क्रांतिकारियों के गुरु महान् क्रांतिकारी श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा से हुई। श्री वर्मा जी ने अपने धर्मबन्धु के रहने आदि की व्यवस्था अपने द्वारा स्थापित प्रसिद्ध इण्डिया हाऊस में की। वीर सावरकर जी भी वहां रहते थे। इंग्लैण्ड में रहते हुये भाई जी ने यहां साप्ताहिक सभाओं में भाषण देकर भारतीयों में जागृति पैदा की। वहां के किंग्स कालेज में भारतीयों की खोज भी करते रहे। इस खोज में जब आपने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के रिकार्ड का अभ्यास किया तब आपकी आंखें खुल गई। उन्होंने हिन्दुस्तान में अंग्रेजों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में चल रहे षड्यन्त्रों को डीएवी कालेज कमेटी के सामने रखा। परन्तु कमेटी ने उस समय भाई जी की इस बात की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया आपने यह बात लाला लाजपतराय जी से की। लालाजी पर आपकी बात का गहरा प्रभाव पड़ा। उसी दरमियान भाई जी ने १८५७ में स्वतंत्रता के लिये प्रथम प्रयास पर एक खोजपूर्ण थीसिस लिखी जिसमें अंग्रेजों द्वारा हिन्दुस्तान की प्रजा पर किये अत्याचारों का सप्रमाण वर्णन था। पक्षपाती अंग्रेजों ने भाई जी की थीसिस अस्वीकार कर दी।

स्वदेश में प्रचार कार्य

हिन्दुस्तान लौटने पर भाई जी ने भारत का इतिहास लिखा। इस ग्रंथ में अंग्रेज सरकार के काले कारनामे थे। सर्वसाधरण हिन्दुस्तानी प्रजा को उसका पता न लगे इसके लिये पुस्तक जप्त कर दी गई। पुस्तक की जप्ती पर पुस्तक का महत्व बढ़ गया। चारों ओर से पुस्तक की मांग होने लगी। अनेक क्रांतिकारियों ने इस पुस्तक को मंगवाकर पढ़ा और प्रेरणा प्राप्त की। लोगों ने भाई जी को अपने यहां बुलाकर सभाओं का आयोजन किया जिससे राष्ट्र में नई जागृति आई।

पुनः लन्दन में

उन्हीं दिनों लार्ड कर्जन ने बंगाल के टुकड़े कर दिये। जिससे बायकाट का आन्दोलन चल पड़ा। जर्मनी द्वारा एशिया पर विजय प्राप्ति के समाचारों ने भी हिन्दुस्तानियों में एक उत्साह पैदा किया। पंजाब के लायलपुर जिले में भूमिकर न देने का आन्दोलन भी इन्हीं दिनों शुरू किया गया। इस आन्दोलन के सूत्रधार आर्यसमाज के कर्मठ नेता लाला लाजपतराय तथा अमर शहीद भगतसिंह के चाचा श्री अजीतसिंह थे। ब्रिटिश हुकूमत इन आन्दोलनों से घबरा गई। सन् १८७५ के स्वतंत्रता संग्राम को १० मई १९०७ में ५० वर्ष पूरे हो रहे थे। अंग्रेजों को भय था कि कहीं सन् ५७ की क्रान्ति की पुनरावृत्ति न हो। इसलिये लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीतसिंह को गिरफ्तार करके माण्डले जेल भेज दिया गया। इस गिरफ्तारी ने आग में घी का काम किया। देश विदेश में उसके विरुद्ध सभाएं और जुलूसों का आयोजन किया गया। भाई जी उन दिनों लंदन में थे। वहां ब्रिटिश सरकार द्वारा लाला लाजपतराय तथा सरदार अजीतसिंह जो भाई जी के सहकार्यकर्ता तथा मित्र थे, की गिरफ्तारी के विरोध में सभा रखी गई। भाई जी ने इस सभा में अंग्रेजों द्वारा हिन्दुस्तानियों पर किये जा रहे अमानवीय अत्याचारों की सख्त शब्दों में निन्दा की। भाई जी के इस भाषण को लन्दन के पत्रों ने अच्छी प्रसिद्धि दी।

प्रथम गिरफ्तारी

लन्दन मे रहने वाले हिन्दुस्तानी नवजवानों में क्रान्तिकारी विचार भरकर भाई जी ऑक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज आदि स्थानों पर गये। वहां पर प्रचार करके सन् १९०८ में जब भाई जी स्वदेश लौटे तब अपने देशवासियों की बुरी हालत देखकर वे बहुत दुःखी हुये। आपने देश का प्रवास करके जनता को जागृत करने का निश्चय किया। आपके क्रांतिकारी भाषणों ने देश में नई क्रांति पैदा की। आपके भाषणों तथा गतिविधियों से अंग्रेजों को खतरा महसूस होने लगा। आपके पीछे गुप्तचर विभाग के व्यक्ति लगाये गये जो आपके भाषणों को नोट कर लिया करते थे और आपकी गतिविधियों पर कड़ी नजर रखते थे। अहमदाबाद, बम्बई, बैंगलौर होकर जब आप मद्रास जा रहे थे, तब लन्दन में रहकर आपने जो इतिहास सम्बन्धी निबन्ध लिखे थे, उनके गुम होने पर उन्हें बहुत बड़ा आघात लगा। अंग्रेजों ने प्रवास के दरमियान इस निबन्ध को चुरवाकर उसे नष्ट करवा दिया, क्योंकि वह प्रकाश में आने से अंग्रेजों के प्रति हिन्दुस्तानियों में घृणा और बगावत की भावना पैदा होती। भाईजी के पास उस निबन्ध की दूसरी प्रति नहीं थी जिसके कारण वह इतिहास जो बड़े परिश्रम से तैयार किया गया था, नष्ट हो गया। १० मार्च १९१० को भाई जी अपने गांव चले गये परन्तु तीन मास वहां रहकर लाहौर लौट आये। लाहौर आते ही आपको धारा ११० के आधीन गिरफ्तार कर लिया गया। मैजिस्ट्रेट ने आपको १५ हजार की जमानत पर छोड़ा जमानत पर छूटने पर आपने एक सभा में कहा--"इस देश में हर एक सार्वजनिक कार्यकर्ता के लिये जेल जाना न केवल लाभदायक है वरन् आवश्यक भी है भाई जी के कार्यों से अंग्रेज सरकार बौखला उठी। आखिर उन्हें देश से निष्कासित कर दिया गया।"

फ्रांस और अमरीका में

भाई जी के मन में विचार आया कि अमरीका जाकर औषधि विज्ञान का अध्ययन किया जाये परन्तु पास में इतना पैसा नहीं था, जिससे वे अमरीका जा सकते। जीवन भर आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं में और बाहर उसका प्रचार ही करते रहे। पैरों में साबुत जूते भी नहीं थे। जेब में देखा ६४ रुपये थे। वेद और गीता लेकर दयानन्द का यह फकीर पाताल देश अमरीका के प्रवास के लिये अपने निवास से चल दिया। फ्रांस तक यह क्रांतिकारी देशभक्त साधारण यात्री के रूप में गया। पैरिस, जो फ्रांस की राजधानी है, वहां आप क्रांतिवीर सरदार सिंह राणा से मिले। उन्हें पता लगा कि पैरिस के प्रसिद्ध मार्तीनीक टापू में देशभक्त लाला हरदयाल तपस्या कर रहे हैं समयाभाव के कारण आप उस समय लाला हरदयाल से न मिल सके परन्तु मौका पाकर भाई जी न्यूयार्क पहुंच गये। आपने वहां एक कॉलेज में अपना कार्य प्रारम्भ किया। साथ-साथ वहां रहने वाले भारतीयों में प्रचार करके उन्होंने क्रांति पैदा की। कुछ समय वहां रहकर भाई जी ने जार्ज टाऊन के लिये प्रस्थान किया। जिस जहाज 'पोर्ट दी फ्रांस' में आप सवार

थे वह मार्तीनीक में कुछ समय ठहरा। आपने मौका देखकर वहां लाला हरदयाल को ढूंढ़ने की तथा कोशिश की। पता लगने पर उनसे मिले। आपको देखकर लाला जी ने कहा तपस्या के बिना सिद्धि प्राप्त नहीं होगी। भाईजी ने लाला जी को समझाया कि 'जिस सिद्धि को आप चाहते हैं वह इस प्रकार एकांतवास में निष्क्रिय बैठे रहने से प्राप्त नहीं होगी। यह गलत मार्ग है। आपको क्षेत्र में आना चाहिये और लोगों में अपने विचारों का लेखन, प्रवचन से प्रभाव डालना चाहिये।'' भाई जी ने आपको सलाह दी कि अमरीका में स्वामी विवेकानन्द जी ने जो कार्य शुरू किया था वह निष्प्राण शिथिल हो रहा है। आपको वह कार्य अपने हाथों में ले लेना चाहिये। भाई जी की बातों का उन पर प्रभाव पड़ा। लाला हरदयाल पुन: क्रांतिकारी कार्यों में जुट गये। मार्तीनीक से भाई जी कैलफार्निया पहुंचे। वहां से वे होनोलूलू गये। उसके पश्चात् आपने सॉनफ्रांस्सिको में डेरा डाला और वहीं रहकर औषध विज्ञान का अध्ययन करने लगे। यहां भाई जी की आर्थिक स्थिति इतनी खराब थी कि मजदूरी करके अपना निर्वाह करते थे। भाई जी ने वहां से लाला हरदयाल को पत्र लिखकर कैलिफोर्निया बुलाया और हिन्दू दर्शन पर उनके व्याख्यान करवाये। अमेरिका के तत्ववेत्ताओं में आपके व्याख्यानों ने हलचल मचा दी। वहां आपका इतना प्रभाव पड़ा कि स्टैनफर्ड विश्वविद्यालय में आपकी हिन्दू दर्शन तथा संस्कृति पर प्राध्यापक पद पर नियुक्ति हो गई।

लाहौर में दवा घर की स्थापना

सन् १९१३ के अन्त में भाई परमानन्द ने औषध विज्ञान का कोर्स पूरा कर लिया। मनोविज्ञान का भी अच्छा अध्ययन करके डाक्टरेट की डिग्री प्राप्त करके स्वदेश लौटे। निष्कासन की सीमा समाप्त हो चुकी थी। लाहौर आकर दवाघर की स्थापना की। **लेकिन तत्कालीन ले. गवर्नर जनरल सर माइकल ओ'डायर की राय थी कि भाई जी दवाघर में बम्ब आदि बनाते हैं। क्रांतिकारी युवक जो डीएवी आदि कालेजों में पढ़ते थे उनमें जिनमें भगतसिंह, सुखदेव, यशपाल जयदेव कपूर, भगवतीचरण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वे भाई जी के पास आकर मार्गदर्शन लेते थे। भाई जी उनमें देश भक्ति के विचार भरते थे। समय-समय पर भाईजी अन्य शहरों में आर्यसमाज आदि संस्थाओं के उत्सवों पर जाकर सार्वजनिक सभाओं में विचार देकर देशवासियों को आग्रह करते थे कि वे अंग्रेजों के विरुद्ध उठ खड़े हों।**

दूसरी बार गिरफ्तार और फांसी की सजा

२२ फरवरी सन् १९१५ में लाहौर षड्यंत्र अभियोग में आपको गिरफ्तार कर लिया गया। दिल्ली में लार्ड हार्डिंग पर बम फेंकने के काण्ड को भी आपके साथ सम्बन्धित बताया गया। अंग्रेज सरकार की यह धारणा थी कि भाई परमानन्द और लाला हरदयाल को यह पता था कि जर्मनी और इंग्लैण्ड में युद्ध होगा। इसी आधार पर दोनों ने षड्यंत्र रचा। अमरीका स्थित ब्रिटिश राजदूत ने अपनी सरकार को लिखा कि सेंटजान्ह सम्मेलन में यह निश्चित किया गया कि अमेरिका में गदर आन्दोलन लाला हरदयाल चलाएं और हिन्दुस्तान में भाई परमानन्द।

भाई जी तथा उनके साथियों के लिये नया कानून बनाकर एक ट्रिव्यूनल खड़ा किया गया जिसमें दो अंग्रेज तथा एक भारतीय था। कुछ लोगों को कालेपानी की सजा सुनाई गई और कुछ को मृत्युदण्ड। ता. ३१ सितम्बर १९१५ को भाई परमानन्द को भी फांसी की सजा सुनाई गई। ट्रिव्यूनल में भारतीय न्यायाधीश ने भाई जी को आजन्म कारावास के पक्ष में मत दिया। शेर को पिंजड़े में बन्द किया गया। बन्दीगृह काल में जेल के अन्दर आपके साथ एक घटना घटी। वह घटना भाई जी के शब्दों में हम यहां दे रहे हैं--कई दिन तक हवालात की इस अन्धेरी कोठरी में बीत गये। अचानक एक दिन मुझे एक सिक्ख पुलिस अधिकारी मिलने आया व कहने लगा भाई साहब आप व्यर्थ ही कष्ट में पड़े हुए हैं। क्यो नहीं सब हाल बता देते? मैंने जवाब दिया आज पहली बार मुझसे यह जिक्र किया गया है। आप किसका हाल मुझसे मालूम करना चाहते हैं? वह कहने लगा देर हुई लुधियाना में एक व्यक्ति ने तुम्हारे बारे में सब कुछ बता रखा है कि तुम बड़े लीडर हो। तुमने देखा होगा करतारसिंह भी पकड़ा गया है।

अब मुझे वह सिक्ख अधिकारी कहने लगा कि एक बार जाल में कोई गीदड़ पकड़ा गया। गीदड़ बड़ा चालाक जानवर होता है। उसने पकड़ने वाले से कहा कि अगर तुम मेरी एक बात नहीं सुनोगे तो प्रलय आ जायेगी। उसने कहा बताओ वह क्या बात है। गीदड़ ने चिल्लाकर कहा उस वक्त बतलाऊंगा जब मुझे छोड़कर तुम दूर खड़े हो जाओगे। अन्त में कुछ हिचकिचाहट के बाद वह मान गया। गीदड़ थोड़ी दूर गया और **'आप मरे जग परलों'** कहता हुआ भाग गया। किसी तरह भी हो जान बचा लेना जरूरी होता है। इस पर भाई जी ने जवाब दिया अफसोस

कि मैं गीदड़ नहीं हूं।

रामप्रसाद बिस्मिल की प्रेरणा

बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में लिखा है--"सन् १९१५ में लाहौर षड्यंत्र का मामला चला। मैं समाचार पत्रों में उसका वृतान्त बड़े चाव से पढ़ा करता था। श्रीयुत भाई परमानन्द जी में मेरी बड़ी श्रद्धा थी, क्योंकि उनकी लिखी हुई तवरीखें हिन्द पढ़कर मेरे हृदय पर बड़ा प्रभाव पड़ा था। लाहौर षड्यन्त्र का फैसला अखबारों में छपा। भाई परमानन्द जी को फांसी की सजा पढ़कर मेरे शरीर में आग लग गई। मैंने विचारा कि अंग्रेज बड़े अत्याचारी हैं। इनके राज्य में न्याय नहीं जो इतने बड़े महानुभाव को फांसी की सजा का हुक्म दे दिया। मैंने प्रतिज्ञा की कि इसका बदला अवश्य लूंगा। जीवन भर अंग्रेजी राज्य को विध्वंस करने का प्रयत्न करता रहूंगा।"

जेल यातनाएं तथा मुक्ति

७ दिसम्बर को भाई जी को फांसी होने वाली थी, परन्तु श्री सी.एफ. एन्ड्रयूज तथा महामना मदनमोहन मालवीय जी के प्रयासों से लार्ड हार्डिंग ने फांसी की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया। आजीवन कारावास के कैदियों को अण्डमान की काल कोठरी में भेजा जाता था। कोल्हू के बैल के स्थान पर उनसे काम लिया जाता था। नारियल की रस्सियां आप से बटवाई गईं। जेल में आप पर लोमहर्षिक अत्याचार हुए। कोड़ों की मार, अध पेट भोजन आदि सारे भयानक कष्ट उन्होंने झेले पर झुके नहीं। कालान्तर में श्री सी.एफ. एण्ड्रयूज तथा श्री मालवीय जी के प्रयासों से आपको जनता की सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य से सन् १९१९ में मुक्त किया गया।

कौमी विद्या पीठ की स्थापना

जेल से मुक्ति के पश्चात् भाई जी ने लाहौर में लाला लाजपतराय आदि नेताओं के सहयोग से पंजाबी कौमी विद्यापीठ तथा राष्ट्रीय शिक्षा समिति की स्थापना की जिसके आप अवैतनिक कुलपति तथा प्राध्यापक रहे। लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित सर्वेन्ट्स आफ दी पीपल सोसाइटी के आप वर्षों तक डायरेक्टर रहे। देश के गणमान्य कांग्रेसी नेता आपसे समय-समय पर मार्गदर्शन लेते थे।

हिन्दू महासभा की स्थापना

सन् १९१६ से १९२२ के दरमियान मुसलमानों की जो साम्प्रदायिक गतिविधियां हुईं उसे भाई जी ने हिन्दुस्तान के लिये खतरनाक समझा। उन्होंने कांग्रेसी नेताओं को मुसलमानों की साम्प्रदायिक दृष्टि से सावधान रहने की चेतावनी दी। खिलाफत आन्दोलन में अली बन्धुओं ने खुलकर उनका उपयोग किया। फिर भी अन्त में गांधी जी को गालियां ही दीं। यहां तक कह दिया गया कि गांधी जी से पतित से पतित मुसलमान हमारे लिये अधिक आदर के योग्य हैं।" भाई जी को गांधी जी की यह अजीब पंगु घुटने टेक नीति अच्छी न लगी। गांधी जी के बर्ताव से भाई जी बहुत दु:खी हुये। समझाने पर भी जब गांधी जी न समझे तब मजबूर होकर भाई जी ने कांग्रेस छोड़ दी। लाला लाजपतराय तथा महामना मदनमोहन मालवीय जी भी कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति से तंग आ गये। उन्होंने भी कांग्रेस को अन्तिम सलाम किया। इन तीनों ने मिलकर सन् १९२२ में हिन्दू महासभा की स्थापना की। दिल्ली के हिन्दुस्तान टाइम्स और हिन्दुस्तान (हिन्दी) के स्थापना में भी इनका भारी योगदान रहा।

हिन्दू सभा भवन की स्थापना

सन् १९३३ में 'काम्यूनल एवार्ड' की सहायता से प्राइम मिनिस्टर राम्से मेकडोनाल्ड ने मुसलमानों की शक्ति को सर्वत्र बढ़ा दिया था। भाई जी ने प्रमाण और दलीलें देकर उसका सख्त विरोध किया। आपने इस सम्बन्ध में गांधी जी को भी समझाया परन्तु गांधी जी हिन्दू मुस्लिम एकता के मृगजाल में फंस चुके थे।

देश के बंटवारे का विरोध

भाई जी दूरदर्शी और महान भविष्यवेत्ता थे। आपने कांग्रेस की नीतियों का सख्त विरोध किया। उन्होंने कहा यदि कांग्रेस के बताए गये मार्ग पर देश की जनता चली तो देश के टुकड़े हो जायेंगे और उन्होंने देश की जनता को ललकार कर कहा कांग्रेस मुहम्मद अली जिन्ना से मिलकर देश का बंटवारा करना चाहती है।

मृत्यु तथा उसका कारण

पाकिस्तान बनने से पूर्व ही अगस्त के प्रथम सप्ताह में. आप अपनी अटैची में दो जोड़ी कपड़े लेकर लाहौर से हरिद्वार के लिये चल पड़े। कुछ दिन वहां रहकर आप देहरादून चले गये, जहां वे बीमार पड़ गये। देहरादून से आपको जालन्धर ले जाया गया। देश के बंटवारे से उत्पन्न स्थिति ने आपकी हालत खराब कर दी। खाना पीना जहर सा लगने लगा। कुछ दिन तो आपने खाना पीना भी त्याग दिया। ८ दिसम्बर १९४७ को देशवासियों को पता लगा कि उनका एक महान् मनीषी नेता देवतास्वरूप भाई परमानन्द इस दुनिया से सदा के लिये उठ गया है।

-पूर्व विधायक, दुर्गा चौक, तलैया, भोपाल

१७ नवम्बर जिनका बलिदान दिवस है

पंजाब केसरी ला. लाजपतराय

❐ दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

लाला लाजपतराय का जन्म २८ फरवरी सन् १८६५ को अपनी ननिहाल जिला फीरोजपुर (पंजाब) के ठोड़ी ग्राम में हुआ। इनके पिता राधाकृष्ण लुधियाना (पंजाब) के जगरावां कस्बे में रहते थे। पिता सरकारी प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। लाजपतराय के तीन भाई और दो बहनें थीं। पिता का वेतन, कई वर्ष के बाद, ३५ रुपये मासिक तक पहुंचा था। पिता ने ऐसे स्कूल में शिक्षा पाई थी जिसका मुख्य अध्यापक एक मौलवी था। इसलिए राधाकृष्ण पर इस्लाम का गहरा प्रभाव था। वे घर में नमाज पढ़ते, रोजे रखते, तहमद बांधते और कुरान का पाठ करते थे। वैश्य और जैनी होने से मांस-भक्षण तो नहीं करते पर मुसलमानों को प्राय: अपने घर भोजन कराते और कभी उनके घर खा आते, अथवा उनका पका भोजन अपने घर ले आते। मास्टर राधाकृष्ण को धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का बड़ा शौक था। विश्वके सब मुख्य धर्मों की उन्हें अच्छी जानकारी थी। लालाजी ने १९११ में अपने पिता की स्मृति में जगरावां में राधाकृष्ण हाईस्कूल स्थापित किया और कई प्राइमरी स्कूल खोल दिये थे।

लाजपतराय कुशाग्रबुद्धि छात्र थे। 15 वर्ष की आयु में उन्होंने १८८० में पंजाब और कलकत्ता-दोनों विश्वविद्यालयों से मैट्रिक परीक्षा पास की। फिर लाहौर गवर्नमेंट कालेज में दाखिल हो गये। एफ.ए. की पढ़ाई के साथ कानून की पढ़ाई भी शुरू कर दी। पिता मुश्किल से आठ-दस रुपये मासिक इस किशोर को भेजते। लाजपतराय को अत्यन्त कम खर्च करते हुए लाहौर जैसे नगर में पढ़ना पड़ता था। मुख्तारी पास करके १८८३ में पहले जगरावां, फिर हिसार में और अन्त में १८९२ में लाहौर में वकालत आरम्भ कर दी। आप लाहौर आ गये और प्रांत के मूर्धन्य वकीलों में आपने शीघ्र ही स्थान पा लिया। साथ ही गुरुदत्त जी और हंसराज जी के साथ मिलकर खूब उत्साह से आर्यसमाज की सेवा करने लगे। १८८६ में महर्षि दयानन्द की स्मृति में लाहौर में डीएवी कालेज स्थापित हो चुका था। आपका इस संस्था के साथ अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया। लालाजी की वक्तृत्व कला में तो दैवी शक्ति थी। आपका भाषण मुर्दा-दिलों में भी जोश पैदा कर देता था। डीएवी कालेज के लिए अपनी इस अद्‌भुत वाक्शक्ति का प्रयोग कर इन्होंने लाखों रुपया पंजाब और अन्य प्रान्तों में दौरा कर इकट्ठा किया और स्वयं भी अपने पास से पुष्कल दान देते रहे। इस कालेज की प्रबन्ध समिति के आप वर्षों तक मंत्री और उपप्रधान भी रहे। लाहौर आर्यसमाज के उत्सव पर धर्म-प्रचार और कालेज के लिए अपील लालाजी ही किया करते थे। हजारों की संख्या में श्रोता मंत्रमुग्ध हो आपका भाषण सुनते थे। अपील के बाद अनायास ही धन की वर्षा आरम्भ हो जाती थी। लालाजी कई वर्ष तक डीएवी कालेज में, बिना वेतन के, इतिहास और राजनीति पढ़ाते रहे।

अकालग्रस्त क्षेत्रों में सेवा-कार्य

आर्यसमाज की शिक्षा के प्रभाव से लालाजी दरिद्रनारायण की सेवा के लिए सदा अग्रसर रहते थे। १८९६ में संयुक्त प्रदेश (उत्तर प्रदेश) के आगरा बुन्देलखंड इलाके में और १९०० में राजस्थान में भयंकर अकाल पड़ा। फिर १९०७-८ में उड़ीसा और मध्यप्रदेश में दुर्भिक्ष हुआ। हजारों हिन्दू विधर्मी होने लगे। ईसाइयों ने जनता की गरीबी से अनुचित लाभ उठाने के प्रयत्न शुरू कर दिये। लालाजी ने अपने सहयोगी आर्य सदस्यों और स्वयंसेवकों सहित सहायता और राहत का काम संगठित रूप से प्रारम्भ कर दिया। हजारों हिन्दुओं की रक्षा हुई।

तपेदिक के रोगियों के औषध-उपचार और खुले स्वच्छ वातावरण में रहते हुए भोजन-निवास आदि की समुचित व्यवस्था के लिए लालाजी ने अपनी स्वर्गीय पत्नी को स्मृति में लाहौर में गुलाबदेवी तपेदिक अस्पताल खोला था। विभाजन के बाद, जालन्धर में इसकी पुन:स्थापना की गयी।

पंजाब के नौजवान तो आप पर इतने दिलदादा थे कि नवम्बर १९०५ में जब आप इंग्लैंड में कांग्रेस शिष्टमंडल की ओर से प्रचार-कार्य समाप्त कर भारत वापस आये और लाहौर पहुंचे तो वहां अपार जनसमूह स्टेशन पर आपके स्वागत के लिए मौजूद था। उस समय लाहौर के वयोवृद्ध नेता श्री जोगेन्द्र बोस ने आपको अपने कंधों पर उठा लिया। जब बग्घी में आपको बैठाया गया तो युवकों ने घोड़े हटाकर अपने हाथों से उस गाड़ी को शहर में दो मील से अधिक दूरी तक खींचा। देश में ऐसा सम्मान संभवत: सबसे पहले आपको ही मिला था।

सर सैयद अहमद के नाम खुले पत्र

लालाजी को राजनीति में लाने वाली एक और मार्के की घटना उस समय हुई जब हिसार में, युवाकाल में ही,

उन्होंने अपनी वकालत आरम्भ की थी। कांगेस का पहला अधिवेशन सन् १८८५ में बम्बई में श्री उमेशचन्द्र बनर्जी की अध्यक्षता में हुआ। इस कांग्रेस का संचालन वस्तुत: एक अंग्रेज सरकारी अधिकारी श्री ए.ओ. ह्यूम के हाथ में था। इस समय मुसलमानों के तत्कालीन नेता और बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सैयद अहमद ने कांग्रेस का विरोध करते हुए मुसलमानों को इससे अलग रहने की सलाह दी। सर सैयद ने इस सम्बन्ध में कई लेख लिखे और भाषण भी दिये। लालाजी के पिता मुंशी राधाकिशन इस मुस्लिम नेता के बड़े प्रशंसक और अनुयायी भी थे। इन्हीं के कारण मुंशीराम जी घर में मुसलमानों की तरह नमाज पढ़ते व रोजा वगैरह रखते थे, यद्यपि भोजन में वे कट्टर शाकाहारी और गोहत्या के विरुद्ध थे। लालाजी ने 'आपके एक पुराने अनुयायी के पुत्र' इस नाम से सर सैयद के 'कोहिनूर' पत्र में दर्जन से अधिक खुली चिट्ठियां लिखकर कड़ाकेदार विरोध किया। सर सैयद इससे बहुत घबरा गये पर श्री ह्यूम ने इन पत्रों को खूब पसन्द किया और अंग्रेजी में अनुवाद करा बड़ी संख्या में देश में बंटवाया। इससे युवक लाजपतराय को काफी ख्याति मिलीऔर इसी समय १८८८ के इलाहाबाद में हुए कांग्रेस अधिवेशन में पं. मदनमोहन मालवीय तथा पं. अयोध्यानाथ ने आपका विशेष स्वागत किया। आपके भाषणों को वहां खास पसन्द किया गया।

बंग-भंग और अकाल

१९०५ में भारत के वायसराय लार्ड कर्जन ने बंगाल के राजनीतिक आन्दोलन को निर्बल करने और मुसलमानों को खुश करने के लिए बंगाल के दो टुकड़े कर दिये, पूर्व और पश्चिम बंगाल। इससे सारे देश में विरोध की ज्वालाएं भड़क उठीं। गुप्त षड्यन्त्र दल कायम हो गये। कई जगह यूरोपियन मारे गये। इस समय लाला जी देश के प्रमुख राजनीतिक नेताओं में थे।

पंजाब की नौकरशाही की आंखों में लालाजी खूब चुभ रहे थे। वह मौके की तलाश में थी। प्रान्त का तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर इबटसन बड़ा अदूरदर्शी और कट्टर गोरा सिविलियन था। १९०७ में उसने पंजाब की शहरी आबादियों, लायलपुर और मिंटगुमरी के जिलों, में ऐसे भूमि-कानून बनाये जिससे इलाके के किसानों में खलबली मच गयी। उधर, रावलपिंडी के इलाके में भूमि का लगान बढ़ा दिया। इस प्रकार सारे पंजाब के जमींदार तिलमिला उठे। इसमें हिन्दू, मुसलमान, सिख सभी शामिल थे। लायलपुर और रावलपिंडी-दोनों इस आन्दोलन के मुख्य केन्द्र थे।

सरदार अजीतसिंह-शहीद भगतसिंह के चाचा-इसके प्रमुख नेता थे। लालाजी का इस आन्दोलन से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं था। १९०७ मार्च के अन्त में लायलपुर में 'जमींदार एसोसिएशन' की ओर से एक सभा की गयी। संयोजकों के अत्यन्त अनुरोध पर लाहौर के कुछ प्रमुख हिन्दू-मुस्लिम वकीलों के साथ लालाजी वहां पहुंचे और उन्होंने केवल वह आवेदन पत्र पढ़कर सुनाया जो सरकार के पास इस कानून के विरोध में भेजा जाना था। स. अजीतसिंह के भाषण खूब गर्म थे और जनता बार-बार उनसे बोलने के लिए आग्रह कर रही थी। यहां पर पंजाब का प्रसिद्ध गीत 'पगड़ी संभाल ओ जट्टा' पहली बार श्री बांकेदयाल ने गाया था और जनता ने बहुत पसन्द किया था। रावलपिंडी आन्दोलन के ५ प्रमुख नेताओं को, जो वकील थे, जिला मजिस्ट्रेट ने बुलाकर वकालत का लाइसेंस जब्त करने का नोटिस दिया। इससे सारे पंजाब में खलबली मच गयी। स. अजीतसिंह ने यहां भी काफी गर्म भाषण दिया था। इन वकीलों पर यही जुर्म लगाया गया कि वे इस सभा में शामिल हुए थे। लालाजी रावलपिंडी पहुंचे। नगर में हड़ताल थी। नोटिस रद्द करवाने की सुनवाई जब कचहरी में होने को थी तब करीब २० हजार लोग वहां जमा थे। सरकार इससे घबरा गयी और जिला मजिस्ट्रेट ने नोटिस वापस ले लिया। पर पुलिस ने अपने जासूस छोड़ रखे थे जो जनता को लूटमार करने और गोरों को पीटने के लिए उकसा रहे थे। शहर में कुछ फसाद हो गये और राह-चलते गोरों को पीटा भी गया। कई लोग गिरफ्तार किये जिनमें कई शिक्षित युवक भी थे।

लालाजी की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में अब लाहौर में अफवाहें उड़ रही थीं। कुछ गोरे शासकों ने संकेत किया कि 'सारी शरारत की जड़ तो लाला लाजपतराय है पर वह अभी तक स्वतंत्र घूम-फिर रहा है और जल्दी ही उसकी बारी आने वाली है। आखिर ९ मई १९०७ को प्रात: जब लालाजी कचहरी जाने को तैयार ही थे, तभी अनारकली थाने के दो पुलिस अधिकारी उन्हें बुला ले गये। कोठी से अपनी बग्घी पर वह बाहर निकले ही थे कि दो गोरे पुलिस अफसर पायदान पर चढ़ गये। यहीं से बन्द गाड़ी में स्टेशन पर तैयार एक स्पेशल गाड़ी द्वारा-जिसमें पुलिस का कड़ा पहरा था और जिसकी सब खिड़कियां तथा दरवाजे बन्द थे-उन्हें कलकत्ता और वहां से जहाज द्वारा बर्मा और अन्त में १५ मई को मांडले जेल में बन्द कर दिया गया। लालाजी को यह पता लग गया था कि

स. अजीतसिंह को भी यह निर्वासन-दंड दिया गया था। दोनों मांडले जेल में होते हुए भी एक-दूसरे से मिल नहीं सकते थे। यहां पर एक गोरे अधिकारी ने लालाजी से मुलाकात करते हुए कहा, ''आपने सेनाओं को बरगलाया था और ब्रिटिश सरकार आपको दूसरा नाना साहब समझती है।'' १८५७ में जो नाना साहब द्वारा सिपाही-विद्रोह के लिए हुआ वही १९०७ में लाजपतराय द्वारा होगा। यह विश्वास, आमतौर पर ब्रिटिश सरकार, यूरोपियनों और अध गोरों में व्याप्त था।

पर लालाजी का यह देश-निर्वासन सरकार को बड़ा महंगा पड़ा। सारे देश में प्रबल आन्दोलन, असन्तोष और विरोध की भयंकर अग्नि भड़क उठी। इसकी गूंज ब्रिटिश पार्लियामेण्ट में भी लगातार उठने लगी। यहां मेम्बरों द्वारा, करीबन हर रोज ही, लालाजी के इस निर्वासन और भारत में व्याप्त घोर असन्तोष के बारे में प्रश्न पूछे जाते और भारतमंत्री लार्ड मार्ले के लिए सन्तोषजनक उत्तर देना कठिन हो जाता। स्थिति को सम्भालना दिन-प्रतिदिन कठिन हो रहा था। यह भी स्पष्ट हो चुका था कि लालाजी के विरुद्ध ऐसा गम्भीर आरोप नहीं था जिसके लिए सामान्य अदालती कार्यवाही न कर विशेष कानून के आधीन ऐसी कठोर सजा को न्यायसंगत ठहराया जा सकता। आखिर ११ नवम्बर १९०७ का लाला जी को मुक्ति का सन्देश मिल गया। फिर उसी प्रकार बंद गाड़ी और कड़े पुलिस पहरे में लालाजी को मध्य प्रदेश के रास्ते से लाहौर लाया गया। स. अजीतसिंह को दूसरी गाड़ी से लाया गया।

कलकत्ता के अधगोरे पत्र 'इंगलिशमैन' और लंदन के ''डेली एक्सप्रेस'' पर लालाजी ने मिथ्या आरोप लगाने के हेतु पचास-पचास हजार रुपये के मानहानि के मुकदमे किये। लालाजी दोनों मुकदमों में जीत गये। (इंगलिशमैन पर मुकदमे के खर्च के अतिरिक्त १५ हजार रुपये की और 'डेली एक्सप्रेस' पर ५० पौंड हर्जाने की डिग्री हुई। 'डेली एक्सप्रेस' पर कम डिग्री होने का कारण यह था कि लालाजी का अधिक देर तक लंदन में केवल इसी काम के लिए ठहरना सम्भव नहीं था। लालाजी ने हर्जाने की दोनों राशियां सार्वजनिक संस्थाओं को दान कर दीं।)

कांग्रेस का प्रचार करने और विदेशों में भारत की दशा से जनता को परिचित कराने तथा स्वतंत्रता-आन्दोलन में सहायता व सहानुभूति प्राप्त कराने के लिए लालाजी कई बार योरूप-अमरीका गये। प्रथम युद्ध के समय तो उनके भारत वापस आने पर रोक लगा दी गयी थी। जब वह वापस आये तो कांग्रेस का नेतृत्व गांधी जी के हाथ में आ चुका था। लालाजी ने इसमें पूरा सहयोग दिया। १९१९ में गांधी जी के असहयोग कार्यक्रम पर विचार करने के लिए कलकत्ता में विशेष कांग्रेस अधिवेशन हुआ जिसके लिए लालाजी को अध्यक्ष चुना गया। इसके बाद लालाजी के सहयोग से गांधी जी का सविनय अवज्ञा का आन्दोलन देशभर में विशेषत: पंजाब में, जोरों से चलने लगा। १९२१ दिसम्बर में लालाजी को गिरफ्तार कर लिया गया और लाहौर जेल में दो वर्ष के कारावास दंड के साथ बन्द कर दिया गया।

इसके बाद भारतीय राजनीति में परिवर्तन आने लगा। एक ओर देश में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो गये और दूसरी ओर गांधी जी के पंचसूत्री बहिष्कार कार्यक्रम की व्यर्थता देख जेल से छूट कर आये नेताओं ने इस पर पुन: विचार किया। इसी के फलस्वरूप स्वराज्य पार्टी का जन्म हुआ। पंजाब का चार्ज लालाजी को दिया गया था। पर लालाजी के मतभेद कांग्रेस से बढ़ते गये क्योंकि गांधी जी तथा अन्य कांग्रेसी नेताओं की नीति अत्यधिक मुस्लिम-पक्षीय थी। हिन्दू हितों की खुले आम हत्या हो रही थी। कोकोनाडा कांग्रेस में अध्यक्ष पद से मौलाना मुहम्मद अली ने प्रस्ताव किया था कि अछूतों का हिन्दू और मुसलमानों में बंटवारा कर दिया जाए। लालाजी इस प्रस्ताव से बहुत दु:खी और विक्षुब्ध हुए। आपने सन् १९२५ के आरम्भ में अछूतोद्धार का आन्दोलन शुरू किया। देश में राजनीतिक जागरण पैदा करने के लिए लालाजी ने लाहौर में 'तिलक स्कूल ऑफ पालिटिक्स' स्थापित किया। कांग्रेसी आन्दोलन के समय आपने उर्दू में वन्देमातरम्' दैनिक आरम्भ किया था और अब 'पीपुल' नामक अंग्रेजी में साप्ताहिक जारी किया। यह पत्र राजनीति-प्रधान था। आपने कई पुस्तकें लिखीं जिनमें 'अनहैप्पी इंडिया' का बहुत प्रचार हुआ। लालाजी यह जानते थे कि निष्ठावान् कार्यकर्ताओं के बिना राष्ट्र कभी उन्नत नहीं हो सकता। इसी दृष्टि से आपने 'लोक सेवक मंडल' (सर्वेण्ट्स आफ पीपुल सोसाइटी) कायम किया जिसके द्वारा तैयार किये हमारे देश के प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लालबहादुर शास्त्री तथा राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन भी इसी संस्था के सदस्य थे। वस्तुत: श्री लालबहादुर को राजनीतिक जीवन की दीक्षा लालाजी के सम्पर्क और उनकी इस संस्था में आने से ही मिली। लालाजी ने इस संस्था को अपना ४० हजार पुस्तकों का पुस्तकालय और डेढ़ लाख रुपये का

(शेष पृष्ठ ३८ पर)

दु:ख का रंग एक

❒ तरुण विजय

बन्दूक चलाने वालों से बड़ा होता है राहत का हाथ

धरती कांपी तो रंग, जाति और मजहब के तमाम भेद भरभरा कर ढह गए। मौत मजहब पूछ कर नहीं आती! राजेन्द्र पुरी का ट्रिब्यून में एक व्यंग्य चित्र छपा है, जिसमें भूकम्प का दैत्य मुशर्रफ और मनमोहन सिंह से कह रहा है, "मैं तुम्हारी नियंत्रण रेखा को मान्यता नहीं देता।" दु:ख के आंसुओं का रंग और स्वाद एक ही होता है, चाहे वह इस्लामाबाद में विलाप कर रही मां का हो या जम्मू और श्रीनगर में अपने बच्चों की निर्जीव देह देख विकल हुई मां का। इसलिए युधिष्ठिर ने यक्ष से कहा भी था कि संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य यह है कि हम प्रतिदिन लोगों को मृत्यु के मुख में समाते हुए देखते हैं, फिर भी दैनिक व्यवहार ऐसा करते हैं मानो अमर हों। भारत ने अपने सभ्यतामूलक स्वभाव के अनुरूप सबसे पहले सहायता भेजी। भारतीय वायुसेना के विमान इस्लामाबाद में करोड़ों रुपए की सहायता राशि लेकर उतरे। यहां तक कि भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सैनिकों की मदद की पुकार सुनकर उनकी औजारों से सहायता की। रा.स्व.संघ के स्वयंसेवक भी जम्मू-कश्मीर में भूकम्प पीड़ितों की मदद में अपनी स्वभावगत विशेषता के अनुरूप जुटे हैं, क्योंकि दु:ख का रंग एक है तो राहत का भी रंग एक है। कोई अपने मन में कितनी ही नफरत पाल कर रखे किन्तु ऐसे ही दु:ख के समय अहसास होता है कि ए.के.-४७ राइफलों से निर्दोषों की हत्याएं करने वालों के ऊपर भी एक रब है, अल्लाह है, ईश्वर है, जिसके आगे बड़े-बड़े एटम बम और आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्र धराशायी हो जाते हैं। संसार में जो समाधान मानवीयता और प्रेम से हो सकता है वह सरहदों की खाइयां बनाने वाले बारुदी विस्फोटों से सम्भव नहीं। भारत के सभी समाचार पत्र, चैनल और सामाजिक एवं राजनीतिक नेता जितने भारतीय सीमा में भूकम्प के प्रकोप से पीड़ित भारतीयों की पीड़ा से दु:खी हैं उतना ही स्वाभाविक दु:ख उन्होंने पाकिस्तानी क्षेत्र और गुलाम कश्मीर में पीड़ितों के लिए व्यक्त किया है। इनमें से अनेक तो अति उत्साह में पाकिस्तान के लिए अधिक से अधिक सहायता भेजने के लिए तत्पर हैं। इन्फोसिस के अध्यक्ष श्री नारायणमूर्ति ने १.३ करोड़ रुपए की सहायता भेजने की घोषणा की है, क्योंकि हिन्दू दु:ख बांटने में भेद कर ही नहीं सकता। जो भेद करे वह हिन्दू हो नहीं सकता। हमारे सामने तो भैया कन्हैया का वह आदर्श रहता है, जिन्होंने युद्ध भूमि में भी घायल शत्रुओं को पानी पिलाया, उनकी सेवा की। यह हमारी भावभूमि है और प्राकृतिक आपदा या दु:ख के समय शत्रुता की बात करना एक बीमार और वीभत्स मानसिकता का परिचायक है।

सुनन्दा के. दत्ता रे सेकुलर पत्रकार हैं, जिनके स्तम्भ देश तथा विदेशों के अनेक समाचार पत्रों में प्रकाशित होते हैं। १४ अक्टूबर के पायनियर में उन्होंने भारत और पाकिस्तान की मानसिकता पर भूकम्प के सन्दर्भ में एक लेख लिखा है। इसकी शुरूआत में उन्होंने कारगिल के शहीद सौरभ कालिया के बारे में दुनिया भर में भेजी जा रही एक अपील का जिक्र किया है, जिसमें बताया गया है कि पाकिस्तानियों ने सौरभ कालिया को ५ दिन अपने कब्जे में रखने के बाद कितनी पाशविकतापूर्वक मारा था और बाद में उनकी निर्जीव देह भारतीयों को सौंपी थी। इसके बाद उन्होंने दूसरी घटना का जिक्र किया है कि जब विभाजन के बाद भारत में अन्न की भीषण कमी हो गई थी क्योंकि अधिक अन्न उत्पादक क्षेत्र पाकिस्तान में चले गए थे तो भारत अमरीका से अनाज की सहायता पाने के लिए गया था। उस संकट के समय पाकिसतान के प्रतिनिधि ने कुरान का हवाला देते हुए अमरीका से कहा था कि वह भारत को सहायता न दे। पाकिस्तानी प्रतिनिधि का तर्क था कि अगर भारत को अमरीका ने इस समय अनाज की सहायता दी तो वह खेती पर खर्च किया जाने वाला धन मशीनें और सैनिक हथियार बनाने में खर्च कर देगा। ऐसे लोग सिर्फ जुगुप्सा जगा सकते हैं। हम ऐसे कभी न बनें यह प्रार्थना करनी चाहिए।

अब देखिए वे लोग, जो कश्मीर को भारत से अलग करने की बात करते हैं, खुद को जिहादी कहते हैं और घोषित करते हैं कि वे इस्लाम के नाम पर नमाजे मुस्तफा लाने के लिए बन्दूकें उठाते हैं, अपने हत्यारे संगठनों के नाम अल्लाह टाईगर्स, जैश-ए-मोहम्मद, लश्करे तोयबा और हिजबुल मुजाहिद्दीन जैसे इस्लामी मजहबी सन्देश देने वाले रखते हैं, उन्होंने इस भूकम्प की त्रासदी के समय क्या किया और क्या कहा :--

१. भूकम्प ८ अक्टूबर की सुबह ९.२० पर आया।

९ अक्टूबर को 'बहादुर' इस्लामी जिहादियों ने भूकम्प से घायल और तबाह क्षेत्र में १० हिन्दुओं की गला काटकर हत्या कर दी। हमारे सेकुलर समाचार पत्रों ने न तो इस घटना को प्रमुखता दी और न ही इस पर कोई टिप्पणी की। कारण स्वाभाविक है कि मरने वाले हिन्दू थे और जिहादियों के खिलाफ ऐसे मौके पर कुछ भी कहना शायद 'सेकुलरवादी इन्सानियत' के खिलाफ होता।

२. उधर दुनिया में सबसे पहले भारत ने पाकिस्तानियों की मदद की घोषणा की और यहां तक कहा कि भूकम्प पीड़ितों को सेवा के लिए वह न केवल राहत सामग्री, बल्कि अपने जवान भी भेजने के लिए तैयार है। लेकिन पाकिस्तान ने ऐसे मौके पर भी अपनी साम्प्रदायिक राजनीति का परिचय दिया और जहां राहत सामग्री स्वीकार की, वहीं उसने गुलाम कश्मीर में राहत और सहायता कार्य के अभाव में तड़पते, मरते रहे लोगों को देखे रहना मंजूर किया परन्तु उन्हें बचाने और सहायता कार्य के लिए भारतीय जवान नामंजूर कर दिए।

३. हुर्रियत के नेता और हमेशा जली-कटी सुनाने वाले यासीन मलिक ने भूकम्प के बाद इस्लामी आतंकवादियों द्वारा मारे गए हिन्दुओं के बारे में तो एक शब्द नहीं कहा. भारत द्वारा दी जा रही सहायता की राशि और जवानों के सेवा कार्यों पर भी कोई टिप्पणी नहीं की, पर इतना जरूर कहा कि इस बार मुसलमान बहुत ज्यादा मारे गए हैं इसलिए भारत के उद्योगपति सहायता राशि नहीं भेज रहे हैं। यासीन मलिक को जम्मू और श्रीनगर में मारे गए भारतीयों की चिन्ता नहीं, बल्कि उसने घोषित किया कि वह गुलाम कश्मीर जाकर लोगों की मदद करेगा। ठीक बात है। ऐसी स्थिति में हिन्दू समाज से ही अपेक्षा की जा सकती है कि वह संयम और धीरज के साथ जो उचित और देशानुकूल लगे वह करते रहे। लेकिन जब दर्द बढ़ता है तो जुबां पर आता ही है। आतंकवादी जिहादी अपने आप से पूछें कि वे बेगुनाहों की हत्याएं करने के जो मंसूबे बनाते हैं क्या वे अल्लाह की मर्जी से भी बड़े होते हैं? मुजफ्फराबाद के जिन आतंकवादी शिविरों ने उन्हें भारतीयों की हत्याएं करने का प्रशिक्षण दिया, उनका तो भूकम्प में नामो-निशान मिट गया। बन्दूक चलाने वालों से भी बड़ा एक हाथ है, उस हाथ का संकेत समझें।

-संपादक पांचजन्य, नई दिल्ली

आर्य कन्या गुरुकुल राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

नई दिल्ली : प्रान्तीय आर्य महिला सभा द्वारा संचालित आर्य कन्या गुरुकुल न्यू राजेन्द्र नगर का ३८वां वार्षिकोत्सव श्रीमती शकुन्तला आर्या अध्यक्षा प्रान्तीय आर्य महिला सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

श्रीमती कृष्ण रहेजा के निर्देशन में यज्ञ हुआ। ध्वजारोहण गुरुकुल की आचार्या श्रीमती प्रेमलता जी द्वारा किया गया। शिक्षा सम्मेलन में श्रीमती शकुंतला आर्या ने कहा कि नारी परिवार समाज और राष्ट्र की धुरी है। राष्ट्र की उन्नति तभी सम्भव है जब कन्याएं भारतीय संस्कृति के प्राण पोषक तत्वों पर आधारित संस्कारों से संस्कारित होकर जीवन को गरिमामय बनाती हैं। आचार्या श्रीमती प्रेमलता की प्रशासनिक सेवाओं पर हमें गर्व है। जिन्होंने अपने ध्यान और चिन्तन का केन्द्र केवल इस गुरुकुल को ही बना रखा है। श्रीमती पुष्पा चौधरी और कृष्णा वढेरा भी गुरुकुल के प्रत्येक कार्य में पूर्ण सहयोग देती हैं। आचार्या प्रेमलता ने गुरुकुल की वार्षिक प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि श्रीमती कृष्णा तीर्थ (संसद सदस्या) श्री पूरनचन्द योगी विधायक तथा श्री मंजीत खन्ना ने गुरुकुल की समस्याओं के निवारण का आश्वासन दिया।

विशिष्ट अतिथि पंडिता राकेशरानी ने कहा कि स्वतंत्रता आन्दोलन में नब्बे प्रतिशत आर्य समाजियों ने भाग लेकर देश आजाद कराया था। भारतीय सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक गुरुकुल जैसी शिक्षण संस्थाओं ने देश में वैचारिक क्रान्ति लाकर कुरीतियों के उन्मूलन का महत्वपूर्ण कार्य किया है। श्रीमती शकुन्तला दीक्षित महामंत्री सभा ने कहा कि आज के भौतिकवादी युग में गुरुकुल का एक महत्वपूर्ण स्थान है। ०-०-०

सूचित करें

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त पंजाब के एक उपदेशक महाराज कृष्ण भसीन पिता श्री ओमप्रकाश भसीन थे, जिन्होंने सारी आयु आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त पंजाब की सेवा की है। उनकी स्यालकोट में क्रिकेट बैट्स बनाने की फैक्टरी थी और वे स्यालकोट के ही रहने वाले थे। उनकी पुत्रवधू श्रीमती विनोद भसीन उनके सम्बन्ध में एक पुस्तक प्रकाशित करना चाहती हैं। आर्यजनों से प्रार्थना है कि उनके जीवन के सम्बन्ध में यदि किसी को कोई जानकारी हो अथवा कोई संस्मरण हो तो वह निम्नलिखित पते पर भिजवाने की कृपा करें : **श्रीमती विनोद भसीन, के-५, हौजखास एन्क्लेव, अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-१६, दूरभाष : २६५१७०४२**

भारतीयों का बुद्धिबल

❐ वेदप्रताप वैदिक

पांच हजार साल का ज्ञात इतिहास बताता है कि भारतीयों ने दुनिया में जब भी जगह बनाई, अपने बुद्धिबल से ही। अब जबकि दुनिया सिकुड़ रही है और वक्त की रफ्तार तेज हो गयी है तो इतिहास खुद को दोहराता प्रतीत होता है।

सॉफ्टवेयर में भारतीयों की महरत का लोहा दुनिया ने माना है। सॉफ्टवेयर के बाद अब बायो-टेक की बारी है। बायो-टेक यानी सजीव संसार सम्बन्धी तकनीक। इसका दायरा सॉफ्टवेंयर से भी बड़ा है। अमरीका में अब तक ४० अरब डालर से अधिक पैसा बायो-टेक में लग चुका है। यदि भारत इस क्षेत्र में आगे बढ़ जाए तो इसके वारे-न्यारे हो सकते हैं।

इस बार अमरीका में भारतीयों का जलवा देखने का विशेष अवसर मिला। राजस्थान एसोशिएशन ऑफ नार्थ अमरीका द्वारा 'लांग आइलैंड' में आयोजित राजस्थान उत्सव के दौरान अमरीका के लगभग हर कोने से सैकड़ों राजस्थानी न्यूयार्क में इकट्ठे हुए। मालदार मारवाड़ियों ने व्यावसायिक बुद्धि से अपनी पहचान बना ली है। अमरीका के पॉश इलाकों में अपने महलनुमा मकानों में उन्होंने हवेलियों का माहौल खड़ा कर दिया है।

छत्तीस साल पहले जव मैं कोलम्बिया युनिवर्सिटी में आया था तो न्यूयॉर्क शहर में दिन भर में कभी-कभी एक भी भारतीय के दर्शन नहीं होते थे। अब मेनहेट्टन ही नहीं, न्यूयार्क के आसपास आप किसी भी क्षेत्र में चले जाइए, आपको हर मोड़ पर कोई न कोई भारतीय दिख जाएगा। इस समय अमरीका में भारतीयों की संख्या लगभग २० लाख है। अगले १० साल में वह ५० लाख हो जाए तो कोई आश्चर्य नहीं। ट्रेड टावर गिरने के कारण दुनिया के दर्जनों मुस्लिम देशों के नागरिकों का अमरीका-प्रवेश अब कठिन हो गया है। इसका फायदा भारत को अवश्य मिलेगा। यों भी भारत के डॉक्टरों, इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, व्यापारियों, प्रोफेसरों आदि ने अपने बुद्धिबल का सिक्का यहां जमा लिया है। उनकी आय इस समय अमरीका के किसी भी समुदाय से अधिक है। भारतीय लोगों के पास बड़े-बड़े मकान हैं, सबसे महंगी कारें हैं, उनका रहन-सहन अच्छा है। वे शिक्षा और सम्पन्न्ता के प्रतीक हैं।

भारत के सबसे उन्नत लोग ही यहां आते हैं। यहां आकर वे मालदार हो जाते हैं। वे समझते हैं कि अमरीका उन पर कृपा कर रहा है, लेकिन सच्चाई यह है कि वे अमरीका पर कृपा कर रहे हैं। भारत से आने वाले सुशिक्षित नौजवान यदि यहीं शिक्षित होते तो उनकी शिक्षा पर लाखों रुपये खर्च होते। यहां शिक्षा का प्रतिमास का खर्च लगभग डेढ़ लाख रुपये है। भारत अपने नौजवानों को पहले पाल-पोसकर बड़ा करता है और फिर पढ़ा-लिखाकर उन्हें अमरीका को सौंप देता है। अरबों डॉलर की यह धरोहर अमरीका को सेंत-मेंत में मिल रही है। भारतीयों ने अपने बुद्धिबल से अमरीका को सूचना की महत्तम शक्ति बना दिया है। यदि ये भारतीय वापस भारत आ जाएं तो पता नहीं क्या चमत्कार कर दें।

अमरीका में ज्यों-ज्यों भारतीयों की संख्या बढ़ रही है, उनके संगठन भी बढ़ते जा रहे हैं। लगभग हर बड़े शहर में भारतीय मन्दिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारों का निर्माण हो रहा है। प्रादेशिक भाषाओं के आधार पर भी कुछ संगठन बन गये हैं। व्यावसायिक संगठन तो पहले से सक्रिय हैं ही। आर्यसमाज भी लगभग सारे अमरीका में सक्रिय है। गयाना, सूरिनाम और ट्रिनिडाड से आए आर्यसमाजियों का उत्साह देखने लायक है। टोरंटों और न्यूयार्क के आर्यसमाजी विश्व आर्य सम्मेलन करने का साहस रखते हैं। योग-शिक्षा और हिन्दी-प्रचार पर वे विशेष बल दे रहे हैं। इस समय अमरीका में लगभग दो करोड़ लोग प्रतिदिन योगाभ्यास करते हैं। लेकिन योग उनके लिए एक टेक्नीक भर बनता जा रहा है। योग के माध्यम से वे भारत के निकट आएं, इस तरह का कोई योजनाबद्ध प्रयास दिखायी नहीं पड़ रहा।

प्रवासी सम्मेलन या मालदारों का जमावड़ा

भारत सरकार ने तीसरा प्रवासी भारतीय सम्मेलन आयोजित किया, यह अपने आप में उपलब्धि है। सुनामी के बावजूद सम्मेलन स्थगित न करना और सब कुछ तय कार्यक्रम के अनुसार होना सराहनीय था। पर यहां यह भी सोचें कि दस हजार रुपये शुल्क भरकर कौन ऐसे सम्मेलनों में भाग लेगा शायद सरकार मानती है कि सारे प्रवासी मालदार हैं और सिर्फ मालदार भारतीयों को ही इस तरह के सम्मेलनों में भाग लेना चाहिए। प्रवासी सम्मेलन को मालदारों का सम्मेलन बना देना कतई सही नहीं है। भारत के लगभग ढाई करोड़ प्रवासियों में मुश्किल से ५० लाख को ही मालदार कहा जा सकता है। उनमें ज्यादातर लोग वे हैं, जो पिछले डेढ़-दो दशक में अमरीका, यूरोप और जापान आदि देशों में व्यवसायियों की तरह गए हैं। अच्छा यह हो कि सरकार पिछले तीनों सम्मेलनों के

आंकड़े पेश करे और बताए कि किन देशों में कौन से प्रवासी आए? जाहिर है फीजी, मारिशस, सूरीनाम, ट्रिनिडाड, गयाना जैसे देशों से काफी कम लोग आए होंगे। जिन देशों के प्रवासी भारतीयों का हमारे सबसे अधिक समर्थन की जरूरत है, क्या उन पर हम उचित ध्यान दे रहे हैं? खाड़ी के देशों, मलेशिया, बर्मा, आदि में काम कर रहे भारतीय मजदूरों पर भी क्या कभी हमारा कृपा कटाक्ष होता है? ये वे लोग हं, जो सबसे अधिक विदेशी मुद्रा भेजते हैं।

जिन मालदार प्रवासियों से हम विनिवेश की आशा करते हैं, वे चीन, सिंगापुर, मध्य एशिया और दक्षिण अमेरिका की तरफ दौड़े चले जाते हैं। क्या हमारी प्रवासी नीति भी उच्च वर्ग और उच्च जाति के घेरे में कैद होकर रह जाएगी? भारतीय मूल के प्रधानमंत्रियों का तख्ता पलट हो जाता है, भारतीय मूल के नागरिकों को देश निकाला दे दिया जाता है, उसके साथ पशुतुल्य बर्ताव किया जाता है और हमारी सरकारों के मुंह में दही जमा रहता है। यह जड़ता आखिर कब टूटेगी? इसे कौन तोड़ेगा? भारत की सन्तानों के आगे हम केवल कटोरा फैलाते रहेंगे या कभी उन पर हम छाता भी फैलाएंगे? हमें अपनी प्रवासी नीति पर पुनर्विचार की सख्त जरूरत है।

सर्वप्रथम आवश्यक यह है कि प्रवासी नीति को उच्च वर्ग और उच्च वर्ण की ग्रंथियों से मुक्त किया जाए। भारतमाता का हृदय उसके उन सपूतों के लिए भी पिघलना चाहिए, जो गरीब हैं और जो हाड़ तोड़ मजूरी के लिए डेढ़ सौ साल पहले परदेस ले जाए गए थे। उन्हें अपनी संस्कृति, भाषा और परम्परा की सर्वाधिक चिन्ता है। यह चिन्ता प्रवासी सम्मेलनों में लापता रहती है।

अंग्रेजी में चलने वाले ये सम्मेलन जिस शान शौकत से सम्पन्न होते हैं, उसका सन्देश केवल यही है कि यह मालदारों का जमावड़ा है। हम अपने प्रवासियों को भारतीय बनाने की बजाय अजनबी बनाने पर तुले हुए हैं। राजेन्द्र सिंह के हिन्दी भाषण पर सैम पित्रोदा का माफी मांगना इसी बीमारी का ठोस प्रमाण है। हमारी सरकार अपनी भाषाओं और सहज संस्कारों के सेतुओं को सुदृढ़ बनाने ध्यान नहीं देती। वह भारत और प्रवासियों के बीच डॉलर का चमकता हुआ पुल बांधना चाहती है। डॉलरवाले नव प्रवासियों और उच्च भारतवासियों की यह सांठगांठ शुद्ध निजी वर्ग स्वार्थ पर आधारित है। यह अंग्रेजों की गुलामी का नया संस्करण है। इसमें वह नाभि-नाल सम्बन्ध कहां, जो मां और बच्चे के बीच होता है?

भारत को वास्तविक महाशक्ति बनाने के लिए प्रवासी शक्ति का जुड़ाव नितान्त आवश्यक है, लेकिन जुड़ाव की जो प्रक्रिया अभी चल रही है, उसमें वह भक्तिभाव कहां है, जिसकी आधारशिला पर महान राष्ट्रों के भव्य भवन खड़े किए जाते हैं?

ढाका में चार दिन

ढाका पहली बार नहीं आया हूं। पहले भी दो बार आ चुका हूं। पहली बार तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हाराव और दूसरी बार तत्कालीन प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा के साथ।

ढाका की आबादी लगभग एक करोड़ है। शहर छोटा है, आबादी बड़ी है। हर चप्पा लोगों से भरा पड़ा है। कन्धे से कन्धा मिलाए बिना आप फुटपाथ पर चल नहीं सकते। ज्यादातर सड़कें संकरी हैं। कारों और स्कूटरों की संख्या इतनी ज्यादा हो गयी कि कई मिनट तक आप सड़क पार नहीं कर सकते। लगभग हर सड़क पर बहुमंजिले सुपर बाजार भी देखे जा सकते हैं। कहा जाता था कि ढाका मस्जिदों का शहर है, अब कहा जाता है कि सुपर बाजारों का शहर है।

यहां मैंने एक भी वाहन ऐसा नहीं देखा, जिसकी नम्बर प्लेट अंग्रेजी में हो। ज्यादातर नामपट्ट बांग्ला में हैं। विदेशमंत्री मुझसे जहां मिले, वहां केवल बांग्ला में लिखा था 'अतिथि कक्ष'। मैंने किसी भी मंत्री, अफसर या विद्वान को एक-दूसरे से अंग्रेजी में बात करते नहीं सुना। सब बातें बांग्ला में होती हैं। दुकानदारों की पावतियां वगैरह भी बांग्ला में होती हैं। बांग्लादेश के मुसलमान अपने आप में अजूबा हैं। उन्हें अपनी भाषा और संस्कृति पर बड़ा गर्व है। भाषा के नाम पर बनने वाला यह दुनिया का पहला देश है। वे कहते हैं, 'हम तलवार के जोर पर मुसलमान नहीं बने हैं। इस्लाम हमारे यहां सूफी रास्ते से आया है, हमलावर के कन्धे पर बैठकर नहीं।'

हिन्दीप्रेमी अमित जोशी

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार हिमांशु जोशी के बेटे अमिट जोशी नार्वे से 'शान्तिदूत' नामक पत्र तो कई वर्षों से निकाल ही रहे हैं। इधर उनके बारे में एक सुखद समाचार है। वे नॉर्वे की एक प्रान्तीय विधानसभा के सदस्य चुने गए हैं। उन्होंने अपने चुनाव के दौरान नॉर्वे के प्रधानमंत्री से अपने पक्ष में एक अपील जारी करवाई। इस अपील पर नॉर्वेजियन प्रधानमंत्री के हस्ताक्षर हिन्दी में थे। जिस निर्वाचन क्षेत्र से अमित चुनाव लड़ते हैं, उसमें भारतीयों से ज्यादा पाकिस्तानी रहते हैं, लेकिन अमित को कोई फर्क नहीं पड़ता। उन्हें सभी वर्णों और जातियों का समर्थन मिलता है। लगभग दो दशक से नॉर्वे में रहने के बावजूद अमित के हृदय में प्रज्ज्वलित हिन्दी की ज्योति मद्धिम नहीं पड़ी है। हिन्दीप्रेमी पिता के हिन्दीप्रेमी बेटे को बधाई।

-ए-२०, प्रेस एन्क्लेव, नई दिल्ली-४८

नियन्त्रण रेखा खोले जाने के मामले में सावधानी बरतने की सलाह

त्रासदी के बाद की राजनीति

❒ के. सुब्रहमण्यम

पाक अधिकृत कश्मीर एवं भारत के नियंत्रण वाले कश्मीर में आए प्रलयंकारी भूकम्प की पृष्ठभूमि में पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल मुशर्रफ ने कश्मीरियों को स्वतंत्र रूप से नियंत्रण रेखा के आरपार अबाधित रूप से आने-जाने की जो पेशकश की उसके भावी नतीजों पर संजीदगी से विचार करना लाजिमी होगा। भारतीय मीडिया के एक वर्ग की यह प्रवृत्ति रही है कि जब कभी कोई देश भारत के सन्दर्भ में किसी तरह की पेशकश करता है तो उसे हाथोंहाथ लिया जाता है और उसकी एकतरफा व्याख्या कर ली जाती है। इससे हम उस पेशकश के निहितार्थों पर गहराई से विचार नहीं कर पाते। जनरल मुशर्रफ की पेशकश पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने की जरूरत है। 8 अक्टूबर को आए भूकम्प ने जहां गुलाम कश्मीर को पूरी तरह से तबाह कर दिया। वहीं नियन्त्रण रेखा के समीप स्थित भारत के नियन्त्रण वाले कश्मीर में भी खासी तबाही मचाई। पाक अधिकृत कश्मीर में अब तक ५५००० लोग मारे जा चुके हैं और ३० लाख व्यक्ति बेघर हो चुके हैं। मृतकों की संख्या अब भी बढ़त पर है इसके बरक्स भारतीय कश्मीर के भूकम्प से १३०० लोग मारे जा चुके हैं और १,६०,००० व्यक्ति बेघर हुए हैं।

नियन्त्रण रेखा को खोलने के गम्भीर परिणाम हो सकते हैं। यह स्वाभाविक है कि पाक अधिकृत कश्मीर से बड़ी तादाद में लोग भारतीय कश्मीर के भूभाग में चले आएं, जिनका बोझ भारत और जम्मू-कश्मीर शासन को उठाना पड़ेगा। ऐसी खबरें हैं कि पाक अधिकृत कश्मीर में चल रहे राहत व पुनर्वास कार्यों में कई खामियां हैं, जिसके चलते सर्दियां शुरू होते ही वहां भूकम्प-पीड़ितों की समस्याएं फिर बढ़ सकती हैं। इस सन्दर्भ में दूसरी विचारणीय बात यह है कि मुशर्रफ कश्मीरियों को किस रूप में परिभाषित करते हैं। कश्मीरी कश्मीर घाटी में ही निवास करते हैं, जो लगभग पूरी तरह से भारत के भूभाग के अन्तर्गत है। यद्यपि १९४७ में कश्मीरियों की एक छोटी संख्या नियन्त्रणरेखा के उस पार चली गई थी, पर कश्मीर का बड़ा भाग भारत के अधिकार में है। पाक अधिकृत कश्मीर में कश्मीरी नहीं बोली जाती। वहां पंजाबी और उर्दु बोली जाती है। १९४८ में शेख अब्दुल्ला ने पंडित नेहरू को सुझाव दिया था कि जिस जगह पर भारतीय सेनाएं मौजूद हैं उन्हें अब उससे आगे बढ़ने को न कहा जाए, क्योंकि वह भूभाग न तो कश्मीरियों से आबाद है और न ही उस पर कश्मीरियों का कोई प्रभाव है। ऐसे इलाकों में उन दिनों मुस्लिम कांफ्रेंस कहीं ज्यादा मजबूत थी। यदि नियन्त्रण रेखा पर अबाधित रूप से आवाजाही की इजाजत दे दी गई तो पाक अधिकृत कश्मीर से बड़े पैमाने पर लोग भारतीय कश्मीर में आने लगेंगे और उस सूरतेहाल में यह मांग भी उठ सकती है कि इन लोगों का स्थायी पुनर्वास कश्मीर घाटी में ही किया जाए।

नेशनल कांफ्रेंस एवं पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी गैर कश्मीरियों के बड़े पैमाने पर कश्मीर में आ बसने के मुद्दे पर पसोपेस में फंस सकती है। चूंकि प्रति व्यक्ति आय के मामले में कश्मीर भूकम्प से तबाह हो चुके पाक अधिकृत कश्मीर और उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त के लोगों के लिए भारतीय कश्मीर में बसना आकर्षण का केन्द्र बन सकता है। पाक अधिकृत कश्मीर से भारतीय कश्मीर में आबादी के सम्भावित स्थानान्तरण के बारे में आर्थिक पहलुओं के अलावा अन्य पहलुओं पर भी बारीकी से ध्यान देना होगा। पाकिस्तानी अधिकारी पहले ही यह बात स्वीकार कर चुके हैं कि तमाम ऐसे क्षेत्र हैं जो अभी तक उनकी पहुंच से बाहर हैं और उन्हें ऐसे स्थानों के बारे में जानकारी नहीं है। यही नहीं दुनिया को भी यह मालूम है कि पाकिस्तान के उत्तरी क्षेत्रों में क्या कुछ घटित हुआ और भूकम्प के बाद वहां के बुनियादी ढांचे का क्या हाल है? भारत के पास उपग्रह संचार सेवा उपलब्ध है इसलिए वह पाकिस्तान की तुलना में अपने सुदूरवर्ती क्षेत्रों में भूकम्प के कारण हुई जन-धन की क्षति के सम्बन्ध में आंकड़े उपलब्ध करा सकता है।

अभी तक पाकिस्तान का अपने उत्तरी क्षेत्रों के बारे में देखभाल करने का रिकार्ड अच्छा नहीं रहा है। इन क्षेत्रों में ज्यादातर शिया आबादी रहती है। भारत इन क्षेत्रों में क्षति का आकलन अपने स्तर पर कर सकता है और पाकिस्तान की कश्मीर घाटी में आबादी के स्थानान्तरण की सम्भावित नीति के विरुद्ध दबाव बना सकता है। केन्द्र सरकार को कश्मीरियों की मुक्त आवाजाही से सम्बन्धित सम्वेदनशील मुद्दे को समझना होगा। सामान्य स्थितियों में दोनों देशों के नागरिक का एक दूसरे के यहां आवाजाही करना एक अलग बात है, पर विषम स्थितियों में उस पार की आबादी का भारत की ओर मुक्त स्थानान्तरण एक भिन्न बात है। इस मुद्दे के सम्बन्ध में भारत सरकार को व्यावहारिक सूझबूझ का परिचय देना होगा।

जनरल मुशर्रफ के अनुसार मौजूदा विषम हालात में कश्मीरियों को मुक्त रूप से एक दूसरे के भूभागों में आने-जाने की आजादी मिलनी चाहिए। इस क्रम में सवाल यह उठता है कि केवल कश्मीरियों की आवाजाही हो सके, इसे सुनिश्चित करने के लिए क्या व्यावहारिक उपाय अपनाए जा सकते हैं? वैसे भी इन दिनों पाकिस्तान अपने यहां बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या से जूझ रहा है जो बरास्ते भारत पाकिस्तान की सीमा में घुसने का प्रयास करते हैं। क्या अब पाकिस्तान नियन्त्रण रेखा के जरिये बांग्लादेशियों को मुक्त रूप से आवाजाही की इजाजत देना चाहता है? मुशर्रफ की पेशकश पर तार्किक रूप से फैसला लिए जाने की जरूरत है। सभी कथित कश्मीरियों को भारतीय कश्मीर में आने की इजाजत देने की जरूरत नहीं है। केवल् उन्हीं लोगों को कश्मीर घाटी में आने की अनुमति दी जानी चाहिए जिनकी कश्मीरियत की पहचान से भारतीय अधिकारी संतुष्ट हो सकें। भारत को उन जेहादियों पर भी नजर रखनी होगी जो भूकम्प की तबाही के बाद भी अपनी आतंकी करतूतों को अंजाम दे रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर के शिक्षा मंत्री गुलाम नबी लोन की कथित जेहादियों द्वारा की गई हत्या इस का सबूत है कि भूकम्प के बावजूद आतंकवादी अपनी कारगुजारियों को अंजाम देने में लगे हुए हैं। ऐसी धारणा है कि भूकम्प के बाद पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकवादियों के संजाल को व्यापक क्षति पहुंची है। मुजफ्फराबाद स्थित जेहादी काउंसिल ने अपनी गतिविधियों को कुछ समय के लिए विराम देने का आह्वान किया है। फिर भी अभी तक यह बात स्पष्ट नहीं है कि जो जेहादी पहले से ही कश्मीर में प्रवेश कर चुके हैं, क्या वे भी जेहादी काउंसिल के फैसले को मानकर अपनी करतूतों पर विराम लगाएंगे? ८ अक्टूबर के बाद कश्मीर घाटी में जिस तरह आतंकवादी अपनी गतिविधियों को जारी रखे हुए हैं उससे यही सिद्ध होता है कि जेहादी काउंसिल का फैसला कश्मीर में घुस चुके आतंकवादियों पर लागू नहीं। कुछ लोगों की दलील है कि जनरल मुशर्रफ भूकम्प से हुई तबाही और पाक अधिकृत कश्मीर में हुए आतंकवादियों के संजाल के नष्ट होने का लाभ उठाकर आतंकवाद को खत्म करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे।

जनरल परवेज मुशर्रफ विश्व बिरादरी को पहले ही यह आश्वासन दे चुके हैं कि वह पाकिस्तान को एक उदार इस्लामिक राष्ट्र बनाना चाहते हैं। यदि वह ऐसा करते हैं तो इससे अच्छी कोई दूसरी बात नहीं हो सकती, फिर भी हमें मुशर्रफ की मंशा को व्यावहारिक धरातल पर परखना होगा। यदि भूकम्प के कारण पाकिस्तान अधिकृत में आतंकवादियों का संजाल नष्ट हुआ है तो पाकिस्तानी सेना की समस्याएं कम हो सकती हैं। मौजूदा स्थितियों में भारतीय सेना नियन्त्रण रेखा के समीप राहत व पुनर्वास कार्यों में सक्रिय भूमिका अदा कर पीड़ितों का दिल जीत सकती है। भारत को शांति प्रक्रिया के तहत विश्वास बहाली के उपायों को आगे बढ़ाने के लिए पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर और पाकिस्तान के उत्तरी क्षेत्रों के पुनर्निर्माण तथा राहत कार्यों में दिल खोलकर मदद करनी चाहिए। यदि मुशर्रफ भारत और भारतीय सेना की मदद नहीं ले रहे हैं तो इससे हमारा कोई लेना देना नहीं। हमें अपना फर्ज अदा करना चाहिए। शांति प्रक्रिया के अगले चरण की बातचीत के दौरान भारत को पाकिस्तान के समक्ष पाक अधिकृत कश्मीर के पुनर्निर्माण के सन्दर्भ में अपनी ओर से मदद की पेशकश करनी चाहिए। वैसे भयावह भूकम्प की पृष्ठभूमि में भारत-पाक सम्बन्धों का रूख किस करवट बैठेगा, इसका संकेत चन्द महीनों में ही स्पष्ट हो सकेगा।

(लेखक परमाणु मामलों के विशेषज्ञ हैं)

हमारे घर

सर्वे भवन्तोऽत्राऽऽनन्दिता: सदा भुयासू:। -संस्कारविधि
हे प्रभो! हम घर सजायें। स्वास्थ्य तन-मन का बढ़ायें।।
जाने अनजाने सभी जन आगमन को हों लालायित।
स्नेह और सम्मान सुख- अपनत्व से पायें यथोचित।
दूर जाकर प्यार का आतित्य दुहरायें-सुनायें।।
हे प्रभो! हम घर सजायें।। २ ।।
शिष्ट मुदृ भाषा हमारी दिग्दिगन्त कर ले आकर्षित।
धान्य धनसम्पद हो न हो मन रहे हरदम प्रफुल्लित।
स्नेह का प्रसाद बांटे पड़ोस विपदायें-मिटायें।।
हे प्रभो! हम घर सजायें।। ३ ।।
कष्ट-क्लेश-अपयश-विपद से, दूर का नाता नहीं हो।
वैर और विरोध का स्वर प्रतिरोध उठ पाता नहीं हो।
हर विवशता को धकेलें, पौध पराक्रम का उगायें।।
हे प्रभो! हम घर सजायें।। ४ ।।
पीढ़ियां गुजरें अंकुठित वेद पथ का हो अनुयायी।
पूर्वजों का नाम रोशन कर चले बनकर उत्साही।
आलस्य-भ्रम-ईर्ष्या व कटुता को घटायें और मिटायें
हे प्रभो! हम घर सजायें।। ५ ।।

सत्यदेव प्रसाद आर्य 'मरुत' नेमदारगंज

बुद्धिजीवी मांसाहार को गलत मानने लगे हैं

❒ **शिवकुमार गोयल**

पशुओं के मांस के सेवन से पैदा होने वाले घातक रोगों तथा मानवीय दृष्टि से भी इसे खाना अधर्म समझने की भावना पनपने से संसार के विशिष्ट व्यक्ति शाकाहार की ओर आकृष्ट होते जा रहे हैं। हाल ही में 'जनसत्ता' ने कुमार विजय द्वारा किया गया सर्वेक्षण प्रकाशित किया है जिसके अनुसार तीन बार के ग्रीन ऑस्कर विजेता और संयुक्त राष्ट्र द्वारा धरती रत्न से सम्मानित पर्यावरणविद माइक पांडे का मानना है कि शाकाहारी भोजन के कई वैज्ञानिक आधार हैं। उनके मुताबिक शाकाहारी और मांसाहारी प्राणियों के दांतों में फर्क होता है। शेर के दांत नुकीले होते हैं जबकि मनुष्य के दांत चपटे और चक्की की तरह होते हैं। शेर के पास नुकीले दांत इसलिए होते हैं ताकि वे शिकार कर सकें और मांस को दांत से ही काट कर खा सकें, पर मनुष्य अपने दांतों से ऐसा नहीं कर सकते। उसके ऐसे दांत इसलिए होते हैं, ताकि वे चबाकर खा सकें। मांसाहारी भोजन के बारे में पाण्डे का कहना है कि यह आकार एंटीबायटिक की तरह होता है, जिसका सेहत पर कुछ बुरा असर भी होता है। वे कहते हैं कि इस धरती पर पाए जाने वाले ज्यादातर विशालकाय जानवर शाकाहारी ही होते हैं। जैसे-हाथी, गैंडा और ह्वेल मछली आदि। यह मानना ठीक नहीं कि मांसाहारी पशु ज्यादा ताकतवर होते हैं।

पद्मश्री और विद्याभूषण से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. आर.के. करोली शाकाहार को मांसाहार से कई मामले में बेहतर बताते हुए कहते हैं कि शाकाहारी भोजन अंतड़ियों में जाकर चर्बी को कम करता है, जबकि मांसाहार से चर्बी बढ़ने के साथ रक्तचाप, मधुमेह जैसी अनेक बीमारियां पैदा होती हैं। जहां तक पौष्टिकता का सवाल है तो शाकाहारी भोजन का प्रोटीन मांसाहारी भोजन से कहीं बेहतर होता है। उनके मुताबिक, पहले जरूर ऐसी मान्यता थी कि इंसान को अधिक प्रोटीन चाहिए, लेकिन अब यह प्रमाणित हो चुका है कि इंसान को दिन भर में मात्र चालीस ग्राम ही प्रोटीन चाहिए। और इतना प्रोटीन आसानी से दाल, सोयाबीन और मलाई रहित दूध और पनीर से मिल जाता है।

वरिष्ठ पत्रकार आलोक मेहता का कहना है कि अपने देश की जलवायु के मुताबिक शाकाहारी भोजन ही उपयुक्त है। शाकाहारी भोजन प्रकृति के साथ जीने का साधन है। शाकाहार से किसी भी तरह की बीमारी से घिरने की आशंका नहीं रहती। मांसाहार खासतौर से सर्दियों वाले देशों में ही ज्यादा प्रचलन में आया।

लोग मांस का अधिक भक्षण इसलिए भी करते थे कि उनके बीच यह मान्यता थी कि वह ज्यादा पौष्टिक होता है और शरीर की क्षमता बढ़ती है। पर अब ऐसी बात नहीं है। शारीरिक क्षमता शाकाहार से भी बढ़ती है।

अध्यात्म साधना केन्द्र, छतरपुर (दिल्ली) के निदेशक स्वामी धर्मानन्द का मानना हे कि मनुष्य को शाकाहारी भोजन लेना चाहिए, क्योंकि यह सुपाच्य के साथ पौष्टिक होता है और किसी भी तरह की बीमारी नहीं होती। उनका कहना है कि मनुष्य के लिए मांसाहारी भोजन करना प्रकृति के विरुद्ध हे।

दिल्ली विश्वविद्यालय की विद्वत परिषद् के सदस्य प्रदीप कुमार कहते हैं कि हमें कौन-सा भोजन लेना चाहिए, यह भौगोलिक स्थिति और जलवायु पर निर्भर करता है। दुनिया के मानचित्र पर जो सर्द इलाके हैं, वहां के लोग मांस खाते हैं तो गर्मी महसूस करते हैं। कुछ जगहों पर सब्जी पैदा नहीं होती है तो वहां के लोग मांस खाते हैं। इसके अलावा कुछ बातें स्वाद पर भी निर्भर करती है। अगर किसी को मांसाहार स्वादिष्ट लगता है तो वे खाते हैं। मैंने बचपन में घर वालों के दबाव में दो बार मांसाहार लिया था, पर वह मुझे अच्छा नहीं लगा। जहां तक प्रोटीन और कैलोरी का सवाल है तो वह शाकाहार में ज्यादा होता है। शाकाहारी लोग न सिर्फ मांसाहारियों से ज्यादा स्वस्थ होते हैं, बल्कि गुस्से पर नियंत्रण रखने में भी ज्यादा सक्षम होते हैं। जाने-माने पर्यावरणविद् अनुपम मिश्र मांसाहार और कत्ल को कुदरत के फार्मूलों के विरुद्ध मानते हैं। वे कहते हैं कि पर्यावरण को बिगाड़ने में पशुवध और मांसाहार प्रमुख वजह है। दिल्ली के एक समाजकर्मी सत्यप्रकाश भारत मानते हैं कि मांसाहार से इंसान अनैतिक और स्वार्थी बन जाता है।

बच्चों का स्कूल चला रही दिल्ली की समा गुप्ता मांसाहार को मूर्खों और गन्दे विचार वालों का आहार मानती हैं। वे कहती ह कि जब इस धरती पर शाकाहार के लिए असंख्य चीजें उपलब्ध हैं, तो फिर पशु-पक्षियों का मांस खाना कहां तक उचित है? इलाहाबाद की शारदा का मानना है कि हमें तो मांसाहार की ओर निहारना भी पाप लगता है। समाजकर्मी अजय शर्मा का कहना है कि शाकाहार ज्यादा फायदेमंद है, पर इसे लोगों के विवेक पर छोड़ देना चाहिए कि वे क्या खाएं। इसके लिए मांसाहारियों को बुरा-भला कहने की जरूरत नहीं है। हमें सिर्फ शाकाहार की खूबियों को सामने रखना चाहिए। सर्वेक्षण के उपरोक्त निष्कर्ष से शिक्षा लेकर अन्य व्यक्तियों को भी मांसाहार जैसे घोर पाप कर्म का त्याग कर शाकाहार का संकल्प लेना चाहिए। **बीचपट्टी, पिलखुवा (उ. प्र.)**

ज्वलन्त मुद्दा

धर्म एवं राष्ट्र रक्षा

❐ जगमोहनसिंह आर्य

सत्य तथा न्याय का आचरण धर्म है। सत्य का जुड़ाव मन से हो-वाणी में सत्यता हो-कर्म सत्य-असत्य को विचार कर किये जायें, वैदिक रीति-नीति में ऐसा अपेक्षित है। प्रश्न उठता है धर्म-धारण क्यों किया जाय? धर्म मनुष्यमात्र की कुटिल भावनाओं को समाप्त करता है। स्वार्थ तथा संकीर्णता की क्षुद्र भावनाओं से ऊंचा उठाता है। मलिन वासनाओं को दूर करता है। सात्विक प्रवृत्तियां जागृत करता है। मनुष्य में अच्छे कल्याणकारी गुणों का संचय होता है। हृदय दया तथा सहानुभूति से भर जाता है। वाणी में मिठास पैदा होता है व्यवहार में निर्भयता छलकती है। नजर में प्रीति का संचार होता है। मनुष्य विद्या तथा ज्ञान से परिपूर्ण हो जाता है। जब इंसान इन गुणों के धन का स्वामी बन जाता है तो धन के स्वामी को इसके रक्षण का विचार आना स्वाभाविक है। कमजोर की रक्षा शक्तिशाली कर सकता है। रक्षा के लिये यह आवश्यक है कि जिससे आप सुरक्षित होना चाहते हैं उससे आप बलवान हों, निश्चित तौर पर आप अपनी सुरक्षा करने में सक्षम हैं। परन्तु यदि अधर्मी-विरोधी से आप निर्बल हैं तो बलवान की मदद लेना आपके लिये जरूरी है। विचार आता है किसकी मदद ली जाय? अति बलशाली को रक्षक बना लिया जाय तो रक्षण ठीक होगा और सबसे ज्यादा शक्तिशाली को सहयोगी बना लिया जाय तो अति उत्तम। ऐसा कौन शक्तिशाली सर्वगुणों वाला है? क्या वह सूर्य को बनाने वाला हो सकता है क्या हवा पृथ्वी को बनानेवाला, उसको चलाने वाला हो सकता है? क्या वह चन्द्रमा, तारे, ब्रह्माण्ड, बनाकर धारण करनेवाला हो सकता है? क्या वह अरबों-खरबों जीवों में प्राण डाल उनका भरण-पोषण करने वाला हो सकता है? अनुभव में यह सिखाया है-वेद-विज्ञान ने यह बताया है कि ऐसा परम-शक्तिशाली परमश्वर ही है। लिहाजा परमात्मा को धर्म-रक्षण के संग्राम में हमें सेनापति स्वीकारना होगा। उसके संदेशों तथा निर्देशों का पालन करना होगा। वह ऐसा सच्चारक्षक साथी एवं सेनापति है जो धर्म-संग्राम शुरू होने के पहले दिशा दिखाता है और उसकी आज्ञा पालन करने वालों का अंततः साथ निभाता है और विजय दिलाता है। इसलिये धर्म की रक्षा परमात्मा के संदेशों, निर्देशों को पालन करने से ही होगी, ऐसा जानना, मानना तथा पालन करना हमारे लिये अभीष्ट है।

साधारण शिक्षा प्राप्त एक प्रवचनकार ने जीवन यात्रा कपड़े की दुकान पर काम करने से शुरू की थी। अपने पुरुषार्थ तथा धार्मिक प्रवचनों के माध्यम से एक कम्पनी में पांच सौ करोड़ रुपये का शुद्ध सफेद धन लगाया। इसी प्रकार प्रवचनों के माध्यम से प्रचुर मात्रा में धन संग्रह एक अन्य प्रवचनकारी ने किया। किन्तु ऐसे प्रवचनकर्ता धर्म तथा राष्ट्र की रक्षा में कितने सहभागी हैं यह तय करना भारतवर्ष के नागरिकों का काम है। मैं एक ऐसे आर्यसमाजी स्वामी जी (नेता को जानता हूं जो युवकों को बुजुर्ग भद्रजनों के खिलाफ हिंसक बल प्रदर्शन के लिये उकसाते हैं जिनका मुसलमानों के प्रति एक तरफा रुझान एवं प्यार जगजाहिर है। (हालांकि भारत के मुसलमानों की उनमें कोई रुचि नहीं है)। शायद लोकसभा सदस्य बनकर केन्द्र सरकार में मंत्री बनने का सपना संजोये हुए हैं। एक जानकार के अनुसार स्वामीजी अपने दिल्ली प्रवास में अपने समर्थकों को एक पांच सितारा होटल में नाश्ता कराने ले गये। नाश्ते के पश्चात् बिल-भुगतान के आग्रह पर व्यवस्थापक को धमकी दी कि होटल बनाते समय बाल-मजदूरों से काम करा कर शोषण किया गया है। होटल में मौजूदा नाश्ता कर चुके युवक प्रतिकार में तुम्हें दंडित करेंगे। कहिये क्या चाहते हैं? बलि का भुगतान या दंड। व्यवस्थापक ने स्वामीजी को सादर चले जाने का आग्रह किया। विचार करें कि राष्ट्र रक्षण का ऐसे स्वामी-संन्यासी तथा उनके समर्थक धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं या नहीं। उन्हें राष्ट्र रक्षण का नेतृत्व सौंपा जा सकता है या नहीं।

पं. जवाहरलाल नेहरू जब भारतवर्ष के प्रधानमंत्री थे तब चीन ने अपनी शक्ति परीक्षण के लिये भारत पर हमला किया। चीन की कामयाबी तथा भारत की कमजोरी पर चिन्तन पर निष्कर्ष निकला कि रक्षा-साधनों की कमी के कारण भारत की दुर्दशा हुई। अनेक सिपाही रक्षा तथा अर्थ साधनों की कमी के कारण इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए। देश के इस आघात को प्रत्येक नागरिक ने महसूस किया। ढांणी, गांव, शहर के प्रत्येक हिस्से से बहिनों व माताओं ने अपने सामर्थ्य से ज्यादा सोने के जेवर राष्ट्रीय-रक्षाकोश में दिये। मेरी दीदीजी ने भी दो तोले का सिर पर बांधने का सोने का बोर इस कोष में दिया। आज

देश के प्रत्येक नागरिक को सच्चरित्रता एवं राष्ट्रप्रेम की शिक्षा से ओतप्रोत करना होगा। द्वेषपूर्ण चरित्रवाले स्वार्थी अर्थ-लुटेरे संगठन को कमजोर करने वाले नेतृत्व करने वाले अधर्मी व्यक्तियों को भी शिक्षा देकर स्वच्छता लानी होगा। भामाशाह के चरित्र को उजागर करना होगा।

निश्चित भौगोलिक स्थिति में रहने वाले समूह के व्यक्तियों का रक्षण भी संगठन द्वारा परम शक्तिशाली प्रभु के सेनापतित्व में सम्भव है। संगठन के लिये राष्ट्रवासियों का मन, चित तथा संकल्प एक हो। आपस में द्वेष न हो। ऐसा करना नितान्त आवशयक है। ईश्वर तत्व के नजदीक एवं उसकी शैली के अनुरूप कार्य करने वाले जीवित राम, कृष्ण, गुरु गोविन्दसिंह, भगतसिंह, दयानन्द को हमें खोजना होगा। उन्हें हमारे बीच में लाना होगा। उनकी संगति व मार्गदर्शन में हमें उद्धृत रहना होगा। दुर्गुणी-स्वार्थी लोगों के नेतृत्व की उपेक्षा करनी होगी। धर्म में आस्था एवं श्रद्धा न रखने वाले छद्म राजनेताओं का बहिष्कार करना होगा। लोकसभा, राज्यसभा, विधान सभाओं, नगरपालिकाओं, पंचायतों में धर्मप्रेमी प्रतिनिधियों का हमें चयन करना होगा। जातिवाद द्वारा नेतृत्व करने वालों पर अंकुश लगाना होगा। मानववाद का आचरण करने वालों को आगे लाना होगा। समाज में गुणात्मक आचार-व्यवहार करने वालों का मान-सम्मान किया जाना होगा। दुष्टों को प्रताड़ित एवं दण्डित करने की व्यवस्था दिलाने वाले प्रतिनिधियों का चयन होगा। झूठ, लम्पट, कपटी, दुराचारी-अनाचारी नेतृत्व करने वाले व्यक्तियों को प्रोत्साहन न देकर उनसे बचने का जनसाधारण को स्वभाव बनाना होगा।

ऐसा चाहने तथा उसे क्रियान्यन करने के क्या उपाय हैं? उन उपायों का निर्धारण करना होगा। राष्ट्र के नर-नारी अपने शरीर को बलशाली एवं निरोग बनाए। प्रत्येक नागरिक अपने मन को सुदृढ़ कर पवित्र रखें। जीवात्मा को विद्या तथा तप की अग्नि द्वारा रोशनी प्रदान करें। बुद्धि को ज्ञान द्वारा शुद्ध करें। प्रत्येक नागरिक को यह शिक्षा दी जानी अनिवार्य है। प्रात: तीन या चार बजे उठें। प्रभु स्मरण करें। सद्‌गुणयुक्त कर्म करने का वृत्त लें। ईश्वर प्रदत्त धन तथा मनुष्यकृत धन कमाने की दिनचर्या बनायें। श्रद्धा से दिनचर्या का पालन करें। मन-विषयक यजुर्वेद के (३४-१ से ६) मंत्रों का ध्यान कर ८ से ९ बजे सो जाएं। इस क्रम को मृत्यु-वरण तक सूर्य की भांति नियमपूर्वक करते रहें। राष्ट्र का प्रत्येक नर-नारी किसी भी वर्ण, मजहब, समुदाय एवं समाज का हो यदि निरन्तर उपरोक्त दिनचर्या अपनाकर स्वयं को सशक्त करेगा तो निश्चय ही धर्म एवं राष्ट्र की सुरक्षा को कोई ख़तरा नहीं होगा। यह संयुक्त संगठित प्रयास शुभ फलदायी होगा।

धर्म द्वारा सदाचार धारण कर राष्ट्र का प्रत्येक नर-नारी धर्मप्रेमी मजबूत व्यक्तियों के हाथों में राष्ट्र का नेतृत्व सौंपेंगे तो राष्ट्र रक्षा के कार्य में सफलता मिलेगी।

-जी-७७, शास्त्री नगर, जोधपुर

(पृष्ठ २९ का शेष)

अपना भवन दान दे दिया था। १९२५ में लालाजी स्वराज्य पार्टी की ओर से केन्द्रीय असेम्बली में जालन्धर क्षेत्र से निर्विरोध चुन लिये गये।

ब्रिटिश सरकार द्वारा नियुक्त पूर्ण अंग्रेजों का कमीशन-जिसे साइमन कमीशन कहा जाता है-भारत की वैधानिक योग्यता की जांच के लिए १९२८ फरवरी में भारत आया। कांग्रेस ने इसके पूर्ण बहिष्कार की घोषणा की। ३० अक्टूबर को कमीशन लाहौर पहुंचा। इस बहिष्कार-आन्दोलन का नेतृत्व लाला जी कर रहे थे। भारी जुलूस "साइमन लौट जाओ" नारे लगाता हुआ स्टेशन पर सर्वथा शान्त और अनुशासन में खड़ा था। अधिकारियों ने उसी समय शान्त जुलूस पर पुलिस को डंडे चलाने का आदेश दे दिया। लालाजी पर खास तौर से लाठी-प्रहार किया गया और स्वयं सीनियर सुपरिटेण्डेण्ट स्काट ने यह कार्य किया। स्काट का साथी साण्डर्स भी इसमें सहायक था। लालाजी ने बड़ी वीरता से इन सतत लाठी-प्रहारों को सहा। आपने ललकार कर पुलिस अफसर का नाम पूछा, पर इसका उत्तर अधिक दंड-प्रहार से मिला। इस मार से ६४ वर्षीय वृद्ध लालाजी चारपाई से फिर न उठ सके। लालाजी व जनता की ओर से इस कांड की खुली और निष्पक्ष जांच की मांग की गई, पर नौकरशाही राजी न हुई।

इस बीमारी में भी लालाजी कार्य करते रहे। १६ नवम्बर को उनकी हालत बिगड़ गयी। ३० अक्टूबर की शाम को सार्वजनिक सभा में लालाजी ने जो शानदार शब्द कहे थे वे सचमुच ब्रिटिश अत्याचारियों के लिए भयंकर चेतावनी के रूप में थे और इतिहास में सदा स्मरण किये जाएंगे। आपने कहा-"मुझ पर किया हुआ प्रत्येक प्रहार ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की एक कील सिद्ध होगा।"

१७ नवम्बर भोर वेला में, देश के लगभग आधी सदी का यह साहसी, वीर, अदम्य, उत्साही और बहुमुखी प्रतिभाशाली नेता समूचे देश को शोकसागर में डुबोकर मातृभूमि पर बलिदान हो गया। ०-०-०

खुशियों का खजाना

❒ देवराज आर्यमित्र

यदि आप हमेशा खुश रहना चाहते हो तो निम्नलिखित तथ्यों पर ध्यान दीजिए और आप उचित समझते हों तो अमल करना आरम्भ कर दीजिए। आपके जीवन में, घर में खुशियां आने लगेंगी। देखते-देखते महीनों वर्षों में आप खुशहाल हो जाओगे। चारों ओर खुशी का ही वातावरण नजर आयेगा और दु:ख में भी सुख का अनुभव करोगे।

१. यह प्रकृति का अटल नियम है कि यदि आप खुश रहना चाहते हो तो अन्य प्राणियों को भी खुश देखना पसन्द करो। किसी के प्रति मन में ईर्ष्या द्वेष का भाव मत रखो। जलचर, थलचर, नभचर किसी भी प्राणी को मत सताओ। सबके प्रति हृदय में प्यार रखो। यदि आप किसी दुखिया की सहायता नहीं कर सकते तो उसके दु:ख में दु:खी होकर उसका कष्ट शीघ्र दूर करने के लिए प्रभु से विनम्र प्रार्थना ही करो। कोई प्राणी आप को कष्ट देता है या नुकसान पहुंचाता है तो उससे बचने के लिए रक्षा का यथायोग्य प्रबन्ध करो।

२. कभी झूठ मत बोलो। झूठ को त्याग कर सच बोलो। सच कहने में बड़ा आनन्द है। यदि आप से कभी कोई गलती या अपराध हो गया हो वो छोटा या बड़ा है, उसे स्वीकार कर लो। सच-सच बताने में अपना अपमान मत समझो। यदि आप झूठ बोलकर छुपाने की कोशिश करेगे तो एक झूठ के साथ अनेक झूठ बोलते रहोगे फिर भी सच्चाई का एक दिन पता चल ही जाता है। सच बताने में एक बार ही कष्ट होता है, उसमें शर्म भी आती है परन्तु बार-बार लज्जित नहीं होना पड़ता है। इंसान गलती का पुतला है। अज्ञानता और अप्रसन्नता के कारण प्राय: जाने अनजाने में गलती हो ही जाती है मगर उस गलती का जो पश्चाताप करता है और भविष्य में फिर कभी न करने की प्रतिज्ञा करता है वही वास्तव में मनुष्य है। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिए सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

३. कभी किसी की वस्तु को चुराने, उठाने और बिना आज्ञा के छूने की चेष्टा मत करो। सारे दिन मेहनत करो। परिश्रम और पुरुषार्थ से जो प्राप्त होता है उससे ही सन्तुष्ट होकर निर्वाह करो। पराई वस्तु को देखकर कभी लालच मत करो। यह लालच बुरी बला है। देखो थोड़े लालच के पीछे व्यक्ति फंस जाता है और अपनी मेहनत की कमाई भी खो देता है। चोरी जारी और जुआरी करने वालों के अनेक उदाहरण हैं। जो दण्ड भुगत रहे हैं। विषय विस्तार के कारण यहां वर्णन नहीं कर रहा शिक्षा ग्रहण करने के लिए निम्न दोहे पर विचार करो-

मक्खी बैठी शहद पर, पंख लिए लिपटाय।
हाथ मले और सिर धुने लालच बुरी बलाय।।

नीति कहती है ''पर द्रव्येषु लोष्ठवत्'' अर्थात् दूसरे की वस्तु को मिट्टी के समान समझों जब आप ऐसी भावना रखोगे तो आपकी वस्तु को भी कोई नहीं उठाएगा और उठाएगा तो सजा पाएगा।

इस संसार में सबसे पहला सुख है **निरोगी काया** काया कब निरोग रहेगी जब शरीर में नया खून बनता रहेगा, नया खून कब बनेगा जब पाचन क्रिया (हाजमा) ठीक रहेगा। हाजमा कब ठीक रहेगा जब सख्त मेहनत करोगे। मेहनत करोगे तो भूख लगेगी, खाया पिया शीघ्र पच जाएगा। रात को नींद भी गहरी लगेगी, चाहे पत्थरों पर ही सोना पड़े, वहीं नींद आ जाएगी जबकि धनवान् नींद के लिए तरसते हैं, नींद आने वाली गोलियां खाते हैं। आप सख्त मेहनत तब ही कर सकते हो जब शरीर में शक्ति होगी, बल होगा। शक्ति और बल प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करना परम आवश्यक है। ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास और बड़ी से बड़ी विपत्ति को भी सहन कर सकता है। लोग क्षणिक स्वाद के लिए संयम को खोकर मूल्यवान् धातु को शरीर से निकालकर अपने पांवपर आप कुल्हाड़ी मारते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन करने से वृद्ध अवस्था नहीं आती और आती है तो फिर भी युवा जैसा नजर आता है। जीवन में उमंग उत्साह बना रहता है और शरीर में सुख का अनुभव होता है।

४. खुश रहने का अन्तिम तथ्य है, अपनी इच्छाओं को कम करो और आवश्यकता को बढ़ने मत दो। आप अपनी आय की सीमा में रहो। आय से अधिक खर्च करने वाला भिखारी बन कर दु:खी रहता है, सदैव कर्जदार रहता है। जीवन को शुद्ध और सरल बनाओ। जितनी आपकी इच्छाएं और आवश्यकताएं कम होंगी उतना ही जीने का मजा आएगा। हम यात्री हैं, जीवन एक यात्राा है। यात्रा के दौरान हमारे पास जितना सामान कम होगा उतनी ही यात्रा में सुविधा रहेगी। अधिक सामान वाला हमेशा परेशान रहता है। अपने पास उतना ही सामान रखो जो बहुत जरूरी है। उर्दू का कवि लिखता है-

आगाह अपनी मौत से कोई बशर नहीं।
सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं।।

प्रिय सज्जनों! भौतिकता की दौड़ में होड़ करना छोड़ दें। यदि संग्रह करना चाहते हो, तो अपने अन्दर शारीरिक और आत्मिक बल का संग्रह करो। यही सबसे बड़ी दौलत है, जिसे कोई चोर चुरा सकता नहीं, कोई बदमाश छीन सकता नहीं, यह वह दौलत है जो मरते दम तक तो आपके साथ रहेगी।

-डब्ल्यू जैड-४२८, हरिनगर, नई दिल्ली-६४

गाय कृषि और किसान एक त्रिभुज

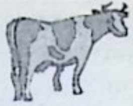

❒ खुशहालचन्द आर्य

त्रिभुज की जैसे तीन भुजाएं (रेखाएं) समान होती हैं और एक दूसरे पर आधारित, सम्बन्धित व आश्रित रहती हैं तथा तीनों का महत्व भी प्रायः समान-सा होता है। एक का काम दूसरे के बिना और दूसरी का काम तीसरी के बिना अधूरा रहता है या यह कहिये इन तीनों में से किसी एक को निकाल दें तो बाकी दोनों का कोई विशेष महत्व नहीं रह जाता इसलिये यह तीनों भुजाएं एक दूसरे के पूरक हैं। ठीक इसी प्रकार गाय, कृषि और किसान का भी यही सम्बन्ध है। वे भी एक दूसरे पर आधारित, सम्बन्धित व आश्रित हैं। इनका भी महत्व प्रायः समान ही है किसी एक को अलग कर देने से बाकी दोनों अधूरे हो जाते हैं, अर्थात् यह भी एक दूसरे के पूरक हैं। इन तीनों पर ही व्यक्ति, गृहस्थ, समाज, राष्ट्र व विश्व टिका हुआ है। हम देखते हैं कि गाय के गोबर से बनी खाद खेती में काम आती है जिससे फसल अधिक पैदा होती है और जमीन की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है। गाय के बछड़े हल जोतने के काम आते हैं जिससे पैदा हुआ अन्न, फल व वनस्पति से किसान अपने परिवार का पालन-पोषण करता है, साथ ही प्राणीमात्र का पालन भी होता है। खेत में पैदा हुआ घास जो मनुष्यों के खाने के काम नहीं आता उसे गाय खाकर उसके बदले किसान को अमृत के समान दूध देती है और उसके बछड़े उसी घास को खाकर खेत में हल जोतते हैं जिससे किसान को हर किस्म का अन्न उपलब्ध होता है। इसमें से किसान कुछ अन्न से अपने परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है और कुछ अन्न को बेचकर घर व मकान बना लेता है जिससे वह सर्दी, गर्मी व वर्षा से अपनी रक्षा कर पाता है गाय के दूध से किसान घृत निकालकर उससे अनेकों प्रकार की मिठाईयां व बढ़िया भोजन बनाकर स्वयं खाता है। अपने पर्व-त्यौहार मनाता है और अपने मित्रों, सम्बन्धियों, अतिथियों व विद्वानों का सत्कार करता है। दूध से बनी दही, छाछ से साग व सब्जी की आवश्यकता भी पूरी करता है। गाय का दूध व घृत शरीर व बुद्धि के लिये कितना लाभदायक, पौष्टिक व स्वास्थ्यवर्धक है, यह तो किसी से छिपा नहीं।

किसान गाय के घृत से यज्ञ करके अपने आस-पास के वातावरण व वायुमण्डल को शुद्ध व पवित्र करता है जिससे स्वयं तो लाभान्वित होता ही है साथ ही पड़ौस में रहने वाले मित्र व शत्रु भी उसका लाभ उठाते हैं। वैसे तो यज्ञ करने वाले का कोई शत्रु नहीं होना चाहिए कारण वेदों के मंत्रों से ही यज्ञ किया जाता है। वेद सबको मित्रता की दृष्टि से देखने का आदेश देता है। कहता है कि चरित्र को महान और मन को उदार बनाकर सबको मित्र की दृष्टि से देखो और सभी तुमको मित्र की दृष्टि से देखें। फिर भी कोई शत्रु हो तो वह भी लाभ उठाता है, इसीलिये वेदों में ''यज्ञोवै श्रेष्ठतम् कर्मः'' यज्ञ को सर्वश्रेष्ठ कर्म कहा गया है। यज्ञ गाय के घृत से ही होता है अन्य पशुओं के घृत से नहीं। वेद व गीता के आधार पर बृहत् यज्ञों से वृष्टि भी होती है सो अनावृष्टि (अकाल) के समय सब किसान मिलकर गाय के घृत से वृहद् यज्ञ करके वृष्टि भी करवा सकते हैं और अकाल से होने वाली हानि से बच सकते हैं।

किसान गाय के बछड़े व बछड़ियों को किसी किसान या घर में पालने वाले को बेचकर उन रुपयों से अपने अन्य जरूरी काम विवाह, शादी की रस्में पूरी कर सकता है। इस प्रकार गोवंश किसान के परिवार व खेती के लिये अति आवश्यक व उपयोगी है। जैसे गाय कृषि पर और कृषि गाय पर निर्भर व आश्रित है वैसे ही किसान इन दोनों पर और यह दोनों किसान पर आश्रित हैं कारण किसान इनको पालता व जोतता है इसलिये यह तीनों एक दूसरे पर आधारित व आश्रित हैं। यानि तीनों का परस्पर अटूट सम्बन्ध है। यहां पर यह लिखना भी उचित है कि इन तीनों पर ही विश्व का जीवन, व्यवसाय व उद्योग चलता है।

यदि हम पूरी सृष्टि का अवलोकन करें तो हमें विदित होगा कि सारी सृष्टि ही त्रिभुजमय है। यहां तक कि प्रारम्भ में वेदों में प्रतिपादित त्रैतवाद जिसमें ईश्वर, जीव और प्रकृति इन तीन सत्ताओं को अनादि व अनन्त माना है। यह त्रैतवाद भी त्रिभुज की भांति ही एक दूसरे पर आश्रित है क्योंकि वेदों के अनुसार ईश्वर, जीव के लिये प्रकृति यानि परमाणुओं द्वारा सृष्टि की रचना करता है वैसे ही किसान भी गाय का सहयोग लेते हुए अपने परिवार व गाय का पालन कृषि द्वारा करता है। इसमें किसान ईश्वर का गाय जीव का और कृषि प्रकृति का कार्य करती है। इसमें इतना अन्तर जरूर है कि किसान एक मनुष्य होने के नाते गाय का पालन और कृषि का जोतना अपने स्वार्थ के लिये करता है परन्तु ईश्वर का अपना कोई स्वार्थ नहीं होता वह अपने परोपकार स्वभाव से ही निःस्वार्थ भाव से जीव के लिये सृष्टि रचता है।

किसी काम को सुचारू रूप से चलाने के लिये यह तीन वाला फारमूला या प्रक्रिया हर जगह व हर कार्य में लागू होती है। एक करने वाला, एक जिसके लिये काम किया जाता है और एक जिसके द्वारा काम किया जावे। जैसे एक दुकान में एक दुकानदार जो दुकान को चलाता है, एक ग्राहक जिसके लिये दुकान की है, और दुकान का माल जो ग्राहक के लिये रखा गया है। इन तीनों से जैसे एक दुकान चलती है वैसे ही संसार के सब काम इन तीनों से ही चलते हैं। चाहे वह लुहार हो, चाहे सुनार, कुम्हार या बढ़ई (खाती) क्यों न हो। मालूम तो ऐसा होता है कि सारा विश्व ही तीन अवस्थाओं या गतियों से बंधा हुआ है। सृष्टि की तीन गति है उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय। ओ३म् भी तीन अक्षरों से बना है-अ-उ-म्। "अ" उच्चारण से मुंह खुलता है इसलिये उत्पत्ति का, "उ" से मुंह खुला रहता है इसलिये स्थिति का, और "म" से मुंह बन्द हो जाता है इसलिये प्रलय (समाप्ति) का बोध करवाता है। ईश्वर भी तीन ही काम करता है पहला प्रलय की स्थिति से सृष्टि की रचना करना, दूसरा सृष्टि को सुचारू रूप से व सुव्यवस्थित ढंग से चलाने के लिये जीवन को उसके कर्मानुसार फल देना और तीसरा सृष्टि की अवधि के अनुसार उसको समाप्त करके प्रलय की स्थिति में रखना।

कुछ लोग कह देते हैं कि इस वैज्ञानिक युग में जहां यूरिया खाद का आविष्कार हो चुका है जिसके डालने से चार-पांच गुनी फसल जमीन से ले सकते हैं और ट्रैक्टर का जमाना आ गया है जिसके द्वारा बैलों से दस गुणी ज्यादा जमीन जोती जा सकती है। अब गाय व बैल को कौन पूछता है? उनका यह कहना सत्य जैसा प्रतीत होता है परन्तु उनका यह कहना सत्य नहीं किन्तु भ्रामक है। आप को मालूम ही है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है। यहां पूरी आबादी का सत्तर करोड़ ग्रामीण किसान हैं जिनके पास जमीन बहुत कम है और आर्थिक सृष्टि से कमजोर हैं। उनको ट्रैक्टर की बजाय बैलों से खेती करना ही लाभदायक है कारण थोड़ी जमीन में बैलों से ही खेती करने से उसके ऊपर ख़र्च कम आता है और बैल ही थोड़ी जमीन को अच्छी प्रकार जोत सकते हैं। ट्रैक्टर के लिये बड़ी जमीन चाहिए। साथ ही बैलों का गोबर और मूत्र खाद के रूप में काम आ जाता है बैल उसी खेत का घास खाकर काम करते रहते हैं जिससे किसान को कोई अलग परेशानी नहीं होती। बैलों से खेती करने से गोपालन भी हो जाता है वैसे भी पैट्रोल व डीजल की महंगाई से सभी लोग दुःखी हैं। दूसरी बात यह है कि गोबर की खाद यूरिया खाद से कहीं अधिक उत्तम व लाभप्रद होती है। यूरिया खाद से जमीन बंजर बन जाती है। इसके विपरीत गोबर की खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है और उससे होने वाला अन्न, फल व वनस्पति से कहीं अधिक स्वादिष्ट, पौष्टिक व गुणकारक होते हैं। यूरिया खाद से अन्न की तादाद (क्वांटिटी) तो जरूर बढ़ती है किन्तु उसमें गुणवत्ता (क्वालिटी) कम होने से वह स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है।कारण बनावटी वस्तु प्राकृतिक वस्तु से हमेशा कमजोर होती है जेसे नकली दांत असली दांतों से कमजोर होते हैं और भी शरीर के कई अंग जैसे हृदय (हार्ट), गुर्दा (किडनी) भी अप्राकृतिक लगाई जाती हैं किन्तु यह असली से कमजोर होते हैं। आज जो विश्व का स्वास्थ्य व चरित्र का पतन हो रहा है उसके पीछे यूरिया खाद से पैदा हुए अन्न व फलों को खाने का भी कई कारणों में से एक कारण है। इसलिये गऊ के गोबर से बनी खाद और बैलों से खेत जोतकर ही भारत का किसान लाभ प्राप्त कर सकता है और सुखी बन सकता है।

खुशी की बात यह है कि गोवंश को बचाने के लिये आजकल कई गोशालाएं तथा कुछ व्यक्तिगत व्यवसायी भी गऊ के गोबर, मूत्र, दूध, दही, घी (पंचगव्य) से अनेकों किस्म की दवाईयां बनाने लगे हैं। यहां तक कि कैंसर और टी.बी. जैसी घातक रोगों की दवाई भी पंचगव्य से बनने लगी हैं। साथ ही धूप, अगरबत्ती, साबुन, फिनाईल आदि भी बनती हैं जो काफी लाभदायक सिद्ध हुई हैं। जिससे गाय के गोबर व मूत्र की काफी मांग बढ़ गई है। दवाई बनाने वाले गोबर और गोमूत्र को किसानों के घरों पर जाकर अच्छे भावों में खरीद लेते हैं और अपने प्रयोगशाला में ले जाकर दवाईयां बनाते हैं इससे लाभ यह होने लगा है कि बूढ़ी गाय व बैल जो कटने के लिये कसाईयों को बेच दिये जाते थे। अब उनके गोबर व मूत्र के लोभ से बचना कम हो गया है, कारण जो बूढ़ी गाय या बैल एक दिन में बीस रुपयों का चारा खाते हैं, उसके गोबर व मूत्र को बेचने से चालीस रुपये किसान को मिलने लगे हैं तब कौन ऐसा मूर्ख होगा जो गोवंश को बेचेगा! यदि दवाईयों को बनाने का काम भविष्य में बढ़ता गया तो गोवंश की हत्या होनी बन्द हो जायगी इसलिये मेरा प्रत्येक सच्चे भारतीय से विनम्र निवेदन है कि वह पंचगव्य से बनी दवाईयां का ही प्रयोग करे और एक या दो गाय अपने घर पर रखकर पाले जिससे उसके दूध, घी, दही व छाछ का आनन्द उठा सके और गोबर व मूत्र का भी लाभ उठा सके। जो घर पर गऊ नहीं रख सकता वह

(शेष पृष्ठ ५० पर)

आर्यो! प्रश्न अस्मिता की रक्षा का है

❒ ब्र. अमितशास्त्री व्याकरणाचार्य

प्राचीन काल में हमारा आर्यावर्त जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र के रूप में सम्पूर्ण भूमण्डल में सर्वोत्तम देश था। जिसके विषय में भगवद्दयानन्द सरस्वती ने कहा "भूमण्डल में आर्यावर्त देश के सदृश कोई देश नहीं है. .. यही सच्चा पारसमणि है..।" इससब ऐश्वर्य का कारण था कि इस देश के लोग वेदानुकूल जीवन जिया करते थे तथा वैदिक ज्ञान विज्ञान व वेदोक्त मनु संविधान का पूर्ण सुखद साम्राज्य था। दुर्भाग्य से महाभारत के युद्ध में हमारे देश ही क्या विश्व को बड़ी हानि हुई। वैदिक ज्ञान विज्ञान के साथ मानवीय चरित्र का पतन होता गया और वैदिक धर्म के स्थान पर नाना मत मतान्तरों का साम्राज्य हो गया। इन मत मतान्तरों व जन्मना वर्ण व्यवस्था ने इस देश व समाज को जर्जर बना दिया। परस्पर खण्ड-खण्ड होता प्यारा देश पराधीन हुआ। राजनैतिक दृष्टि से यह देश विदेशियों का दास बना तथा धार्मिक दृष्टि से देश की जनता पाखण्डियों के अधीन होकर नाना दु:खों से पीड़ित होती गई। इन मत मतान्तरों में कुछ तो वेद विरोधी परन्तु सदाचार के पोषक थे तो कोई वेद विरोधी नितान्त भोगादी नास्तिक थे तो कहीं वेद के नाम पर बीभत्स कुकर्मों को ही धर्म मान रहे थे। ऐसे कुकर्मों के पोषक बड़े-बड़े तथाकथित धर्माचार्य बने इस देश को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे थे। ऐसे में अनेक समाज सुधारक अपने-अपने समय में अपने-अपने ढंग से काम करके मानव जाति के उपकार के यत्न में भी लगे थे तो कई धूर्त अपने-अपने मजहब चला रहे थे। उधर जो सुधारक सद्भावना से प्रेरित होकर सुधार कर रहे थे उन्हें भी कोई स्पष्ट दिशा का बोध न था। वे सब सत्य विद्याओं तथा धर्म मूल वेद से अति दूर होने के कारण स्वयं एक नवीन मत का कारण बनते चले गये। अनेक देवी देवों की मान्यता ने आर्य जाति को बांट दिया था। इस प्रकार सर्वथा अन्धकारपूर्ण अवस्था थी। आर्य मुसाफिर की वेदना का स्वर उसका यथार्थ चित्रण करता है-

वेद विद्या छुप गई थी, कोई भी रक्षक न था।
छा गयी मुर्दानी हा! सारे भारतवर्ष पर॥

ऐसे विकट काल में दयानन्द जैसा ऋषि हजारों वर्ष के घनघोर अन्धकार को चीरता हुआ सूर्य सम उदित हुआ और संसार के समस्त श्रेष्ठ पुरुषों को नारा दिया, "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" उस ऋषि ने न केवल वेद भाष्य में अपितु ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में यह सिद्ध करने का सफल प्रयास भी किया कि वेद में सारी सत्य विद्यायें बीज रूप में विद्यमान हैं। दुर्भाग्य से ऋषि के पश्चात् श्री पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, श्री पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कालर आदि कुछ विद्वानों को छोड़कर किसी ने भी ऋषि की इस भावना को समझने का प्रयास नहीं किया। सम्पूर्ण आर्य जगत् राष्ट्रीय व सामाजिक कार्यों के तात्कालिक रूप से लाभकारी प्रतीत हो रहे थे, में ही लगा रहा। बड़े-बड़े आन्दोलन हुए क्रान्तिकारी कार्य हुए परन्तु सत्यार्थप्रकाश के सुधारक व खण्डनात्मक पहलू को लेकर हुए। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि व गोकरुणानिधि को आर्यजगत् ने सर्वथा भुला दिया। न तो वेद में सब विज्ञानों के मूल खोजने का यत्न हुआ, न संस्कारों के यथार्थस्वरूप को लाकर मानव निर्माण योजना को प्रचारित किया गया और न गाय के अर्थशास्त्र को समझकर प्रयोगात्मक केन्द्र रूपी एक भी गोशाला का निर्माण हुआ।

आज आर्यसमाज का दुर्भाग्य है कि हम कहीं के भी नहीं रहे। राष्ट्र को स्वतंत्र कराने वाले आर्य समाज को स्वतंत्रता के पश्चात् कोई पूछने वाला नहीं है। आज के संगठन व महापुरुष राष्ट्रवादी माने जाते हैं जो प्राचीन आर्यसमाज व ऋषि दयानन्द की अंशमात्र भी बराबरी नहीं कर सकते। महान् प्रभुभक्त ऋषि दयानन्द को हम लोग आध्यात्मिक महापुरुषों में भी स्थान नहीं दिला पाये। गो रक्षा के लिए आन्दोलन करने वाले अब उसका अर्थशास्त्र सिखाने का दावा करने वाले आर्यसमाज का स्थान भी अन्य अनेक संगठन ले रहे हैं। हमारे महान् दार्शनिक दयानन्द को भारत वा विश्व के दार्शनिकों में भी स्थान हमारी दुर्बलता के कारण नहीं मिल पाया। जिस दयानन्द रूपी शरीर में वेदार्थ आत्मा के समान निवास करता था। सत्य प्राण के समान विचरता था, उस वेद की सत्य चर्चा में भी हम अपने ऋषि को प्रतिष्ठित नहीं कर पाये। कहीं किसी संसार में आज भी सायणादि के वेद भाष्यों को ही प्रधानता मिल रही है। सितम्बर २००० में महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर में "नई सहस्राब्दी एवं वैदिक चिन्तन" विषय पर आयोजित गोष्ठी में हमारे ही घर में सायण जी के भक्तों का साम्राज्य था। विगत वर्ष अगस्त में बंगलौर में आयोजित वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ वैदिक साइंसेज में ३२० पत्र-वाचक विद्वानों में से सम्भवत: मात्र

१५-२० आर्यसमाजी होंगे। शांकर अद्वैतवाद, बिग बैंग थ्योरी आदि की ही चर्चा चल रही थी। त्रैतवाद का नाम लेने वाला कोई विरला ही था वह भी दबी जुबान से। ऋषि दयानन्द वा आर्यसमाज का नाम लेने वाले गैर आर्यसमाजी नहीं थे। क्या कारणहै कि चर्चा हो और उसमें ऋषि वा आर्यसमाज की चर्चा तक न हो। इसका दोष हमारा है। हममें वह सामर्थ्य नहीं है? सात देशों से आये लोगों में हमारे विचार के लोग क्यों नहीं थे? ऐसे में श्री अग्निव्रत नैष्ठिक ने अपने पत्र में आधुनिक विज्ञान की नवीनतम धारणाओं को खुली चुनौती दी साथ में पत्र विषय से हटकर शंकर अद्वैतवाद एवं अंग्रेजी भाषा की दासता को भी खुली चुनौती देकर सारे विद्वानों को चमत्कृत कर दिया। ऐसा ही आग्नेय स्वरूप कभी आर्यसमाज का था, वह आज क्यों समाप्त हुआ? यह सोचने के लिए हमारे कर्णधारों ही नहीं बल्कि विद्वानों, संन्यासियों वा ब्रह्मचारियों के पास अवसर ही नहीं है। आर्यजगत् को यह जानकर आश्चर्य होगा तो कई अविश्वास करेंगे कि आचार्य श्री नैष्ठिक को उसी पत्र विषय पर विश्वविख्यात वैज्ञानिक संस्थान, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र मुम्बई के वैज्ञानिकों से चर्चा हेतु मुम्बई बुलाया गया और कई दिन तक चर्चा हुई। अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक श्री डॉ. आभास कुमार मित्रा, हैड थ्योरिटीकल एस्टोफिजिक्स, आचार्य श्री से इतने प्रभावित हो गये कि मित्र ही बन गये और आचार्य जी द्वारा उसी पत्र की व्याख्या में लिखित पुस्तक ''सृष्टि का मूल उपादान कारण'' की प्रस्तावना ही लिख डाली।

आचार्य जी ने उन तथा अन्य वैज्ञानिकों को कहा कि हम अपने मस्तिष्क से अथवा वैदिक वाङ्मय से कुछ ऐसे तथ्य आपको दें जिन पर आप शोध करें तो वेद का महत्व आपको ज्ञात होगा, आपका समय बचेगा और वेद व भारतीय मनीषा की प्रमाणिकता विश्व में बढ़ेगी। सौभाग्यश उन्होंने इस प्रस्ताव को स्वीकारा। उन्होंने आचार्य जी की वैज्ञानिक प्रतिभा पर अतीव आश्चर्य व श्रद्धा प्रकट की। इस बात को जानकर मुम्बई के वैज्ञानिकों ने अन्य कार्यों को विराम देकर केवल इसी विषय में शोध करने का प्रस्ताव किया। राजस्थान में जैसलमेर जिले के श्री भादरिया जी मठ के महन्त सन्त हरवंश सिंह निर्मल ने आपकी प्रतिभा से प्रभावित होकर आप तथा समस्त सहयोगियों की सम्पूर्ण व्यवस्था का भार वहन करने के अतिरिक्त राष्ट्रीय राजमार्ग १५ पर एक सौ बीघे भूमि दान देने का प्रस्ताव किया। परन्तु ऋषिभक्त आचार्य ने दोनों प्रस्ताव ठुकरा कर न्यास के माध्यम से ही दयानन्द के ध्वज के नीचे ही काम करना प्रारम्भ किया।

यह आर्यजगत् का दुर्भाग्य है कि हमारे कार्य से विश्वस्तरीय वैज्ञानिक आश्चर्यचकित हैं परन्तु हमारे विद्वान व आर्य नेता गहरी नींद में सोये हैं। आज वेदों व वेदभाष्यों पर नये-नये ढंग से प्रहार हो रहे हैं। इधर हम केवल सामान्य उपदेश, भजन, व्यायाम, आसन-प्रदर्शन, भवन निर्माण मात्र से ही पूर्ण सन्तुष्ट हैं। पदों के लिए मारामारी है परन्तु आर्यसमाज की अस्मिता मिट रही है, इस पर दो आंसू बहाने वाले नहीं हैं। पुनरपि हमारे कार्यों को कई आर्य विद्वानों ने भी सराहा है। हमारे कार्य के विषय में कुछ विद्वानों व वैज्ञानिकों के विचार निम्नानुसार हैं :-

१. मैं आशा करता हूं कि अध्यवसायी वैज्ञानिक इस पुस्तक को आदर की दृष्टि से देखेंगे। अत्यंत श्रद्धा.. आश्चर्य का विषय है...मैं व्यक्तिगत रूप से इस पुस्तक के अध्ययन से लाभान्वित हुआ हूं और आशा करता हूं कि दूसरे अध्यव्यवसायी वैज्ञानिक भी मेरी ही भांति इसे पढ़कर लाभ उठायेंगे। -(पुस्तक की प्रस्तावना अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक डॉ. आभासकुमार मित्रा, हैड, थ्योरीटिकल एस्ट्रोफिजिक्स, सैक्शन भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र, मुम्बई)

२. स्वामी अग्निव्रत की पुस्तक का निश्चित ही स्वागत किया जाना चाहिये। हम विश्वास करते हैं कि जाग्रत समाज के सभी घटक स्वामी जी की इस पुस्तक का भरपूर स्वागत करेंगे। (डॉ. जगदीश व्यास, वरिष्ठ वैज्ञानिक भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र, मुम्बई)

३. स्वामी अग्निव्रत नैष्ठिक का यह कार्य अत्यंत साहसिक है। (श्री विजयकुमार भल्ला, एडीशनल चीफ इंजीनियर, न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, मुम्बई)

४. आपकी पुस्तक व शोधकार्य अतीव सुन्दर व महत्वपूर्ण है। अब यह पुस्तक केवल आपकी ही सम्पत्ति न होकर समस्त आधुनिक वैज्ञानिकों की सम्पति बन गयी है। अब हम वृद्ध हो गये हैं। अतः अब आप ही हमारे भविष्य हैं। मैं आपसे मिलने की बहुत इच्छा रखता हूं क्या करूं, शरीर कृश हो चला है...। (वेदार्थ कल्पद्रुम महाग्रन्थ के यशस्वी प्रणेता आचार्य विशुद्धानन्द जी मित्र, वेद मन्दिर, बदायूं (उ. प्र.))

५. आचार्य (स्वामी) अग्निव्रत का यह कार्य अत्यन्त सुन्दर व महत्वपूर्ण है। आप आज आर्यजगत् में नवीन आशा की किरण के रूप में दिखाई दे रहे हैं। (प्रौढ़

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

(पृष्ठ ३ का शेष)

गला काट स्पर्धा का माहौल है, सर्वप्रथम मैं और सबसे पीछे देश-यह सोच आज प्रगतिशीलता की 'निशानी' है। रिश्तों में रिसाव है, बुरे चलन का प्रभाव है, दरवाजों में दूरी है, पड़ोसियों के कुत्सित इरादों पर नेत्र मूंदना स्वयं को उदारता का अवतार साबित करने के लिए जरूरी है, परिवार में भटकाव, बुजुर्गों के प्रति दुर्भाव, चारदीवारी में कैद है घर, राष्ट्रीय सम्पत्तियों से दुराव है और निजी सम्पदा, सम्पत्ति से लगाव है। स्वरों में कठोरता मन में मलिनता, पैरों में जड़ता, शरीर में शिथिलता, सम्बन्धों में साजिश, योजना के बदले षड्यंत्र का सिलसिला, राष्ट्रभाषा का अपमान है तो राष्ट्रधर्म का अता-पता नहीं, वन्देमातरम् पर विवाद है, चित्रपट और दूरदर्शन चैनलों पर नग्नता है राष्ट्रगान पर तू-तू, मैं-मैं। यह है आज 'प्रगति पथ पर सरपट दौड़ रहे स्वराष्ट्र की नवल-धवल तस्वीर। सूचना के नाम पर भयवहता और हास्य के नाम पर फूहड़ता तथा मनोरंजन के नाम पर अपराधों का प्रदर्शन-दर्शन। ये सभी ''यक्ष प्रश्न'' सी चुनौतियां हैं। सम्वैधानिक संकटों का है अम्बार, स्वायत्तशासी निकायों पर हो रहे हैं प्रहार-लौकतांत्रिक संस्थाओं पर खतरों के सघन-घनों का आच्छादन है। संघीय प्रणाली में बढ़ रही है मनमानी-केन्द्र-राज्य सम्बन्धों में वृद्धि पा रही है तनातनी, डॉन और दाऊद की चर्चा, अनेक महापुरुषों की शौर्य-गाथा में साम्प्रदायिकता की गन्ध राष्ट्र के 'प्रबुद्ध जन' को आ रही है, छत्रपति शिवाजी, प्रताप, गुरु गोविन्द का गरिमागान, संकीर्णता का सम्मान बताया जाता है तो 'बुद्धि वारिधियों' के विचार में वेदोद्धारक देव दयानन्द के चिन्तन को संकीर्णता का पर्याय बताया जा रहा है उनकी दृष्टि में मार्क्स और माओ महान हैं तो देवतास्वरूप भाई परमानन्द, लाला लाजपतराय तथा विवेकानन्द का स्मरण करना बुद्धि पर पड़े आवरण का परिचायक है। ऐसा बताते हुए भी ये बुद्धि-विलासी नहीं अघाते। भारत-विभाजक जिन्ना का गुणगान और स्वातंत्र्य वीर सावरकर का चरित्र हनन तथा छिद्रान्वेषण इनकी 'शोध विधा' है। विश्वास का संकट और पसराती जा रही निराशा, रचनात्मक के बजाए विध्वंसात्मक प्रवृत्ति में क्रान्ति का दर्शन क्या ये सब चुनौतियां उपेक्षणीय हैं? वोट की कीमत पर देश का सौदा, तंत्र का राजनीतिकरण और राजनीति का अपराधीकरण आखिर कब तक चलेगा ये सब तमाशा। राष्ट्र को इस गहन तमसावस्था से उबारने की राह है परमपिता परमात्मा की अमरवाणी वेद के 'तमसोमा ज्योर्तिगर्मय' के आह्वान् में-भौतिक सम्पदा पर चारित्रिक सम्पदा के वर्धन-सम्वर्धन की विधा में। 'शस्त्रेण रक्षित: राष्ट्रे-शास्त्र चिन्ता प्रवर्तते' के महान सन्देश के अनुगमन में-माताभूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या' के निहित भाव को राष्ट्र के जन-गण के मन में संचरण में। ज्वलन्त चुनौतियें से पलायन नहीं उनका पूर्ण सिद्धता सहित स्वीकार और अपने उज्ज्वल अतीत से प्रकाश पा वर्तमान के दृश्य-परिदृश्य का सत्यगत और तथ्यगत निरीक्षण तथा 'सत्यमेव जयते नानृतम' के प्रति समग्र आस्था रखकर कर्तव्य पथ और कर्मक्षेत्र में अवतरण। वेद के इस आह्वान् पर समग्र ध्यान देते हुए कर्तव्य निर्वहन का सद्प्रयास है राह। वेद वर्णित इस विश्वास के साथ : सत्य और अनृत तो सदा रहे है, परन्तु मानव की, प्राणिमात्र की सत्य में श्रद्धा होती है और अनृत में अश्रद्धा। हमें दो में से एक के चयन का अधिकार है। हम अपने इस अधिकार का उपयोग करें :-

दृष्टवा रूपे व्याकरोत, सत्यानृते प्रजापति:।
अश्रद्धामनृते अदधात, श्रद्धां सत्ये प्रजापति:।।

वेद, धर्म की पुण्य ज्योति से ज्योतित हो जग सारा

सभी मिलें, मिलजुल कर सोचें, यही हमारी आशा
यही हमारी शुभ्र कामना, और सत्य परिभाषा
मानव है, हम मानव बनकर, केवल जग में रह लें
जितने भी जो आएं संकट, सारे मिलकर सह लें
यही भावना ध्येय लिये, हमने है आज पुकारा
वेद धर्म की पुण्य ज्योति से ज्योतित हो जग सारा।
आशाएं थीं मानवता की उजड़ रहीं जब जग में
अगणित कांटे बिछे हुए थे, सत्य धर्म के मग में
धर्म बना था आड़ पाप की, छाई थी व्याकुलता
सिसक रही थी पुण्य भावना, फैली मूढ़ विषमता
निर्भयता से सारी कलुषित माया को ललकारा,
वेद धर्म की पुण्य ज्योति से ज्योतित हो जग सारा।
कोटि-कोटि की आकुलता से गूंज रही है धरती
पाप ताप में झुलस रहे, सब भोग रहे जिन करणी।
भांति-भांति के मत निर्मित कर भूले भटके प्राणी
खोज रहे हैं ज्योति कहां, पर करते हैं मनमानी
सारे मानव एक बने यह ऊंचा ध्येय हमारा।
वेद धर्म की पुण्य ज्योति से ज्योतित हो जग सारा।

-राकेशरानी

राष्ट्रभक्त पति की फांसी और रामरखी का अनूठा बलिदान

❑ भाई मंगल सैन छिब्बर

धर्मप्राण भारत सती साध्वियों का देश रहा है। वर्तमान समय में भी समय-समय पर पतिव्रता नारियां आदर्श उपस्थित करती रही हैं। मुगलों के समय हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए अपने शरीर को आरे से हंसते-हंसते चिरवाकर अनूठा बलिदान देने वाले भाई मतिदास जी के वंशज भाई बालमुकुन्द दिल्ली में वायसराय की शोभायात्रा पर बम फेंकने के आरोप में गिरफ्तार किए गए थे। वे महान् क्रांतिकारी भाई परमानन्द जी के चचेरे भाई थे।

भाई बालमुकुन्द, मा. अमीरचन्द, अवधबिहारी तथा बसन्तकुमार विश्वास को सन् १९१५ में अंग्रेजों ने फांसी की सजा सुनाई थीं। वे दिल्ली की जेल में काल कोठरी में बन्द थे। ८ मई १९१५ को इन क्रान्तिकारी राष्ट्रभक्तों को फांसी पर चढ़ा दिया गया था। बालमुकुन्द की पत्नी रामरखी महान पतिव्रता महिला थीं। उन्होंने पति के बलिदान के बाद उनके वियोग में आत्मोसर्ग (बलिदान) कैसे दिया इसका वर्णन सुविख्यात आर्य संन्यासी महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी ने रामरखी के शब्दों में अत्यन्त रोचक ढंग से प्रकाशित किया था, जिसे यहां प्रस्तुत किया जा रहा है-फूल खिला था। बुलबुल उसकी सुन्दर सुकुमार पंखुड़ियों को छू-छूकर गाती थी। माली आया। बुलबुल डर के मारे उड़ी। वह फूल के इर्द-गिर्द चक्कर काटने लगी। माली ने बड़ी निर्दयता से फूल तोड़ दिया। उसकी पंखुड़ियों को अलग-अलग करके टोकरे में डाल दिया। बुलबुल चीखी, चिल्लाई, परन्तु व्यर्थ। अन्त में वह बेहोश होकर गिर पड़ी। फूल के पास ही तड़प-तड़पकर वह ठंडी हो गई।

गर्मियों के दिन थे। वे (पति भाई बालमुकुन्द जी) जेल में थे, मैं घर पर थी। छः मास में इसी घड़ी को इंतजार कर रही थी। लोग कहते थे, तू बावली न बन,वे छूट जाएंगे, घर आ जाएंगे। मैं कहती थी, वह दिन कब आएगा? वह सूर्य कब निकलेगा यह रात कब खत्म होगी? वह शुभ घड़ी किस समय आएगी? मैंने दिल्ली काहे को देखी थी। पर वे दिल्ली की जेल में ही रखे गए थे। वहीं तो मुकदमा चल रहा था।. मैं वहां पहुंची, देखा जेल की कोठरियां बहुत भयानक हैं और उनमें से एक के अन्दर जेठ-आषाढ़ की गर्मियों में उन्हें रात को रहना पड़ता है। मैंने पूछा-''आपको सोने के लिए चारपाई मिलती है?''

कहने लगे, ''क्या भोली बनी है। यहां जेल में चारपाई का क्या काम?'' ''तो फिर काहे पर सोते हैं?'' ''कम्बल जमीन पर बिछाकर सो रहता हूं।''''मैं अपने घर आई। लोग रात को खुली छतों पर चारपाईयां बिछाकर सोते हैं। मैं सबसे निचली कोठरी में घुस गई। एक ऊनी कम्बल भूमि पर बिछाया और उस पर लेट गई।''

''मच्छर भिनभिनाने लगे। वे कानों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते थे। ऐसा प्रतीत होता था, जैसे उपदेश दे रहे हैं।'' ''नादान, क्या ऐसी कोठरी में गर्मियों के दिनों में कम्बल पर नींद आया करती है?''

''मैं उठ बैठी। रोशनदान से चांद की किरणें आ रही थीं। मैंने झुककर चांद को देखा और पूछा क्यों चमकने वाले, क्या तू उनके कमरे में भी चमकता है? क्या तू देखता है कि वे भी रातें इसी प्रकार जागते और करवटें बदलते काट देते हैं?'' चांदनी की ओर बार-बार देखने पर भी मुझे कोई उत्तर नहीं मिला। मैं फिर लेट गई मच्छरों ने मेरा बदन काट-काटकर फोड़ा बना दिया। अगली रात को भी मेरा बिस्तर इसी कोठरी में था। तीसरी रात मच्छर मुझे बेवस पाकर, मुझ अबला पर आक्रमण कर चुके थे कि अचानक मेरी सहेली आ गई, वह कहने लगी, क्या मरने पर कमर बांध रखी है?''

क्यों, मैं कैसे मरने लगी हूं? मैंने पूछा, ''ये ढंग तो मरने के ही हैं।'' उसने कहा। मैंने पूछा ''क्या जो इस तरह सोते हैं वे?''''हां हां मर तो जाते हैं'' सहेली ने उत्तर दिया। मेरी आंखें गीली हो गईं, आंसू टपक पड़े। किसी का दोष नहीं, मैंने कहा, मेरा भाग्य फूट गया है। वे जेल में किस तरह सोते हैं। क्या मैं उसी तरह न सोऊं? अब मुझे फिर उन्हें देखने की इजाजत मिली है। मैं दिल्ली पहुंची। अब की बार हाल पूछा तो कहने लगे, हम एक ही समय खाना खाते हैं। रोटी कैसी होती है? मैंने पूछा, उन्होंने मुझे रोटी का एक टुकड़ा दे दिया। मैंने देखा, उसमें चने भी हैं, रेत भी है और भी कुछ पड़ा हुआ है। मैंने भी घर आकर इसी प्रकार अनाज मिलाया, पीसा और रोटी बनाई। फिर एक समय खाकर दूसरे पहर पानी पर गुजर की। इस प्रकार कई मास बीत गए। मुकदमा चलता रहा। अन्त में एक दिन मैं अपनी कोठरी में बैठी उनका ध्यान कर रही थी। तब बाहर से रोने की आवाज आई। मेरा दिल जोर-जोर से उछलने लगा। मेरे माथे पर पसीना आ गया। दिल को थामे मैं बाहर आई देखा, वे उनका नाम ले लेकर बातें कर रही थीं।

फांसी का हुक्म हो गया। फांसी का हुक्म हो गया।

उनको अन्तिम बार देखने के लिए मैं फिर दिल्ली पहुंची। उसी जेल में जहां जवानों की जवानियां खत्म कर दी जाती हैं। जहां कोमल एवं सुकुमार पंखुड़ियां मसल दी जाती हैं। उनके दर्शन किए। दिल कहता था, कुछ बात कर लो। होंठ उसे उत्तर देते थे, हमारे अन्दर हिलने की शक्ति नहीं। हां उनके होंठ, खुले और आवाज आई, प्राण-प्यारी, संसार मिथ्या है। जो आया है, उसको जाना है। कोई किसी का साथी नहीं। अपने-आपको सौभाग्यवती समझो कि मैं देश हित अपनी आहुति दे रहा हूं।

मेरे कानों ने इस आवाज को सुना। आंखों ने छम छम आंसू बरसाने शुरू कर दिए। मैं बार-बार आंसुओं को रोकती थी कि जी भरकर देख तो लेने दो। पर ये रुकते ही न थे। अगले दिन हवन की सामग्री इकट्ठी की गई। लोग कहने लगे "आज उनका अन्त्येष्टि संस्कार होगा।"

मैंने सोचा, अच्छा मौका मिलेगा। अब मैं उनसे मिलाप कर सकूंगी। लेकिन थोड़ी देर बाद सब लोग वापस आ गए। कहने लगे जेल वालों ने शव देने से इन्कार कर दिया। फिर क्या हुआ? मैं वर्णन नहीं कर सकती। आज पन्द्रह दिन से मैं व्रत से हूं । अब वह घड़ी करीब आ रही है जब मेरा मनोरथ पूरा हो जाएगा।

इतना कहकर देवी चुप हो गई। यह दर्द-भरी कथा सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। आंखों से आंसू बहने लगे। दिल में दर्द होने लगा। देवी ने इसके पश्चात् अनाज का एक दाना भी मुंह को न लगाया, न पानी का एक घूंट ही पिया। पन्द्रह दिन छोड़ अठारह दिन इसी प्रकार निराहार बीत गए। एक ही स्थान पर बैठकर उसका ध्यान टिकता था, देवी ने तपस्या की। आखिर एक दिन जब आकाश बिल्कुल साफ था, सूर्य चमक रहा था, लोग अपने कारोबार में लगे थे, देवी अपनी जगह से उठी। स्वयं ही साफ सुथरा पानी लाई। स्नान किया और शुद्ध वस्त्र पहनकर फिर पहली जगह पर बैठ गई। कहने लगी, प्यारे, बहुत दिन तक परीक्षा ले चुके। आज तो दामन न छोड़ूंगी। अब जुदा न रह सकूंगी। यह कहा और प्राण खींचकर छोड़ दिए। लोग कहने लगे, भाई बालमुकुन्द जी की पत्नी सती हो गई हैं। मैंने कहा, "बुलबुल फूल पर निछावर हो गई है।" भीष्म प्रतिज्ञा भाई बालमुकुन्द जी ने सुहागरात के दिन अपनी पत्नी को बताया कि मैं क्रांतिकारी हूं। मेरा लक्ष्य तो भारत माता को स्वतंत्र कराना है। तो उनकी पत्नी ने कहा कि आज हम दोनों मिलकर एक प्रतिज्ञा करते हैं कि हम शारीरिक सम्बन्ध नहीं रखेंगे ताकि एक और गुलाम का सृजन न कर सकें। इसलिए भाई जी की कोई सन्तान नहीं थी और उनकी पत्नी अपने पति के पदचिह्नों पर चलती हुई अपन पति के प्रति आत्मसमर्पण करके स्वर्ग सिधार गई।

शहीदों की याद करो कुर्बानी, आंख में भर लो पानी।

-३४, बेगमबाग, मेरठ

(पृष्ठ ४३ का शेष)

वैदिक विद्वान् डॉ. महावीर जी अग्रवाल, प्रोफेसर. गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार-उत्तरांचल)

६. आपका वेद के साथ आधुनिक विज्ञान को लेकर चलना निश्चित ही महान कार्य है। (प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. रामनाथ जी वेदालंकार पूर्व उपकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

७. आपका कार्य अतिमहत्वपूर्ण है। मैं स्वयं शोधप्रिय हूं, इससे आपके शोध की महत्ता को समझता हूं। (विश्वविख्यात यौगिक चिकित्सा प्रचारक स्वामी श्री रामदेवजी महाराज, हरिद्वार)

८. आपका कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण व चुनौतीभरा है.। (वरिष्ठ वैदिक विद्वान् डॉ. भवानीलाल भारतीय, जोधपुर)

९. यह जानकर हर्ष हुआ कि श्री अग्निव्रत नैष्ठिक ने वैदिक-भौतिक विज्ञान पर शोध करने का उपक्रम किया है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य है। (वैदिक विद्वान् डॉ. महावीर जी मीमांसक, दिल्ली)

आर्यो! केवल सराहना से इस विश्वस्तरीय चुनौती का सामना नहीं किया जा सकता। आज विकसित विज्ञान की चुनौती के समक्ष हमारा वेद विज्ञान हमारे प्रमाद व अविद्या से बौना हो गया है ऐसे में अगर कांई प्रतिभावान उसे चुनौती देने वाला खड़ा हुआ तो सारे ऋषिभक्त समाज को उसके साथ खड़ा होना पड़ेगा। तन मन व धन से जुड़ना होगा।

वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास, वेद विज्ञान मन्दिर,
भागलभीम वाया भीनमाल, जिला जालौर (राज.)

आर्य अनाथालय

नई दिल्ली : आर्य अनाथालय आर्य बाल गृह, कन्या सदन व रानी दत्ता आर्य विद्यालय का वार्षिकोत्सव आर्य अनाथालय, पटौदी हाऊस, दरियागंज, नई दिल्ली में रविवार २३ अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक प्रमुख आर्य नेताओं के प्रवचन हुए। श्री वीरेश प्रताप चौधरी ने सदन की प्रगति पर प्रकाश डाला।

कहानी

करिष्ये वचनम् तव

❑ वचनेश

पाटलिपुत्र के समीप निर्जन-सा वनखण्ड। सरिता तट पर बनी एक पर्णकुटी में कुशासन पर आसीन था एक कृष्णवर्णी विद्वान-शिखा उसके शीश पर सुशोभित और कटि में लटक रहा था यज्ञोपवीत।

सरिता का कलकल निनाद उसे विश्राम का नहीं अपितु सतत कार्य करने का सन्देश दे रहा था। कलकल की ध्वनि उसके कर्ण कुहरों में टकराती और वह सोच रहा था कल क्या होगा? क्या होगा कल का भारत।

आज के भारत की स्थिति से विपन्न था उसका मन। अतएव वह उस कल की कल्पना को अपने हृदय मन्दिर में संजो रहा था जब विदेशियों के दासता चक्र से ग्रसित उसकी पुण्य भूमि के अंचल मुक्त होंगे और टूट जाएंगे उनके बन्धन, जो आर्य होकर भी परिस्थितिवश दासता की शृंखला में आबद्ध हो गए हैं।

सहसा ही सरिता के जल पर उसकी दृष्टि गढ़ गई और उसने देखा जल के प्रचण्ड प्रवाह में एक विशाल प्रस्तर खण्ड भी बहता जा रहा है और फिर कुछ ही क्षण बाद एक और शिला। दूसरी शिला को सरिता की लहरों ने पहली पर ढकेल दिया और फिर पहले शिलाखण्ड के दो टूक हो गए। मनीषी के गम्भीर मुखमण्डल पर मुसकान की एक रेखा उभरी और ऐसा लगा कि मानो उसने किसी विकट समस्या का समाधान पा लिया है।

मनीषी आचार्य के समक्ष कुशासन पर ही आसीन था एक तेजस्वी युवक। नितान्त गम्भीर नितान्त सतर्क। वह बोला, गुरुदेव! किस विचार में तल्लीन हैं। आदेश दीजिए, मैंने भली भान्ति विचार कर आपकी प्रत्येक आज्ञा के पालन का संकल्प ग्रहण किया है।

आचार्य बोला, आर्यपुत्र! स्वदेश का बहुत बड़ा अंचल आज विदेशी दासता के गर्द गुब्बार से धूमिल है। सीमान्त और पंचनद की जिस पावन धरा पर कभी वेद के मंत्रों का निनाद होता था आज वहां असहाय आर्य नर-नारियों का आर्त्तनाद सुनाई पड़ रहा है। यवनों के दल बादल स्वदेश एवं स्वधर्म की अस्मिता को पद्दलित कर उस समग्र अंचल पर अपनी दासता का अपवित्र आंचल फैला चुके हैं। समय की पुकार है कि कर्तव्य पथ पर बढ़ने वाले ऐसे युवक उठें कि जो स्वदेश के कण-कण को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने के लिए अहर्निश सचेष्ट हों, सक्रिय हों। क्या तुम्हारी सिद्धता है? और शिष्य ने उत्तर दिया ''स्वदेश की स्वतंत्रता के लिए सुख, सुविधा, सम्पन्नता, वैभव सभी को ठोकर मारकर उसके लिए अपना जीवन वारने को सन्नद्ध हूं मैं। आप आज्ञा दीजिए।'' आचार्य कुशासन से उठे और अपने कागज-पत्रों में से निकाला एक कागज। उस पर अंकित था आर्यावर्त का रेखाचित्र।

शिष्य को उसने अपने अंगुलि निर्देश से कुछ स्थानों का बोध कराया और बताया कि यवनों की दासता की परत कहां तक फैल चुकी है। और फिर वह बोला ''प्रबल विदेशी सत्ता से स्वदेश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए पहले तुम्हें कुछ अपनों से ही टकराना होगा। क्योंकि वे कथित अपने ही अपनी विलासिता, दम्भ और कर्तव्यहीनता के कारण विदेशियों के सपने को सत्य सिद्ध करने में जाने अनजाने लगे हैं। बोलो ले सकोगे उन अपनों से भी संघर्ष।'' युवक के मुखमण्डल पर ओज की आभा विस्फारित हो उठी और फिर गूंज उठे उसके आत्म विश्वासपूर्ण स्वर 'गुरुदेव राष्ट्र के स्वातंत्र्य सूर्य पर आच्छादित दासता के सघन घनों को तिरोहित करने के मार्ग में जो भी बाधक है चाहे अपना हो या पराया-मैं उससे जूझूंगा। यदि स्वदेश एवं स्वसंस्कृति के पुनरुद्धार कार्य में मेरा जीवन प्रसून भी राष्ट्रमाता के श्री चरणों में समर्पित हो जाए, तो मैं उसे ही अपना सौभाग्य समझूंगा।

आचार्य ने जब अपने समक्ष बैठे युवक की यह आत्मविश्वासपूर्ण वाणी सुनी तो सन्तोष से उनका मुखमंडल उद्दीप्त हो उठा और वह बोले ''चन्द्र! तुम्हें पहले नन्द से टकराना होगा और फिर...।''

सहसा ही युवक ने बीच में ही गुरुदेव को टोकते हुए कहा ''मैं जानता हूं गुरुदेव अपना ध्येय-अपना लक्ष्य।'' उसने गुरुदेव के चरण स्पर्श कर उनकी पदरज अपने शीश पर धारण की और तत्काल उसका हाथ अपनी तलवार पर गया और वह बोला आपका आशीष-मेरी तलवार। आध्यात्मिकता और भौतिकता का संगम। दोनों का समन्वय ही राष्ट्र को दिशादान देता है। यही तो है आपकी सीख। 'करिष्ये वचनम् तव।' आपकी कल्पना पूर्ण होगी।

xxx

आज गुरुदेव हर्ष और आनन्द से आत्मविभोर थे। शिष्य कृतज्ञ अपनी और आर्य भूमि की दासता की शृंखला के आबद्ध करने वाले दोनों को ही पराभूत कर उनके चरणों को श्रद्धा सहित स्पर्श कर रहा था। 'आर्य श्रेष्ठ! संभालिए सिंहासन-देश को दीजिए अपने महान् ज्ञान से नवजीवन।''

गुरुदेव बोले ''चन्द्र मेरा स्वप्न साकार हुआ। पुण्यभूमि भारत, आर्य भूमि आर्यावर्त आज स्वाधीन है और उसका श्रेय है तुम्हें और केवल तुम्हें। तुम्हारी कर्तव्यपरायणता का ही यह सुखद परिणाम है। देश की स्वतंत्रता के मेरे स्वप्न को साकार रूप प्रदान करने का साहस तुम्हारे ही विक्रम का परिणाम है।''

(शेष पृष्ठ ४८ पर)

खुद न्यौता न दें मोटापे को

मोटापा न केवल खूबसूरती का दुश्मन है, बल्कि यह विभिन्न रोगों को निमंत्रण भी देता है। खानपान व रहन-सहन में लापरवाही और आराम पसंद जिन्दगी मोटापे का मुख्य कारण है जिससे शरीर पर चर्बी की परत-दर-परत जमा होती जाती है। सुन्दर व छरहरी काया और सुडौल कमर भला किसे अच्छी नहीं लगती लेकिन इसके लिए कोशिश करना भी जरूरी है। व्यायाम, शारीरिक श्रम व जिह्वा पर नियंत्रण रखकर हम काफी हद तक मोटापे को रोक सकते हैं। मोटापे के सन्दर्भ में कुछ ध्यान देने योग्य बातें प्रस्तुत हैं :-

* नियमित व्यायाम, साईकलिंग, खेलकूद एवं तेज चाल से चलना शरीर को संतुलित रखते हैं। घरेलू कार्यों जैसे झाड़ू-पोंछा लगाना, कपड़े धोना व घर की सफाई में पर्याप्त श्रम हो जाता है और चर्बी नहीं चढ़ने पाती।
* कई लोगों को दिन भर कुछ न कुछ खाने की आदत होती है। फुर्सत में बैठे हैं तो खाना, टीवी, देखते-देखते खाना। कुछ लोग अपनी कुंठा दूर करने के लिए भी कुछ-न-कुछ खाते रहते हैं, मोटापा तो बढ़ेगा ही।
* आसपास की दूरी पैदल ही तय करें। थोड़ी-सी दूरी के लिए वाहनों का प्रयोग न करें।
* कई लोगों का मानना है कि एक वक्त भोजन करने से मोटापा कम होता है लेकिन यह गलत धारणा है।
* मानसिक कार्य करने वाले व्यक्ति या आफिसर, जिनको पैदल या घूमने का काम कम करना पड़ता है, अक्सर मोटापे का शिकार हो जाते हैं, ऐसे व्यक्ति को खानपान पर विशेष ध्यान रखना और नियमित रूप से व्यायाम व सैर करनी चाहिए।
* भोजन व नाश्ते में अंकुरित अनाज, सलाद ओर सूप का इस्तेमाल अवश्य करें। ये चर्बी घटाने के अतिरिक्त एसिडिटी, छाले, कैंसर, कब्ज आदि रोगों की रोकथाम में भी सहायक होते हैं।
* पानी ज्यादा-से-ज्यादा पिएं। भोजन से पहले व तुरन्त बाद पानी पीना हानिकारक है।
* निश्चित समय पर भोजन करें। अनियमित व मांसाहारी भोजन से दूर रहें।
* भोजन करने के बाद १० मिनट तक वज्रासन में अवश्य बैठें।
* बढ़ती उम्र के साथ पाचन क्रिया शिथिल होती जाती है, अतः तेल, चाय, घी, काफी का सेवन कम करें। फलों का रस, सलाद व सूप आदि को प्राथमिकता दें।

आलस्य, लापरवाही, अकर्मण्यता व विलासितापूर्ण जीवन शैली मोटापे का मुख्य कारण है। इनसे परहेज करने की कोशिश करें। ०-०-०

विनाश की करवट

❒ विजय गुप्त

धरती की एक करवट ने कैसा आकार कर दिया
पल भर जो हिली, हृदय में दर्द का संचार कर दिया
ताश के पत्तों से बिख्र गए ये पत्थरों के महल
सब ओर हवाओं में वेदना का विस्तार कर दिया।
पर्वत खोमोश थे बर्फ की चादर तानकर
धरती के जिगर में धीरे-धीरे किसने अंगार भर दिया
जमीं जो कांपी तो थर्रथराई जिन्दगियां
हसीन महलों को जिसने कब्रगाह-मजार कर दिया।
रात को सोए थे, कल का वादा निभाने के लिए
नई सुबह ने हर सपना बेकार कर दिया
जिन दृश्यों को देखकर मुस्कराते थे नयन सबके
आंसुओं का दिया बहाने को उन्हें बेजार कर दिया।
दरख्तों की हरियाली उतर गई पत्तों से उनके
अब घाव हरे रहेंगे हसरतों को बीमार कर दिया
वो जिन्दगी के सहारे जिनके टूट और बिखर गए
पल भर के झटके ने सब कुछ तार तार कर दिया।

-मदनगीर, नई दिल्ली

नोट : कवि का जन्म पाकिस्तान कब्जे वाले कश्मीर की काटली तहसील में हुआ था। ८ अक्टूबर को जब यह घटना हुई तब वह जम्मू में था।

(पृष्ठ ४७ का शेष)

गुरुदेव आपकी योजना आपके दिशा निर्देशन का ही चमत्कार है यह। मैं तो निमित्त मात्र हूं। मैंने जो कुछ भी किया वह आपके आशीर्वाद का ही तो प्रतिदान है। अतएव सत्ता सूत्र को आप ही संभालें। आचार्य उठे और अपना वरद्हस्त युवक के शीष पर रखकर उसे आशीर्वाद प्रदान किया। वह बोले ''शासन संचालन का अधिकारी वही है जिसकी भुजाओं में बल है। आचार्य का कर्तव्य है दिशा दान देना सत्ता का संचालन नहीं। यह पथ-प्रदर्शक थे चाणक्य और शिष्य था चन्द्रगुप्त। ०-०-०

आर्य समाज डी एल एफ कुतुब इन्कलेव
वार्षिकोत्सव एवं भवन शिलान्यास समारोह
शनिवार, रविवार 8, 9 अक्टूबर 2005

गुड़गांव : आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव के तत्वावधान में आर्यसमाज मन्दिर, डीएलएफ सिटी, का शिलान्यास समारोह शनिवार ८ अक्टूबर ०५ सायं ५ बजे आर्यसमाज प्लाट नं. २५०१, एल-४, डी.एल.एफ. सिटी, फेस-२, गुड़गांव में स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (कुलपति, गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ) द्वारा सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता पूर्व सांसद श्री हरदयाल देवगुण ने की। इस अवसर पर वैदिक संस्कृति सम्मेलन तथा ८ अक्टूबर को राष्ट्रक्षा सम्मेलन आयोजित हुए। जिन्हें डॉ. धर्मवीर, डॉ. महेश वेदालंकार, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, श्री सोमदत्त तथा श्री छविकृष्ण, श्री बनारसीसिंह आदि ने सम्बोधित किया। आर्यसमाज के प्रधान श्री विजेन्द्र सिंघल व मंत्री मुक्ता धारीवाल ने आभार व्यक्त किया।

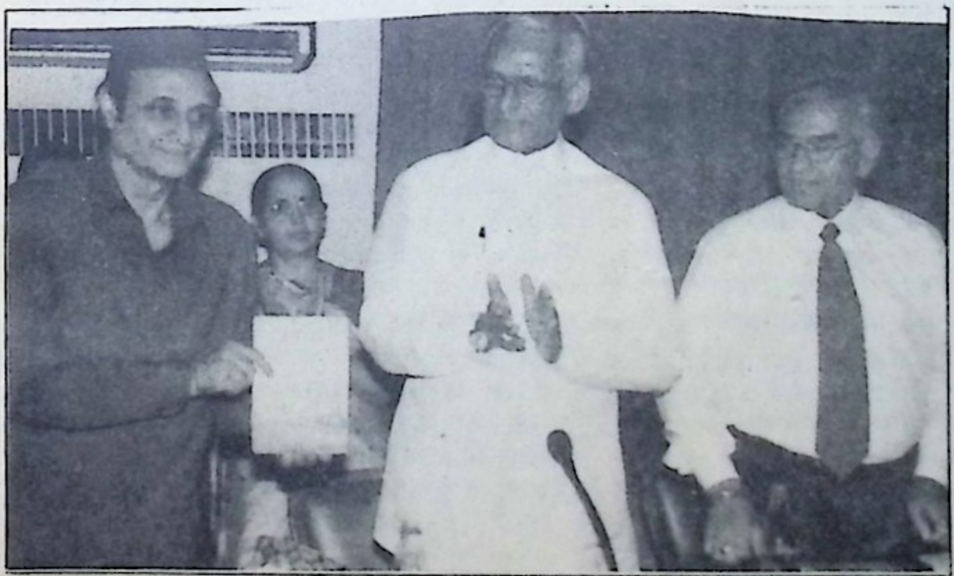

चित्र परिचय : सुप्रसिद्ध भाषाविद डॉ. दामोदर ठाकुर द्वारा प्रस्तुत अनुपम गीता भाष्य ''गीता द सोंग एक्स्ट्रा ऑर्डिनरी' का लोकार्पण राज्य सभा सदस्य डॉ. कर्णसिंह द्वारा इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में आयोजित एक भव्य समारोह में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अनेक साहित्यकार, पत्रकार और राजनेता भी उपस्थित थे।

❐ डॉ. विवेक आर्य

बाल-जगत्

स्वतन्त्रता संग्राम के अनजाने वीर दीरण चिन्नामलई

थीरथगिरी गोऊन्डर जो दीरण चिन्नामल्लई के नाम से प्रसिद्ध थे, उनका भारत के स्वतंत्रता संग्राम में योगदान बहुत ही कम लोगों को ज्ञात है। उन्होंने १८वीं शताब्दी के अन्त में जब ब्रिटिश साम्राज्य अपने पैर पूरी तरह जमा नहीं पाया था, तब अत्यन्त सीमित साधनों के साथ अंग्रेजों के खिलाफ टक्कर ली। उनका जन्म इरोड जिले के चिन्नमल्लई क्षेत्र में ओडनीलई नामक ग्राम में १७ अप्रैल १७५६ को हुआ। किसान परिवार में जन्म होने के कारण वे पहले खेती का कार्य करने लगे। उन्होंने खेती के नये-नये तरीकों को ईजाद किया। जिससे वे उस क्षेत्र में शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गये। अच्छी खेती के कारण उन्हें काफी आर्थिक लाभ हुआ जिसका प्रयोग उन्होंने आगे चलकर अंग्रेजों के विरुद्ध किया।

उस क्षेत्र में ब्रिटिश अफसरों की मनमानी देखकर उनके दिल को ठेस पहुंची उन्होंने जमीन खरीदी और एक सेना की टुकड़ी की स्थापना की जहां नवयुवकों को हथियार एवं युद्धकला की शिक्षा दी जाती थी।

उनका सबसे पहला योगदान कोन्गु राजाओं से अंग्रेजों द्वारा लूटे गये कर को राजाओं को वापिस करवाना था, जिसके कारण वे अंग्रेजों की नजरों में शीघ्र ही आ गये। उन्होंने अपना पूर्ण जीवन स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। अंग्रेजों के साथ लगातार तीन युद्ध कर उनको नाकों चने चबवा दिए। सन् १८०० तक आते-आते उन्होंने गुरिल्ला छापामार युद्ध शुरू कर दिया जिसमें अंगेजों की अपार क्षति हुई और वे उनके नाम से थर-थर कांपने लगे। सीमित साधनों के साथ उनका यह संघर्ष आगे भी जारी रहता मगर दुर्भाग्य से वे अंग्रेजों द्वारा सन् १८०५ में पकड़े गये और ३१ जुलाई १८०५ को उन्हें फांसी पर चढ़ा दिया गया।

हंसते-हंसते वह वीर शहीद हो गया और लोगों के लिए संघर्षरत रहने का सन्देश दे गया जिसका आगे चलकर परिणाम भारत की आजादी निकला। ०-०-०

स्वामीभक्त सैनिक

❐ अरुण नागर

दिल्ली के पृथ्वीराज चौहान और बुन्देलखंड के महोबा के राजा चंदेल परमाल एक दूसरे के प्रबल प्रतिद्वन्द्वी थे। उनके बीच हुई अनेक लड़ाइयों के किस्से इतिहास में दर्ज हैं। एक किस्सा जो कि 'पृथ्वीराज रासो' में दर्ज है, भारत के वीर सेनानियों में से एक के अपूर्व बलिदान और महान देशभक्ति का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

पृथ्वीराज और चंदेल सामन्त के बीच घोर युद्ध छिड़ा हुआ था। पृथ्वीराज का संयमराय नाम का एक सामंत भी युद्ध में बढ़-चढ़कर भाग ले रहा था और पृथ्वीराज को भरपूर सहयोग दे रहा था। अचानक दुश्मन की तलवार पृथ्वीराज के सिर पर लगी और वह अचेत होकर रणभूमि में गिर पड़े। इसी बीच युद्ध में संयमराय के पैरों पर भी तलवार चली और वह पृथ्वीराज से कुछ ही दूरी पर गिर पड़ा। उसका एक पैर कट गया था। युद्ध के मैदान में यत्र-तत्र पड़ी लाशों पर गिद्ध, चील और कौवे आदि बुरी तरह से झपट रहे थे। जब संयमराय ने अचेत पड़े पृथ्वीराज की आंखों पर निशाना साधते हुए गिद्धों को देखा तो वह घबरा उठा। उसने आनन-फानन में अपनी तलवार से कटे पैर की जांघ पर वार करके मांस का एक टुकड़ा निकालकर गिद्धों की ओर फेंका तो गिद्ध पृथ्वीराज को छोड़कर मांस के टुकड़े की ओर बढ़ चले। गिद्धों ने जैसे ही वह टुकड़ा खत्म किया। संयमराय ने फिर एक टुकड़ा उनकी ओर फेंक दिया। इस प्रकार जब तक पृथ्वीराज की सेना के और सिपाही वहां नहीं आ गये, संयमराय अपने शरीर के मांस के छोटे-छोटे टुकड़े गिद्धों की ओर फेंकता रहा और अंततः उसके शरीर की रही सही ताकत खत्म हुई और वह वहीं ढेर होकर काल के गाल में समा गया। उसने प्राण देकर भी अपने राजा को बचा लिया था। ०-०-०

(पृष्ठ ४१ का शेष) एक गऊ अपने पैसों से खरीदकर गोशाला को दे देवे और उसका मूल्य देकर उसका जितना चाहिए उतना दूध खरीद लेवे इससे दानदाता गाय के दूध , घी, दही व छाछ का आनन्द उठा सकेगा और अपने स्वास्थ्य की रक्षा भी कर सकेगा।

साथ ही गोशाला को भी लाभ हो सकेगा और गोवंश को भी बचाया जा सकेगा। इसके अलावा मरे हुए पशुओं की खाल से बने जूते व कपड़े के जूतों का प्रयोग करें और जो वस्तुएं गोवंश की चमड़ी, हड्डी, चर्बी व आंत आदि से बनाई जाती हैं जैसे बेल्ट, हैण्डबैग, चांदी की वर्क, कई किस्म के साबुनें आदि का प्रयोग न करके उसके स्थान पर प्लास्टिक व फोम से बनी वस्तुओं का प्रयोग करें ताकि गोवंश की रक्षा हो सके और मेरा प्यारा देश भारत धन-धान्य से परिपूर्ण हो सके। इसीलिये कहा जाता है ''गो रक्षा ही राष्ट्र रक्षा है।''

-१८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला), कोलकाता

समाचार-दर्शन

आर्यकवि को श्रद्धांजलि

हे राधेश्याम आर्यकवि, आर्य जगत स्वीकार्य कवि,
पत्रों में रही दमकती है रवि रञ्जित माधुर्य छवि।
अल्प आयु प्रस्थान हो गया,
विधि की निधि में सहसा ही मेरा मित्र महान खो गया,
हे 'रश्मिरथी'[१] के महारथी, 'आर्य दर्पण'[२] के सफल सारथी
ऋषि दयानन्द-दर्शन वाणी निज वीणा में गूंथ मणी।
कविराज हमारे गये वरुण, रहे अब हमारे 'अरुण'[३] ही वरुण,
आदर्श-श्रेय श्रद्धांजलि दो मत बहो अश्रुकण अब क्षण-क्षण।

-संतप्त देवनारायण भारद्वाज

(१) कवि की काव्य पत्रिका, (२) पाक्षिक पत्र, (३) कवि-सुपुत्र अरुण कुमार्य आर्य।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित भव्य ऋषि मेले का आयोजन

अजमेर : परोपकारिणी सभा के तत्वावधान में दीपावली के शुभ अवसर पर १२१ वां ऋषि बलिदान समारोह ऋषि के अवषेशों की पुण्य स्थली आनासागर के रमणीय सुरम्य तट पर स्थित ऋषि उद्यान अजमेर में **११** से **१३** नवम्बर को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर जन सामान्य को आध्यात्म की ओर प्रेरित करने हेतु आचार्य वेदव्रत मीमांसक वडलूर, श्री प्रकाश आर्य महू, प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु अबोहर, स्वामी धर्मानन्द आबूपर्वत, श्री तपेन्द्र वेदालंकार जयपुर, पं. भूपेन्द्र सिंह आर्योपदेशक, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर, पं. विद्यासागर शास्त्री अलवर, डॉ. सुरेन्द्रकुमार झज्जर, श्री त.का.शि. कण्णन चेन्नई, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. भवानीलाल भारतीय, डॉ. ब्रह्ममुनि, डॉ. कुशलदेव नांदेड़, स्वामी संकल्पानन्द उदयपुर, आचार्य बलदेव प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मुम्बई, श्री विजयसिंह भाटी जोधपुर, श्री वंगराज गाजियाबाद, ज्वलन्त कुमार शास्त्री अमेठी आदि आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी, देश की अग्रिम पंक्ति के ख्यातनाम वैदिक विद्वान् एवं भजनोपदेशक पधार रहे हैं। **ऋग्वेद पारायण महायज्ञ :** ऋषि मेले के अवसर पर सनातन वैदिक परम्परा के अनुरूप ऋग्वेद पारायण महायज्ञ ६ नवम्बर से प्रारम्भ होगा जिसकी पूर्णाहुति दि. १३ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी।

आर्यवीर दल हरियाणा महासम्मेलन

सोनीपत : सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा के तत्वावधान में प्रान्तीय महासम्मेलन सोनीपत में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री रामसुफल शास्त्री एवं आचार्य कृष्णदेव कौटिल्य के ब्रह्मत्व में कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के प्रधान आचार्य बलदेव जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस कार्य में श्री नित्यप्रिय आर्य मण्डलपति सोनीपत का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हुआ। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय माडल टाऊन (पूर्व हरियाणा हाई स्कूल) सोनीपत से शोभा यात्रा भी निकाली गई। जिसमें आचार्य बलदेव, स्वामी देवव्रत, आचार्य विजयपाल हाथियों पर बैठे शोभा बढ़ा रहे थे। रात्रि समय ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य की अध्यक्षता में आर्यवीर सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन आर्यवीर दल के संचालक श्री उमेदसिंह शर्मा ने तथा मंच संचालन श्री अजीतकुमार आर्य ने किया। कार्यक्रम में श्री रामफल आर्य, संचालक हिमाचल प्रदेश,आचार्य धर्मपाल आर्य, उ. प्र., आचार्या दर्शना आर्य कन्या गुरुकुल खरल, प्रो. ओमकुमार आर्य, वेदप्रकाश आर्य आदि ने आर्यवीर दल के महत्व पर प्रकाश डाला।

राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का भी आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता आचार्य बलदेव जी ने तथा उद्घाटन आचार्य राजेन्द्र प्रसाद विद्यालंकार ने किया। आर्यवीर दल आर्य वीरांगना दल शिविरों के सफल संचालन एवं उत्कृष्ट सेवाओं के लिए श्री शिवदत्त मण्डलपति गुड़गांवा, श्री देसराज आर्य मण्डलपति रोहतक, श्री होतीलाल आर्य, मण्डलपति फरीदाबाद, श्री हरिचन्द बत्रा संचालक आर्यवीर, वीरांगना दल गन्नौर, श्री वीरेन्द्र आर्य महामंत्री दिल्ली प्रदेश आर्य वीर दल, श्री नित्य प्रिय आर्य मण्डलपति सोनीपत को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया गया।

आर्यसमाज गोविदपुरम, गाजियाबाद

आर्यसमाज गोविन्दपुरम के तत्वावधान में षष्टम वार्षिकोत्सव के सुअवसर पर रविवार, १३ नवम्बर को प्रातः ९ बजे वेदों द्वारा सर्वांगीण विकास सम्मेलन का आयोजन किया गया है। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री केतनशंकर शर्मा (प्रधान आर्यसमाज गोविन्दपुरम) व अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार आर्य प्रधान उप-प्रतिनिधि सभा, गाजियाबाद) एवं मुख्य अतिथि : आचार्य स्वामी चन्द्रवेश सरस्वती (वैदिक संन्यास आश्रम, गाजियाबाद) होंगे।

आर्यसमाज कटनी (म. प्र.) का चुनाव

कटनी आर्यसमाज का द्विवार्षिक चुनाव श्री विश्वमित्र पाण्डे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये। प्रधान: श्री अश्विनी सहगल, उपप्रधान : श्री जगदीशमित्र बाठला, श्री हरिसिंह भदौरिया, मंत्री : श्री दुर्गाप्रसाद विश्वकर्मा, उपमंत्री : श्री हरिश्चन्द्र सूरी, श्री संतोष कुमार श्रीवास्तव, श्री विश्वराज पाण्डे एवं श्री बृजमोहन मनोचा कोषाध्यक्ष।

मुम्बई आर्यसमाज का निर्वाचन

आर्यसमाज मुम्बई की १३०वीं वार्षिक सर्वसाधारण सभा सम्पन्न हुई। जिसमें आगामी वर्ष के लिए श्री डॉ. अश्विनभाई व. पटेल मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री अनिल कुमार सी. नेस्ती, श्री केवलभाई मकवाणा, ट्रस्टी तथा श्री करसनदास जे. राणा प्रधान, सुश्री डॉ. ज्योत्सनाबेन महेश्री वरिष्ठ उपप्रधान, श्री राघवभाई पटेल व श्री देवेश्वर शर्मा उपप्रधान एवं श्री राजेन्द्रनाथ पाण्डेय मंत्री, श्री महावीर शर्मा उपमंत्री तथा श्री विजयकुमार गैतम कोषाध्यक्ष व श्री शान्ताराम नाचरे पुस्तकाध्यक्ष चुने गये।

अमृतसर स्वर्णमन्दिर में वैदिक गूंज

स्वर्णमनिदर के पावन स्थान पर १६ सितम्बर की प्रात: बेला में पवित्र गुरु ग्रन्थ साहब में वेदों का उल्लेख करते हुए आचार्य रामप्रकाश शर्मा सरस ने कहा कि गुरु नानकदेव महाराज एवं अन्य सभी गुरुओं ने अपनी-अपनी पावन वाणी में वेदों के दिव्य ज्ञान एवं महत्व के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट की है। पवित्र गुरु ग्रन्थसाहब में अनेक बार वेद शब्द का प्रयोग आया है। सरस जी अनूठी व्याख्यान शैली के कारण बौद्ध, जैन, सिक्ख समुदाय में बड़ी श्रद्धा से बुलाये जाते हैं।

सरस जी के व्याख्यान एवं वार्ताएं विश्व के २२ देशों में वहां के संचार माध्यमों द्वारा उन देशों की भाषाओं में प्रसारित हो चुकी हैं। सिख समुदाय के महान तीर्थ स्वर्णमन्दिर अमृतसर ले जाने वाले १५० सिख परिवारों का एक जत्था १५ सितम्बर को शताब्दी एक्सप्रेस द्वारा दिल्ली से श्री सरस जी को अमृतसर ले गया और १६ सितम्बर की प्रात: उनके व्याख्यान का गुरुवाणी कार्यक्रम के अन्तर्गत सीधा प्रसारण दूरदर्शन पर हुआ।

आर्यसमाज गांधीधाम गुजरात में जनवरी २००६ में अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन

गांधीधाम आर्यसमाज के वर्तमान एवं भविष्य, आर्यसमाज की एकता एवं प्रबंधन व्यवस्था पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार-विमर्श करने की आवश्यकता है। इसी उद्देश्य से दि. २७ से २९ जनवरी २००६ तक गांधीधाम कच्छ, गुजरात में अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन का आयोजन श्री गिरीश खोसला-अमेरिका के नेतृत्व में तथा श्री पुरुषोत्तमभाई पटेल प्रधान एवं श्री वाचोनिधि आर्य महामंत्री, आर्यसमाज गांधीधाम के संयोजन में किया जा रहा है। जनवरी २००१ में कच्छ में आए विनाशक भूकम्प के बाद निराश्रित बालकों एवं विधवा बहनों के लिये बनाए गए जीवनप्रभात की पांचवीं स्थापना तिथि पर गांधीधाम में अंतर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। यह सम्मेलन वैदिक संस्कार केन्द्र में होगा। देश-विदेश से ३०० प्रतिनिधि ही शामिल हो सकेंगे। पहले से ही शुल्क देकर पंजीकरण करवाना होगा। बिना पंजीकरण के तथा बिना शुल्क के इस सम्मेलन में कोई भी शामिल नहीं हो पाएंगे। विस्तृत जानकारी के लिए आर्यसमाज गांधीधाम से सम्पर्क करें ।

आर्यसमाज उज्जैन

उज्जैन। कई जन्म-जन्मान्तर के बाद मनुष्य जन्म मिलता है। शुभ कर्म आयु के प्रत्येक क्षण में शुभकर्म करना चाहिये। वही परमामा को प्राप्त करने का अधिकारी है। हमारा जीवन अज्ञान और पाखण्ड से भरा हुआ है। प्रत्येक क्षण अमूल्य है हमारे पास पूरा साम्राज्य ही क्यों न हो, लेकिन हमें एक क्षण नहीं मिल सकता। जिसकी नींव सत्य पर होती है, वह गिर नहीं सकता। जीवन का लक्ष्य है परमानन्द की प्राप्ति करना और वह सत्य से ही मिल सकता है। यश सत्य में ही समाहित है। जो धन धर्म और अधर्म का विवेक प्राप्त कर होता है, वही धन होता है। जो धन से लोक परलोक सुधारने के लिये सदुपयोग में करता है, वह धन लक्ष्मी है। जो धन प्राप्ति के बाद परमार्थ में लगाया जाता है, वही लक्ष्मी होती है ये विचार वेद प्रचार सप्ताह के समापन के अवसर पर श्री ओमदत्त आर्य के संयोजन में आर्यसमाज उज्जैन द्वारा किये जा रहे वेदप्रचार के अवसर पर स्वामी सांख्यायन ने व्यक्त किए।

पाणिनि महाविद्यालय का स्नातक सर्वश्रेष्ठ

दिल्ली : पाणिनि महाविद्यालय, रेवली के सुयोग्य स्नातक ब्र. दोलामणि ने दिल्ली विश्वविद्यालय की इस वर्ष (२००४-२००५) सम्पन्न स्नातकोत्तर (एम.ए.) परीक्षा में ८४.७५ प्रतिशत अंक प्राप्त करके सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करते हुए विगत अनेक वर्षों के रिकोर्डों को ध्वस्त कर दिया है। वैसे ब्र. दोलामणि विद्यालय की अवान्तर परीक्षाओं में भी आश्रम से ही सर्वदा, सर्वोच्च अंक प्राप्त करके श्रेष्ठ ही रहते थे।

तपोवन (देहरादून) का शरदुत्सव सम्पन्न

देहरादून : वैदिक साधन आश्रम तपोवन (देहरादून) का पंचदिवसीय शरद महोत्सव स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के

निर्देशन में सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया। दैनिक योग-साधना का प्रशिक्षण श्री स्वामीजी द्वारा प्रात: ७ बजे तक। उसके पश्चात् अथर्ववेद-पारायण सहित बृहत् यज्ञ चलता था जिसके ब्रह्मा स्वामी जी ही थे। वेदपाठ करने वालों में गुरुकुल एटा के आचार्य पं. रामदत्त के साथ आए हुए उनके चार ब्रह्मचारी शिष्यों के अतिरिक्त आश्रमवासी आचार्य उत्तम मुनि तथा माता नरेन्द्र आर्या जी का भी सहयोग रहा। यज्ञ के पश्चात् गायक नरेन्द्र वशिष्ठ द्वारा संगीत की रस-वर्षा प्रत्येक सत्र में ३० मिनट तक होती रही। आचार्य रामदत्त के प्रवचन विद्वतापूर्ण तथा प्रसाद-गुणयुक्त थे।

चन्दूखेड़ी में प्रवचन-यज्ञ-हवन सम्पन्न

चन्दूखेड़ी (उज्जैन) आचार्य श्री दिनेश कुमार शर्मा, दयालबाग-आगरा से पधारे वैदिक विद्वान् का चन्दूखेड़ी चौपाटी पर २८.९.०५ को कोषाध्यक्ष वेदमन्दिर चन्दूखेड़ी के श्री विजयसिंह जी आर्य पाटीदार के यहां प्रात: ८ से ११ बजे तक संध्या-हवन-प्रवचन-सत्संग-यज्ञ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तनावमुक्त जीवन के सूत्र पुस्तक का विमोचन

नई दिल्ली २ अक्टूबर। विश्व शान्ति, मानव कल्याण एवं पारिवारिक सुख समृद्धि हेतु आयोजित २१ कुण्डीय विराट गायत्री महायज्ञ के शुभ अवसर पर सेंट्रल पार्क, विकास कुंज, विकासपुरी में आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी द्वारा लिखित पुस्तक 'तनाव मुक्त जीवन के सूत्र' नामक पुस्तक का विमोचन श्री ओ.पी. बब्बर (विधायक) के करकमलों से हुआ। विराट जनसमूह को यशस्वी लेखक आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि तन-मन दोनों को पीड़ा होती है तो तनाव पैदा होता है तनावमुक्त जीवन के लिए जीवन की उपलिब्धयों को देखें। सभी समस्याओं को एक साथ सुलझाने का प्रयत्न करके उलझे नहीं। एक समय पर एक ही समस्या का समाधान करें। संसार में रहते हुए भी इसमें आसक्त न हों। ध्यान केन्द्र बिन्दु ओ३म् पर ही रहे। डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, श्री विजय गुप्त, श्री नरेन्द्र सुमन आदि महानुभावों ने भी सभा को सम्बोधित किया।

वर चाहिए

प्रतिष्ठित आर्य परिवार की २५ वर्षीय कन्या कद ५'-२'', शिक्षा एम.ए. (इक्नामिक्स), बी. एड़, एम.ए. (जर्मन), कान्वेण्ट पढ़ी, अंग्रेजी, जर्मन, संस्कृत, हिन्दी आदि भाषाओं का ज्ञान। दिल्ली के प्रतिष्ठित स्कूल में टी.जी.टी. अध्यापिका के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है।

सम्पर्क सूत्र

दयानन्द संस्थान, करौल बाग, नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : २५७२४७४१, ५१००४७४१, ५१०१५४५७

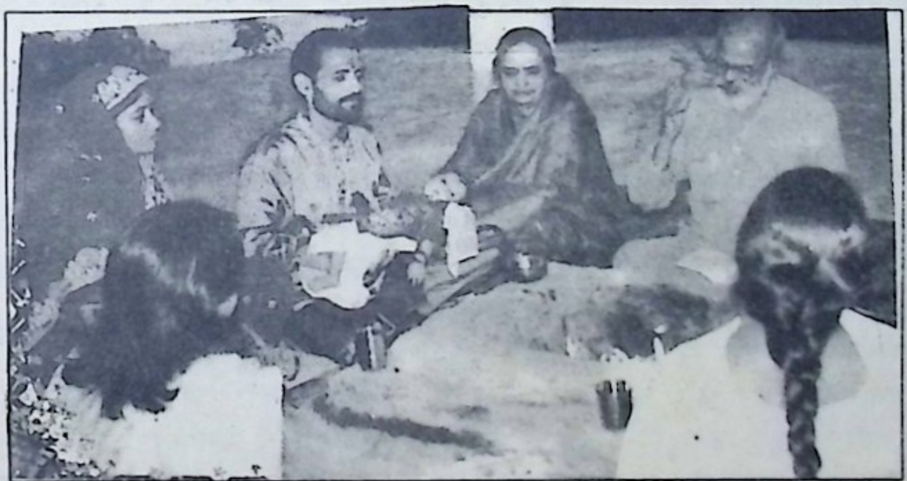

दयानन्द संस्थान के निष्ठावान कार्यकर्ता श्री राधेश्याम शर्मा को पुत्र रत्न की प्राप्ति के उपलक्ष्य में वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षु: वानप्रस्थ आश्रम इब्राहीमपुरा में आयोजित आशीर्वाद कार्यक्रम का एक दृश्य। संस्थान की अध्यक्ष पं. राकेशरानी एवं आचार्य स्वामी जगदीश्वरानन्द ने नवजात शिशु "तेजस" के शतायु होने की कामना की।

आप हमारी सहायता इस प्रकार भी कर सकते हैं

१. वेद मन्दिर महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम दिल्ली-३६ में अपनी ओर से अथवा अपने किसी प्रियजन की स्मृति में कुटिया बनवा सकते हैं। जो आजीवन आपकी होगी। इस समय व्यय लगभग एक लाख पचास हजार रुपए होगा। एक कुटिया १५ × १२ फुट की, पीछे शौचालय और स्नानागर ५ × ७ फुट, रसोई ७ × ७ फुट की, आगे बरामदा १२ × ७ फुट। प्रत्येक कुटिया अपने आप में पूर्ण इकाई है। वेदमंदिर में यज्ञशाला, सत्संग भवन, कार्यालय आदि के निर्माण हेतु अधिक से अधिक धनराशि १००, ५००, १००० रुपये अपनी सामर्थ्य के अनुसार स्वयं तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके धनराशि ''दयानन्द संस्थान'' के नाम भेजें। आपका सहयोग ही हमारी शक्ति है।

२. वेद मन्दिर गौशाला में गौ दान करें तथा गउओं के लिए चारा आदि की व्यवस्था हेतु मुक्तहस्त से दान देकर गौरक्षा अभियान में सहयोगी बनें।

३. परमात्मा की अमरवाणी ''चारों वेदों का हिन्दीभाष्य'' मूल्य १८०० रु. अभी १२०० रु. में। आज ही वेद भाष्य अपने तथा अधिक से अधिक अपने मित्र परिवारों में लायें। डाक से मंगाने पर १६० रुपये अधिक लगेंगे।

४. बढ़िया पेपर पर छपा चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य ३२०० रु. अभी २२५० रु. में प्राप्त करें। डाक से मंगाने पर १८० रु. अधिक लगेंगे।

५. विगत पैंतीस वर्षों से लगातार वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न मासिक **''जनज्ञान''** के सदस्य बनें और अपने मित्रों को बनायें। **वार्षिक शुल्क १००/- रुपये है। ११००/- रुपये में आजीवन सदस्य** बनकर ३५०/- रु. का श्रेष्ठ साहित्य भी उपहार में प्राप्त करें।

६. प्रतिमास ''जनज्ञान'' **की कम से कम दस प्रतियां प्रचारार्थ ५०/- रुपये में मंगाकर बांटें** तथा ''जनज्ञान'' मासिक में **विज्ञापन देकर हमारे ''राष्ट्र जागृति अभियान'' में सहयोग प्रदान करें।**

७. **संस्थान ने बीस से अधिक ट्रैक्ट वेदप्रचार तथा हिन्दू जागरण अभियान को गतिमान बनाने हेतु प्रकाशित किए हैं,** जिनकी सूची ''जनज्ञान मासिक'' में प्रकाशित होती रहती है। **अधिक से अधिक संख्या में मंगाकर बांटें तथा नये संस्करण छापने में सहयोग देकर इस धर्मप्रचार कार्य में हमारे सहयोगी बनें।**

अध्यक्ष--दयानन्द संस्थान

प्रभावशाली धार्मिक साहित्य

1.	चारों वेदों का हिन्दी भाष्य	1800 रु.
2.	सामदेव : आध्यात्मिक भाष्य	201 रु.
3.	वेद ज्योति चारों वेदों के चुने गये (100-100 मन्त्रों की व्याख्या)	50 रु.
4.	वेदांजलि : (वर्ष के 365 दिनों के लिए 365 वेद मंत्रों की व्याख्या)	80 रु.
5.	भारत के वीर बच्चों की कहानियां	15 रु.
6.	धरती का स्वर्ग	15 रु.
7.	सरस्वतीन्द्र जीवन (दयानन्द का जीवन चरित्र)	50 रु.
8.	महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	15 रु.
9.	धर्म का सार (धर्म का रहस्य बताने वाली कथाएं)	15 रु.
10.	स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (जीवन परिचय)	5 रु.
11.	वैदिक सम्पत्ति	200 रु.
12	धर्म का मार्ग (धर्म के दस लक्षणों की सरल व्याख्या)	15 रु.
13.	योग और ब्रह्मचर्य	15 रु.
14.	Inside the Congres	60 रु.
15.	Life and Teachings of Swami Dayanand	200 रु.
16.	History of the assassins	60 रु.
17.	Concept of God	60 रु.
18.	श्रीमद्दयानन्द प्रकाश	60 रु.
19.	Light of Truth	150 रु.
20.	प्रकृति और सर्ग (आचार्य उदयवीर शास्त्री)	15 रु.
21.	वैदिक गीता का सरल हिन्दी भाष्य	60 रु.
22.	संक्षिप्त महाभारत	80 रु.
23.	संक्षिप्त रामायण	15 रु.
24.	ऋग्वेद शतकम	10 रु.
25.	चतुर्मास की चार पूर्णिमाएं	25 रु.
26.	सत्संग पद्धति	10 रु.
27.	वैदिक सान्ध्य गीत	15 रु.
28.	A Short Life Story of Swami Dayanand	30 रु.
29.	गायत्री मन्त्र का चार्ट, हिन्दी व्याख्या सहित दोनों ओर पत्ती लगा, कम से कम दस प्रति मंगायें	4 रु.
30.	मोपला (उपन्यास)—वीर सावरकर	10.00 रु.
31.	वीर सावरकर—संक्षिप्त जीवन परिचय	5.00 रु.
32.	भाई परमानन्द (जीवन परिचय)	30.00 रु.
33.	बाल सत्यार्थ प्रकाश	60.00 रु.
34.	मां गायत्री	2.00 रु.
35.	स्वास्थ्य का महान शत्रु अंडा	2.00 रु.
36.	विश्व को वेद का संदेश	2.00 रु.
37.	विश्व को आर्यसमाज का संदेश	2.00 रु.
38.	Great Gayatri	2.00 रु.
39.	बृहत्तर भारत-पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार	300.00 रु.

१०० रु. से धार्मिक अधिक साहित्य पर १५ प्रतिशत ३०० रु. से अधिक लेने पर २० प्रतिशत तथा ५०० रु. से अधिक लेने पर २५ प्रतिशत होगा। आदेश के साथ चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

हिन्दू धर्म रक्षक साहित्य बांटिये

1.	क्या आप सारा भारत दारुल इस्लाम बनने देंगे?	1.00 रु.
2.	हिन्दुओं को चेतावनी—वेदभिक्षुः	1.00 रु.
3.	भारत के मुसलमानों का क्या करें? —वेदभिक्षुः	1.00 रु.
4.	हम सब हिन्दू हैं—सावरकर	2.00 रु.
5.	इस्लाम में क्या है? —राकेश रानी	1.00 रु.
6.	इस्लामिस्तान बनाने की तैयारियाँ —जहीर नियाजी	1.00 रु.
7.	हिन्दू जागो ! देश बचाओ	1.00 रु.
8.	इस्लाम—एक परिचय	1.00 रु.
9.	पोप की सेना का भारत पर हमला — वेदभिक्षुः	1.00 रु.
10.	पादरियों को चुनौती	2.00 रु.
11.	बाईबिल को चुनौती	2.00 रु.
12.	क्या ईसा खुदा का बेटा था?	1.00 रु.
13.	और पादरी भाग गया	1.00 रु.
14.	हमने इस्लाम क्यों छोड़ा?	1.00 रु.
15.	क्या भारत का एक और विभाजन होगा?	1.00 रु.
16.	हिन्दू राष्ट्र के नाम मां का संदेश	1.00 रु.
17.	हिन्दू जागेगा, देश का संकट भागेगा	1.00 रु.
18.	A challange to the Christian Faith	50 पैसे

एक रुपये वाली ''हिन्दू धर्म रक्षक'' साहित्य की १००० पुस्तकें मंगाने पर ५० प्रतिशत और ५०० पुस्तकें मंगाने पर २५ प्रतिशत कमीशन है। प्रत्येक आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा कम से कम चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

व्यवस्थापक—दयानन्द संस्थान

२२८६-आर्यसमाज मार्ग, नई दिल्ली-५

बात करो

❑ डॉ. श्याम गुप्त

बहुत खो चुके साम्यवाद की बातों में,
रामराज्य के आदर्शों की बात करो।
बहुत पढ़ चुके आर्ची चार्ली कामिक हम,
पंचतंत्र और रामायण की बात करो।
बहुत सह चुके कुंठा और निराशायें,
कुण्ठाओं के अवगुन्ठन अब खुलने दो।
बहुत सह चुके जीवन की भग्नाशायें,
आशाओं के दीप यहां अब जलने दो।
ओ भारत! अब जागो फिर हुंकार उठो,
हम भी कुछ हैं इसका भी कुछ ध्यान करो।
फेंको चोला झूठी शानो-शौकत का
कुछ तो अपनी ताकत का अनुमान करो।
भोगवाद की संस्कृति को फेंको-छोड़ो,
स्वयंवाद की घातों को मत याद करो।
वैगी पहना, मैगी भी खा चुके बहुत
तुम अपनी संस्कृति को मत बरबाद करो।

-के-३४८, आशियाना, लखनऊ

With Best
Compliments From

❋❋❋❋

NATIONAL
STEEL & AGRO
INDUSTRIES LTD.

❋❋❋❋

2nd Floor, 43, Daryaganj,
Delhi-110002

जनज्ञान मासिक विज्ञापन दें

जनज्ञान में विज्ञापन दें सहयोग का हाथ बढ़ाएं। देश-विदेश में अपने प्रतिष्ठान का नाम गुंजाएं॥
अंतिम कवर पृष्ठ ५००० रुपए कवर पृष्ठ दो व तीन ४००० रुपए
सामान्य पूर्ण पृष्ठ २५०० रुपए आधा पृष्ठ १५०० रुपए चौथाई पृष्ठ ७५० रुपए
बैंक ड्राफ्ट तथा मनीऑर्डर 'जनज्ञान' नई दिल्ली के नाम भिजवाएं। दिल्ली के किसी भी बैंक का चैक भी भेज सकते हैं। विज्ञापन व्यवस्थापक

जनज्ञान मासिक
२२८६ आर्यसमाज मार्ग, करोलबाग, नई दिल्ली-५ दूरभाष : २५७२४७४१, ५१००४७४१, ५१०१५४५७

गौ-ग्रास के रूप में गौ की सेवा

भारत की यह प्राचीन परम्परा रही है आर्य-हिन्दू माताएं-बहिनें रसोई में भोजन बनाते समय तवे पर पहला फुलका गाय के लिए बनाती थीं। एक सद्गृहस्थी के लिए हमारे ऋषियों-मुनियों का यही आदेश है। आजकल भी हमारी माता बहिनों में ऐसी ही श्रद्धा है किन्तु आसपास गाय न होने के कारण इस कार्य को नहीं कर पातीं। इसका सरल समाधान है, आप गौग्रास के रूप में मासिक १०१/- रुपये अथवा इससे अधिक जितनी आपकी श्रद्धा हो निम्न पते पर भेजकर गौ भक्त कहलाएं-

दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५।

जनज्ञान की दान की सूची में आपका नाम छापा जायेगा।

ब्र. सुमेधा आर्या
उपसंचालिका, महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, वेद मन्दिर, दिल्ली-३६

मुफ्त प्राप्त करें

* * *

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य मूल्य १८००/- रुपयें
बढ़िया वैदिक साहित्य मूल्य ५००/- रुपये
आजीवन जनज्ञान मासिक ११००/- रुपये

* * *

३४०० रुपये का साहित्य उपहार भेंट किया जायेगा--मात्र २१०० रुपये सहयोग राशि प्रदान कर दयानन्द संस्थान के "संरक्षक सदस्य" बनें।

- परमपिता परमात्मा की अमर वाणी "चारों वेदों का हिन्दी भाष्य" द्वारा अपने गृह एवं पूजास्थल को आलोकित करें। अपने मित्र परिवारों को भेंट में दें।
- "जनज्ञान मासिक" आपके परिवार को वैदिक संस्कृति, विशुद्ध राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता के प्रेरक भावों और संस्कारों की ओर प्रेरित कर उसे स्वर्गोपम बनाने में सहायक सिद्ध होगा।

प्रत्येक सदस्य सदैव शुभ अवसर पर एक नया संरक्षक सदस्य बनाकर सहयोग का हाथ बढ़ाएं तथा अपनी पवित्र आय से मात्र २१०१/- रुपए की लघु राशि प्रदान कर पुण्य के भागी बनें।

वेदप्रकाश सिंह
(अमरीका में संस्थान के प्रतिनिधि)
संपादक 'सौरभ' न्यूयार्क
८०-१५, ४१ AVENU APARTMENT २४१
NEWYORK ELMHURT

पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
संरक्षक
दयानन्द संस्थानख़
सहयोग मंडल
नई दिल्ली

राकेश रानी
अध्यक्ष
दयानन्द संस्थान
एवं सम्पादक 'जनज्ञान'
नई दिल्ली

सहयोग राशि "दयानन्द संस्थान" के नाम निम्न पते पर प्रेषित कीजिए :

दयानन्द संस्थान, २२८६, आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५
दूरभाष : ५१००४७४१, ५१०१५४५७

जन-ज्ञान (मासिक) वेद मन्दिर –
महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम लेखराम नगर,
(इब्राहीमपुर) पो. आ. मुखमेलपुर-दिल्ली

कार्तिक-मार्गशीष - सम्वत-२०६२
नवम्बर - सन्-२००५

Posted at N. D. PSO on
Dates 5 & 6 & Delhi Postal
Registration No. DL-11185/2003-2005
R. N. 10719/65

ओ३म्

मन प्राणों में वेद पले
दुःख कष्ट से मुक्ति मिले

वेद नहीं जिसके घर में
हिन्दु न कहलाए जग में

वेद सृष्टि का मूल महान
आर्य जनों, यह लो पहचान

ओ३म्
यजुर्वेद
ओ३म्
ऋग्वेद
दयानंद संस्थान

"परमात्मा" की
दिव्य-सनातन वाणी

ओ३म्
सामवेद
ओ३म्
अथर्ववेद
दयानंद संस्थान

मंत्र-शब्दार्थ-छन्द-स्वर, ऋषि-देवता आदि विवरण सहित 23 X 36 सें.मी. साइज में,
कुल पृष्ठ 2200, बढ़िया सुनहरी जिल्दें। वजन प्रायः 8 किलो। सुन्दर मुद्रण।

चारों वेदों का सरल, रोचक हिन्दी भाष्य

महर्षि दयानन्द कृत हिन्दी भाष्य, मूल संस्कृत सहित

अभी वेद घर में लाओ, शुद्ध आर्य जन कहलाओ

प्रसारार्थ लागत मूल्य
रु.1800/=
अभी मात्र 1200/= में प्राप्त करें
डाक व्यय पृथक

श्रेष्ठ बढ़िया कागज पर लागत मूल्य 3200/-
अभी लेने पर 2250/-

कृपया आदेश के साथ सम्पूर्ण अथवा चौथाई धन अग्रिम अवश्य भेजें।

अधिक विवरण व राशि भेजने के लिए:
दयानंद संस्थान, 2286 आर्यसमाज मार्ग, करोल बाग, नई दिल्ली–110005, (भारत) दूरभाष – 51004741, 51015457
प्रधान कार्यालयः महात्मा वेदभिक्षुः सेवाश्रम, इब्राहीमपुर, पो. मुखमेलपुर, दिल्ली–1100036 (भारत) दूरभाष – 27732249

साइबर सेपियन्स 23512929,23551818